अंक 1-2, खंड 3

जनवरी-जून 2025

संयुक्त अंक

अनुनाद

हिन्दी साहित्य, समाज और संस्कृति की ऑनलाइन त्रैमासिक पत्रिका

उत्तराखंड लोक भाषा और लोक संस्कृति विशेषांक

अनुनाद

हिन्दी साहित्य, समाज और संस्कृति की ऑनलाइन त्रैमासिक पत्रिका

सम्पादक मंडल

शिरीष कुमार मौर्य (मुख्य सम्पादक)
प्रोफेसर, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखंड)
पिन -263001
shirishkumarmourya@kunainital.ac.in

मेधा नैलवाल
अतिथि व्याख्याता, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखंड)
पिन -263001
medhanailwal@kunainital.ac.in

संजय घिल्डियाल
प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखंड)
पिन -263001
sanjayghildiyal@kunainital.ac.in

अधीर कुमार
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ऋषिकेश परिसर, श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय,
ऋषिकेश (उत्तराखंड)
पिन – 249201 adheerkumar@sdsuv.co.in

परामर्श मंडल

हरीशचंद्र पांडे (हिन्दी कवि)

लीलाधर मंडलोई (हिन्दी कवि)

सुबोध शुक्ल (हिन्दी आलोचक)

आशीष त्रिपाठी (हिन्दी आलोचक)

संपर्क

पता – वसुंधरा/ तीन, भगोतपुर तड़ियाल
पीरूमदारा, रामनगर, उत्तराखण्ड – 244715 दूरभाष : 9557340738
ई-मेल : medha.nailwal.anunad@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखक के स्वयं के हैं। संपादक की इनसे सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुनाद के सितम्बर 2025 में प्रकाश्य अगले अंक के लिए रचनाएँ आमंत्रित हैं। आप कविता, कहानी, आलोचना/समीक्षा, कथेतर गद्य और समाज और संस्कृति जुड़े आलेख हमें भेज सकते हैं।

रचनाएं यूनीकोड फॉन्ट में ही प्रेषित करें।

अनुक्रम

- **कविता**

1. बा्ज कुड़िक बा्ट सुनसान छु /अनिल कार्की/ 1-11
2. हमर दयाप्त हमर जास छन /हर्ष काफर/ 11-18
3. त्यर बाट च्या रिछ्यो यो बांजक बोट / नितिन भट्ट / 18-22
4. सूंण मेरी सरम्याळी मायादार / रूचि बहुगुणा उनियाल /23-30
5. उँन कलम त नि देखी / मोहित नेगी 'मुंतज़िर'/ 30-36

- **अनुवाद**

6. राजेश जोशी, महेश पुनेठा और प्रदीप सैनी की कविताओं का अनुवाद / हर्ष काफर / 36-41
7. मथुरादत्त मठपाल की कविताओं का अनुवाद / कृष्ण चन्द्र मिश्रा/ 41-59
8. भूपेन्द्र बिष्ट की कविताओं का अनुवाद/ललित मोहन/ 60-66
9. भैंस का कट्या - विद्यासागर नौटियाल / हिमांशु विश्वकर्मा / 66-74
10. ब्राह्मणी - शंभु राणा / हिमांशु विश्वकर्मा/ 74-77

- **समाज और संस्कृति**

11. जांठि को घुङुर / **दिवा भट्ट**/ 78-82
12. भाषा बुलाण-चुलाण में ऐ जाली त बचि रौलि / **नवीन जोशी** / 82-90
13. फसक / ज्ञान पंत / 90-98
14. कमज़ोर पड़ती पहाड़ी लोकगीतों और बोलियों की थाती / **योगेश ध्यानी** / 99-102

- आवरण चित्र – **हिमांशु विश्वकर्मा**
- आवरण सज्जा- **मेधा नैलवाल**

बा्ज कुड़िक बा्ट सुनसान छु

अनित कार्की की कविताएं

पौ भरि

यॉं इ कॉं इ

धार पार

तुमरि फाम धरि छु

जेठक सैव

ह्यूण क निमैलि सुर्ज
जसि

चौमासकि घोघ जसि

यस छु यो पहाड़ आजि ले

च्येलि सौरास जाण बख्ती
कि डाड़ जस

न्योलि कि घांटि जस

तितुर कि सांकि जस

त्यर यॉं ऊण मुश्किल छु

म्यर यॉंहें जाण मुश्किल

क्वे दुसरि जा्ग

दुसरी दुनि में, नई ठौर

त्वे मिलण ऊँल जबत

मेर हुण क आदुक है
ज्यादे यॉं छुटि जाल

मैं पो भरि रै जूँल

न आपण मन क जस

न त्यर मन जस

हिन्दी अनुवाद

यहीं-कहीं

धार के पार

तुम्हारी याद ठहरी हुई
है

ग्रीष्म की शीतल छाव,

शरद की कोमल-निर्मल सूरज
जैसी

चौमास के पके गुदगुदे
मक्के जैसी

ऐसा ही है यह पहाड़ आज
भी

ससुराल जाती बेटी के
विलाप की तरह

न्योली के गीत की तरह

तीतर के कंठ की तरह

गूँजते-बसते हैं मेरे मन
में

तेरा यहाँ लौट आना
मुश्किल है

मेरा यहाँ से जाना
मुश्किल

किसी दूसरी जगह

दूसरी दुनियाँ में, या नई जगह में बसना मुश्किल

जब भी मैं तुझसे मिलने
आऊंगा

मेरा आधे से ज़्यादा
हिस्सा यही छूट जायेगा

और

तेरे लिए मैं पाव भर भी
नहीं रह जाऊँगा।

ना मेरे मन जैसा

ना तेरे मन जैसा।

थुलम* क भितर

ह्यून न्हे जाल् आब दूर
दुसर देश

घाम मातर तुमर हथकोलि जस

हल्क गरम -नरम आजि ले छु

मिठ छु तुमर हथकोलि क

म्यर हाथों दगाड़ बिलकण

मैं एक ग्वाँर

कथुवा क न्याति

एक नई जुगुत भिड्या
ह्यूँल

तुमर बिलकण महसूस करण
लिजि

टाँकि ऊँल थुलम

रतिव्याण भ्यार तार में

जब ब्याखुल सूर्ज घामकि
चद्दर समेट्ल

तब मैं तुमर बिलकण क
एहसास

समेट ल्हूँल थुलम क भितर

हिन्दी अनुवाद

यह शरद भी चला जायगा

अब दूर-दूसरे देश

लेकिन घाम तुम्हारी
गदेली पर नरम-गरम सा

अभी भी बचा है

इस मिठास का अंदाजा
तुम्हारी गदेली का

स्पर्श मेरे हाथों से
होने पर होता है।

मैं एक गँवार

कथागो की तरह

फिर कोई नई जुगुत भिड़ा
ही लूँगा

तुमसे जुड़ा, तुम्हारा छुआ

महसूस करने को

टाँक आऊँगा थुलम

अलसुबह आंगन के तार पर

जब साँझ को सूरज अपनी
चादर समेटेगा

तब मैं भी तुम्हारे होने
का एहसास

समेट लाऊँगा नरम-गरम
थुलम के भीतर।

तुमर आंगुलन लिजि

हिमालकि गंङक जस

सुनारि माछ* कणचुल जस

तुमर आंगुल

बिल्कण उनर म्यर हाथोंक
दगड़

जाणि ठस्स

म्यर कल्ज में ठसक

दिगो

म्यर हींय में फुटि पड़ो

तुमर रटन क

एक बुरुंश गुलाबि

हिन्दी अनुवाद

हिमाल के नदियों की
सुनहरी मछली सी

तुम्हारी उँगलियाँ

मिलना उन उँगलियों का
मेरे हाथों से

जिससे मेरे कलेजे में
उठती है कसक

आहा रे!

मेरे हृदय में खिल उठा
है

तुम्हें पाने की दुरूह
इच्छा का

एक गुलाबी बुराँश।

ईज और बिमारी

गोठकि कलड़ि*,

देलिक कुकुर ,

चुलेकि बिरालि

पाख्- छाजकि चड़ी

बाद्ध बटोही

कैं कें नि छोड़ सकि ईज

बिमारि कतुक आयीं कतुक
गयीं

ईज हर बार

बिमारि कें हराते रै

तड़ि में तारण

पाखुड़न में तात*

भ्यालि में प्ल्यो*

तौल* में भात

पकाते रै

सबनक है पैलि गोठक कलड़
छुटो

फिर देलिक कुकर

तै बाद चुलकि बिराली

फिर पा्ख-छाजकि चड़ी
उड़िगे

बा्ज कुड़िक बा्ट सुनसान
छु

बटोही अनजान छु

ईज कूंछि बिमार छुं

डॉक्टर बतुं आ्ब ईजा कि
उमर है ग्ये

हिन्दी अनुवाद

गोठ की कलड़ि आँगन का कुकुर

रसोई की बिल्ली

छज्जे और खिड़कियों की
चिड़िया

रास्ते का बटोही

किसी को भी नहीं, छोड़ सकती है ईजा

बीमारियां कितनी आयी, कितनी गई

ईजा हर बार

बीमारियों को हराती रही

शरीर में तारण

हाथ-पैरों में तात

कढ़ाई में प्ल्यो

तौले में भात

पकाती रही

सबसे पहले गोठ की कलड़ि
छूटी।

फिर आँगन का कुकुर

उसके बाद रसोई की बिल्ली
फिर छज्जे और खिड़कियों
की चिड़िया उड़ी गई।

बंजर घर का रास्ता अब
सुनसान है

बटोही सभी अनजान हैं

ईजा कहती है मैं बीमार
हूँ

डॉक्टर बताता है

कि अब ईजा की उम्र हो
गई।

कौतिक्यार*

कौतिक* हैरौ

तुम ले आओ

ढेड़ मूख देखौ

याँ सबै टेढ़ी रयीं

पेटाक जुग जस

सरकारक अनाड़ में बेड़ी
रयीं

याँ मैस छोड़ो

देप्त ले रिसा जस रईं

हर जाग टाँकि छन गुस्स
वाल भगवान

अवाज कॉं न्हा फुस्स छु
इंसान

याँ सब एक दुसर कें
फर्जी बतूनी

याँ सब एक दुसर है द्वि
आंगुल बाकि छन

सबै कुंभ नै भेर ऐ ग्यान

सब एक दुसर है ठुल पापि
छन

याँ सबनक गुद्दी है
ज्ञान फुटि बर्बाद हुनो

खुदै आपणी हाम

खुदै आपण तैंस देखौ

देखौ पें

अमृत काल क मृत मैस देखौ

हिन्दी अनुवाद

कौतिक चल रहा है

तुम भी आओ

यहाँ जिसका भी मुँह देखा

टेढ़ा ही पाया

पेट के जोंक सा

सरकार की आंतों में बँधा
ही पाया

आदमी छोड़ो

इस वक्त देवता भी नाराज
लग रहे हैं

हर जगह टाँक दिए गए हैं
ग़ुस्से वाले भगवान

आवाज कहीं नहीं है, फुस्स है इंसान

इधर सब एक दूजे को फर्जी
बताते हैं

इधर सब एक दूजे से दो
अंगुल अधिक जताते हैं

सभी नहा के आए हैं कुंभ
से

सब एक दूसरे से बड़े
पापी हैं

यहाँ सबके दिमागों से
फूट रहा ज्ञान बर्बाद हो रहा है

हम सब ख़ुद अपनी तारीफ़
में व्यस्त हैं

ख़ुद ही अपने गर्व में
पस्त हैं

देखो भई

इस अमृत काल का

मृत आदमी देखो।

यो देप्त अलग छु

किसनुवा

त्यर त जोग्याण रंङक
पटुक

त अदकट निशाण

कुथल जस जँघि, पजम

त्यर हाथ में त जाँठ

त्यरि तो अघिल-पछिल

रमक-झमक

त इक हत्थि ढोग

हँला त्यर इष्टक तस भनार

तस पैरण

तस नाचण त नि छी यार

सांचि बताए

किसनुवा

तू कैक छे रे?

आपण इष्टक त न्हाते

यो देस्र अलग छु

हिन्दी अनुवाद

(किशन सिंह के लिए)

किशनुवा

तेरा यह जोगी रंग का
वस्त्र

यह अधकटा निशाण

जाँघों तक फैला भारी सा
पैजामा

तेरे हाँथ में यह लाठी

तेरी यह आगे-पीछे की
रमक-झमक

तेरा यह एक हाथ से
नमस्कार करना

हैं !

तेरे ईष्ट का ऐसा स्वरूप

ऐसा पहनावा

इस तरह का नाच तो

बिल्कुल नहीं था यार।

सच्ची बताना

रे किशनुवा!

तू किसका है?

अपने ईष्ट का तो नहीं
लगता

यह देवता तो बिल्कुल अलग
है रे।

तैं जब आली

(पूर्वी कुमाउनी सौर्याली के लहजे में एक कविता)

तैं जब ले आली

आये !

मैं पक्का तेर बाट चाँल

हिमाल क ह्युं छन तक

ह्युं गल जाल जबत

मेरि कफुली तैं सोचे

मेर शरीर हैं उड़ी ग्यो
हंसप्राण

रेग्यो माट मुट्ठि भर

मै ह्युं जस गलि भेर

तेर भितर रकत जस बगि
जूँल

पगलि

माटो छ असल पदारथ

ऊस लुकै समालि भेर राखे

एक न एक दिन

तेरि माया जरुर

वापिस फरक्या भेर ल्याली

फिर प्राण उ माट में

फिर फुल्ललो

पय्याँ को फूल

फागुन आल

फिर चैत आल

भिटाऊ* न्याति फुलली तैं

लुक्कू पाल खेलली

भिड़-पाखन में

प्योली क फूल बनि भेर

यो अनकस्सो

टैम ले हौलाक जस फाटल

आहा !

हामर ले घट पानि आल

यो निमिनाक चिसो सुर्ज

बुरुंजक फूल जस

टक्क लाल रंङ में फुलल

हिन्दी अनुवाद

तुम जब भी आएगी

आना!

मैं तुम्हारी राह तकूँगा

हिमाल में बर्फ रहने तक

जब बर्फ पिघल जाएगी

मेरी प्रिये तुम सोचना

मेरे शरीर से उड़ चुका
है यह हंसप्राण

और रह गई केवल

मुट्ठी भर मिट्टी

मैं बर्फ जैसा पिघल कर

तुम्हारे भीतर रक्त की
तरह बह जाऊँगा

पगली!

मिट्टी है असल पदारथ

उसे छुपा के, सहेज कर रखना

मुझे यकीन है

एक ना एक दिन

तुम्हारा प्रेम ज़रूर

वापिस लौटा लायेगा

फिर इस मिट्टी में प्राण

फिर खिलेगा

पद्म का पुष्प

फाल्गुन आयेगा

आयेगा फिर चैत

भिटारू के तरह खिलेगी तुम

आँखमिचौली खेलेगी

दुर्गम पहाड़ों और आंगन
की दीवारों पर

प्योली का फूल बनके।

यह अजीब वक्त

गुज़र जाएगा

आहा!

हमारे घराट पर फिर पानी
होगा

यह बुझा हुआ ठंडा सूरज

बुराँश के फूल की तरह

टक्क लाल रंग में
खिलेगा।

1 भेड़ के ऊन से बना एक तरफ़ से ओढ़े जाने वाला एक तिब्बती कंबल

2. महासीर

3. गाय की बछिया

4. बल/शक्ति

5. पतली सी झोली

6. कुमाऊनी पारंपरिक ताँबे का बर्तन

7. मेलों में जाने वालों का मेला

8. सांस्कृतिक मेला

9. स्प्रिंग लिली

(कविताओं का हिन्दी अनुवाद हिमांशु विश्वकर्मा ने किया है।)

हमर दयाप्त हमर जास छन

हर्ष काफर की कविताएं

पहाड़ का मसाण

ऊ मुकूं फाटी दाड़ीम वाई चे रो छी

निसवास छी वी आंखम्

एक विश्वास छी वी आंखम्

उन बखे ले, जाण बखे ले

मिन सोचो आंगाव हालोल

ऊ जांठ टेक भे थाड़ ह रो छी

ऊ तापी घाम कु,

फिर फिर तापणों छी

उ फाटी दादिम वाई चे रो छी।।

मे उज्यां विल, चाई–निचाई कर दे

ऊ थाई में कोर्र भात खाणो छी

विक आंस छूटणा छी

भात नमकीन हुणों छी

ऊ गौर-बाछा वाई, उगेर लाग रो छी

ऊ चाई निचाई करणों छी

ऊ हर तरफ़ बे चे रो छी
हाजरी फूल बटी
पिपव बोट बटी
केमू गाड़ी भीतेर
यो भ्योव ऊ डान,
गाड़ बटी, गाड़ भाड़ बटी
गाज्यों भूड़ बटी
पिरुव टान बटी
यो मोड़ ऊ मोड़
ऊ मुकु पगलूणों छी
म्योर बरमान रिंगणों छी
मिन सोचो चाहा पी लिह्‌ू
ऊ चाहा दुकान में बैठ रो छी
चुप चाप बीड़ी फुकुणों छी
पुछड़ी तार जे
पीछाडी पड़ गोय
लोदिया मिठ्ठे में
खेरना पकोड़ी में
कैंची धाम बटी

भवाली बज्याण में
भीमताल ताल बटी
कुमाऊं द्वार जाले
फिर मुकु छोड़ दे
फिर ले, द्वाप लाग रो छी
पुठ फरूणे हिम्मत नि भय
ऊ मुकु डान काना बे चे रो छी
सेती पाई च्यालाँ कु
कसी बेग द्यु यो पहाड़
हर तरफ बे छितरी गो
आपूण हाड़ चाणों छी।
में भितेर पहाड़ चाणों छी
ऊ भडाई बाकरो बास चितुणों छी
ऊ मुकु फाटी दादिम वाई चे रो छी

हिन्दी अनुवाद

वो फटे दाड़िम की तरह मुझे देख रहा था
उसकी आंखों में बिछड़ाव का पानी था
एक विश्वास था उसकी आंख में

आते वक्त भी, जाते वक्त भी
मुझे लगा, गले लगा लेगा
मगर वो छड़ी टेके खड़ा रहा
उसके लिए नया नहीं था
वो तापे हुए घाम को
फिर फिर ताप रहा था
वो फटे दाड़िम की तरह मुझे ताक रहा था
फिर मेरी तरफ देखा अनदेखा कर दिया
वो थाली में सूखा भात खा रहा था
आंसू टपक रहे थे थाली में
भात नमकीन हो रहा था
जो गाय की तरह जुगाली कर रहा था
मेरी तरफ देखा अनदेखा कर दिया
वो हर तरफ से देख रहा था
गेंदे के फूल से
पीपल के पेड़ से
केमू की गाड़ी के भीतर
ये पहाड़ वो पहाड़
नदी में, नदी के भाड़ से

घास से, झाड़ से
पिरूल के टान से
उसने मुझे पगला दिया
मेरे सिर घूमने लगा
सोचा कि चाय पीलूं
वो चाय की दुकान पर बैठा था
चुप चाप बीड़ी पी रहा था
जैसे कोई तारा पीछे पड़ जाए
वो वैसे पीछे पड़ गया था
लोधिया की मिठाई में
खेरना की पकोड़ी में
कैंची धाम से

भवाली के बांज के जंगलों में

भीमताल के ताल से

कुमाऊं द्वार तक

फिर उसने मुझे छोड़ दिया

पर छुपकर देख रहा था

मेरी पलट कर देखने की हिम्मत नहीं हुई

वो ऊंचे पहाड़ों से मुझे ताक रहा था

पाले पोसे बच्चों को

कैसे बहाता है पहाड़

वो अपनी हड्डियां देख रहा था

मेरे भीतर का पहाड़ ढूंढ रहा था बाय

वो भुनी हुई बकरी की गंध महसूस कर रहा था

वो फटे दाड़िम की तरह मुझे देख रहा था

अरे ओ लोक बचुणी वालों

अरे ओ लोक बचुणी वालों

जागर भागनोल चाचड़ी

लोक नेहत रे

मि छीन लोक

मुकु बचाओ

खुदेड़ न्यौली नेहत

न्यौली खुदेड़ नेहत

न्यौली में खुदेड़ गाओ

खुदेड़ में न्यौली गाओ

पर पैली मुकु बचाओ

लाल निसाण कुं अघिल करो

भले पिछाड़ी करो

मगर सफ़ेद कुँ लहराओ

अरे ओ छोलियो, छलण छोड़ दियो हमकुँ

हमेंरि तलवारु मि धार छू

तुम आपुण तलवार आँफर लगाओ

मगर सबसे पैली

मुकु बचाओ

मि छिन रे लो

हिन्दी अनुवाद

अबे ओ लोक बचाने वालों

हुड़का, भगनोल, चाचड़ी
लोक नहीं है रे
मैं हूं लोक मुझे बचाओ
खुदेड़ न्यौली नहीं है
न्यौली खुदेड़ नहीं है
न्यौली में खुदेड़ गाओ
खुदेड़ में न्यौली गाओ
पर पहले मुझे बचाओ

लाल निसाण को आगे करो
भले पीछे करो
मगर सफ़ेद निसाण को लहराओ
अबे छोलियो, छलना छोड़ दो हमें
हमारी तलवारों में धार है
तुम अपनी तलवार में धार लगाओ
मगर सबसे पहले
मुझे बचाओ
मैं हूं लोक

जली हुई धूणी बटी,चिलम जलूने रै गईं

जली हुई धूणी बटी, चिलम जलूने रे गईं
धूणी–कसी जली बता, य–बात बीच रे गई
कैले ढुंग फोड़ी बता, कैले गार –तगार दे
ऊ स्वेण को आंखू मि छी,जो बखाई उजड़ गईं
भाबरे की रात छी, ऊ रात नंग रात छी
द्रोपदी बिलख पड़ी, दयाप्त चाय्यें रे पड़ी
कैले धात दे बता, कैले घात खित बता
हर तरफ चिचाट छी , सांस छुटने रे गई

य हिमाल, देवदार, आंखूं मि रची –बसी
ज़िंदगी पहाड़ छी, पहाड़ हुने रे गई
गवाव–गुसें निपट पड़ी तो, राग फिर नई बाजों

तस्करू कपाव में पहाड़–क मकुट छाजों
लूट यां, खसोट वा, हर तरफ चिरान छी
दयारी में बजयाणी में, टीटाट छी भीभट छी
गाड़ में मशीन देखि, गध्यार सहम सहम पड़ी
खरड़ खरड़, रगड़ रगड़, ऊ ताव तावे निकल पड़ी

ज़िंदगी गलत सलत सवाल पूछने रे गई
गलत सवाल कोई तो सही जवाब दियो जरा
य हिमाल, देवदार, आंखूं मि रची –बसी
ज़िंदगी पहाड़ छी, पहाड़ हुने रे गई
पेली हमुल आपू दयाप्त बड़ाई
फिर हमर द्वाप्तुल बड़ा हमुकु
हमर दयाप्त हमर जास छन
काठ खुट छन उनार, लूव कपाव छु
ऊ आपु काठ खुटुल हिटनी अरड़ पट्ट
हाव, ह्यू, तुसार में

हमर सैणीयांक कपाव लूव छू
उनर कपाव बे
ब्वाज गढ़वा नी उतरन
ऊ थाड़-थाड़े झीट घड़ी लिजी बिछे लिनी आपु
साँस

हमार दयाप्त ले , हम जस छिन
दूबाऊ-पताव , तेज़-तर्रार, निडर

सही गलत पछाड़ छु उनुकु
पर ऊ धीरे धीरे गायब हूणई
उन जाग थे ऊणई
साफ सफ़ेद नवाई धूवाई
संगमरमर दयाप्त
हमर पास आपु बहुत दयापत छी
घराक अलग
बणाक अलग
गोरू-बाँछा अलग
नौव,गाड़, गध्यार, बोट-डाव
एड़ी,काली, हरु,कवू ,कोट, काव
पे गुरु पे पे पे

गोल ज्यु,भोल ज्यु,गंगनाथ,नागमल
भैरव,चमू ,बधाण, सेम , छूरमल
हमारा दयाप्त नाखर नी करन
जे हम खानू उई खानी
जां हम जानु

वै उनी

ऊ हमुकू छितराट नी करण दिन

मगर अब कोई दूर देश बे अभे

कोई उनुकू धात लगुणों

ऊनर नाम लीहणों

ऊ अचरज में पड़ गईं

ऊ हम मुख चाणई और हम हूँ कुणई

यो के तमास छु ?

कां कां सारला मुकुँ ?

देखो ! यो मज़ाक ठीक नेहत्...

हिन्दी अनुवाद

पहले हमने हमारे देवता बनाएं

फिर हमारे देवताओं ने हमें बनाया बीबी

हमारे देवता हमारे जैसे है

लकड़ी के पांव हैं उनके

लोहे का कपाल है

वो लकड़ी के पावों से चलते हैं

सर्द हवाओं में, बर्फ में, तुषार में

हमारी औरतों का सर लोहे के हैं

उनके सर से नहीं उतरता कभी भी बोझ

वो खड़े खड़े, छाव देख

बिछा लेती हैं अपनी सांसे

हमारे देवता भी हमारे जैसे दिखते हैं

दुबले पतले, तेज़ तर्रार, निडर

सही गलत की परख है उनको

पर धीरे धीरे वो गायब हो रहे हैं

ओर उनकी जगह

साफ सुथरे नहलाएं धुलाए

संगमरमर के देवता ले रहे हैं

हमारे पास हमारे बहुत से देवता हैं

घर के अलग, वन के अलग

यहां तक कि हमारे मवेशियों के भी

नौव गाड़ गदय्यार बोट डाव

एड़ी ,काली, हरु,कवू ,कोट, काव

पे गुरु पे पे पे

ग्वे्वेल ज्यु ,भोल ज्यु ,गंगनाथ नागमल

भैरव,चमू ,बधाण, सेम, छूरमल

हमारे देवता नखरें नहीं करते मवेशियों

जो हम खाते हैं, वहीं खाते हैं।

हम जाते हैं

वो साथ आते हैं

वो हमको छितराने नहीं देते

मगर अब कोई दूर देश से आकर

उन्हें धात देता है,

उनका नाम लेता है

वो अर्चन में पड़ कर

हमारा चहरा देखते हुए, पूछते हैं

ये क्या तमाशा है??

मुझे कहां ले जाया जा रहा है अब ??।

***

कविताओं का हिन्दी अनुवाद स्वयं कवि द्वारा किया गया है।

त्यार बाट च्या रिछ्यो यो बांजक बोट

नितिन भट्ट की कविताएं

मोहनि दुरगूण

धार*

ठंडी बयाल वालि धार

उ धार पलतर छिड़ा* मलतर

दुरगूण* हूण लागिरौ

बिरालू पोथ जै मोहनि दुरगूण।

मोहनि आज पूजि रै म्यैत

ईजा पौचिं* दगड़

बाबू अंगोंछ दगड़

मामा नथ दगड़

काका रथ दगड़

आज छन बुआ, कैन्जा, जेड़्ज

सबनाक पिधाड़* ले छन दगड़

दगड़ छु सिरफ य मैतेकि संपत्ति
नहा अब उ पैलकि छोरी छलपट्टी
नहा उ ककड़ाक झील, न जौं, न तील
दगड़ छ भिन
जो जाणूसिरफ हल्द्वानिक कट सूट पीस
आज चेलीन लगूमरई एक जोरैकि चीस ।

मोहनि बाबू देखम् रयान
अब डिलीट है ग्यो असौज और चौमास
नै रै गै अब दै दूधकि आस
नै रै गै आब जातोर पिसनी ब्वारि,
नै रै गै पूत हालनि पुतारि*
नहा अब कै को पल्ट करन
नैरै गै आब धूरैकक घस्यारि।

त्यर बाट च्या रिछ्यो यो बांजक बोट
अधपुर जस है रिछ्यो गोरन गोठ
कुकुर बिराल यो बकार लागरयीं जसी
सबनाक ख्वार पड़गै चोट

कुमाउँक फाट* में पूजग्यांन चेलि त्यार हाड़
लागू जसी तू लगूछीं रोज डाड़
छुटि ग्यो पहाड़
छुटि ग्यो पहाड़
छुटि ग्यो पहाड़।

हिन्दी अनुवाद

धार
जहां ठंडी ठंडी सी हवा बह रही है
उस धार के बगल में एक झरने के ऊपर की ओर
दूर्गून हो रहा है
मोहनि नाम की लड़की का दूर्गून
बिल्ली के बच्चे जैसी प्यारी
मोहनि का दूर्गून।
मोहनि आज अपने मायके पहुंची है
अपनी माँ की पौचिं के साथ
अपने पिता के वस्त्रों के साथ

मामा की दी नथ के साथ

चाचा के दिए रथ के साथ

और साथ हैं ताई चाची मौसी

सबके दूध दही के बक्से

अगर साथ है तो आज सिर्फ इस मायके की सम्पत्ति

अब नहीं है वो पहले की चुलबुल सी नटखट लड़की

वो ककड़ी की बेल, जौं , तिल

कुछ भी साथ नहीं है

साथ है तो वो एक जीजा

जो अपने सुन्दर सूट पैंट में है

जो सभी गाव की लड़कियों को मन में एक तीस जगा रहा है

मोहनि के पिता देख रहे हैं

अब डिलीट हो चुका है आश्विन का महीना और चातुर्मास

ना अब दही और दूध पाने की आशा बाकी है

और ना ही चक्की पीसने वाली बहू बनी

ना ही धान रोपने वाली महिला

अब ना ही उसने किसी के साथ काम पालटाने

और ना ही कहीं घास काटने को जाना है

ये बाँज का पेड़ भी तेरा रास्ता देखे था

और ये गाय का गोठ तक अधूरा सा लग रहा था

ये कुत्ते बिल्ली बकरी ऐसा लग रहा था

जैसे सब परेशान से है

कुमाऊँ के द्वार पहुच चुका है चेली तेरा ये हाड़-मांस का शरीर

पर ऐसा लगता है कि जैसे

तू रोज आवाज़ दे रही हो कि

छूट गया पहाड़

छूट गया पहाड़

छूट गया पहाड़ ।

***

1. पहाड़ का एक हिस्सा

2. झरना

3. शादी के बाद पकफेरे की रस्म

4. हाथ में पहने जाने वाला आभूषण

5. दूध,दही रखने का बक्सा

6. धान रोपने वाली स्त्री

7. प्रवेश द्वार

आम्

राति ब्यान पन्यार भटि
आंग खूकलनि, धोती बेड़नि,
घाद् लगूनि आम्
पाणि च्यैड़नि गरम कर दियै,
चाहा घुटुक बणै दियै
ऑडर लगूनि आम्।
खोली देली का टुक भटी
धोती बेड़ि बीड़ी फूकि
गिज फरकूनि आम्
चाहा घड़कूनी,उस करे तस नि करे
अपण खाप जोरल
ब्वारि काम पटूनि आम् ।
दिन दोपहरी भात पकूनी
दाल घुंगरानी
खट्टा बणूनि आम्
सबनै खवै पिवै लम्पसर सिवै
अपण कारोबार
सफल बणूनि आम् ।

डाण धुराक् बांज भटि
खोल देलि टुक तक
ब्वारि का जोर पर
अपू में एक पहाड़ जोड़नि
कमर टूटि आम् ।
दिन बीती साल भ्यो, साल बीती बरस
सासू दिना ब्वारि पर
कसि नि भै तब कटक
आब ब्वारि जसि आऊंन
नै आन पर ऊ
पहाड़ वालि आम् ।

हिन्दी अनुवाद

सुबह-सुबह से पानी के धारे से

शरीर धोकर, कपड़े लगाकर
आवाज़ लगाती आमा
पानी को गरम कर देना
चाय की घूंट बना देना
ऑर्डर लगाती आमा ।

खोली घर के दरवाजे से
अपनी धोती पहने बीड़ी फूकती
मुँह मटकाती आमा
चाय पीते हुए
ऐसा करना वैसा नहीं
अपने मुँह के जोर पर
बहू का हाथ बाँटती आमा ।
दिन दोपहर में चावल पकाकर
दाल में तड़का देकर
चटनी बनाती आमा
सभी को खिला-पीला बढ़िया से सुला कर
अपना कारोबार
सफल बनाती आमा ।

पहाड़ की चोटी के बाँज से लेकर
खोली के मकान के दरवाजे तक
बहू के जोर पर
अपने में एक पहाड़ जोड़ती
कमर टूटी आमा ।
दिन बीते साल हुए साल बीत कर वर्षों

सास के दिन बहू पर
क्या नहीं हुई परेशानियां
अब बहू जैसे भी आएं
पर नहीं आ सकती है अब वो
पहाड़ वाली आमा ।

***

(कविताओं का हिन्दी अनुवाद स्वयं कवि द्वारा किया गया है।)

सूंण मेरी सरम्याळी मायादार

रूचि बहुगुणा उनियाल की कविताएं

बुढ्या ह्वैगी

पैली नी जागदी थै माँ अधरातीम

मेरा पिताजी बणौंदा था चाहा सुबेर्योंकी

दींदा था हम सब्युंक चाहा की प्याली बिछौंण्युम

काळी गौड़ी ज्यू बंधी रैंद थै चौकम

रतब्यांदी गाड़दा था पिताजी वींथैं भैर उगाड़ि मंगन

पिताजी का रैंद मैं थैं अपड़ी माँ सदानी ज्वान
ल्हगदी थै

ऊंका होण से बिंदुली-टिकुलीम सजीं माँ भौत
स्वाणि चितेंदी
थै

अब अचणचक माँ बुढ्या दिखेंण ल्हैगी

सुबेर ब्यवेणा दिख्यिऊ वै सी पैली उठ जांदी माँ

पैली स्येंदी थै ज्यू निचन्त ह्वैकी

वींकी नीन्द अब सर्र बिजाळे जांद कुई आवाज ह्वंदा
ही

जब मैत जांदु मैं

तब पिताजी की जगा माँ ह्वंदी रस्वाड़िम सुबेर्योंक

इतगा स्वाणि दिखेंण वळी माँ

अब बिगर बिंदुली-टिकुली का सबुम दिखेंण ल्हैगी
बुढ्या

हिन्दी अनुवाद

पहले नहीं जागती थी माँ आधी रात में

मेरे पिताजी बनाते थे चाय सुबह की

देते थे चाय की प्याली हम सबको बिछौने पे

काली गाय जो आँगन में बंधी रहती थी

रात खुलते ही निकालते थे पिताजी उसे बाहर
गौशाला से

पिताजी के रहते मुझे अपनी माँ सदा जवान लगती
थी

उनके रहने से बिंदी-सिंदूर में सजी माँ बहुत सुन्दर
दिखाई
देती थी

अब औचक ही माँ बूढ़ी दिखने लगी है

भोर का तारा दिखे उससे पहले ही जाग जाती है
माँ

पहले जो निश्चिंत होकर सोती थी

अब उसकी नींद तुरंत टूट जाती है कोई भी आवाज़ होते ही

जब मैं मायके जाती हूँ

तो पिताजी की जगह माँ होती है सुबह रसोई में

इतनी सुन्दर दिखने वाली माँ

अब बिना बिंदी-सिंदूर के सभी में बूढ़ी दिखने लगी है

जब ह्युं पड़दु

जब ह्यूं पड़दु तब ल्हगौंदिन कांठी जागर

अधरातिम जब सुनिंद रैंदि दुन्या स्वींणुंम

तब न्हयेंदु हिमाल झक्क सफेद ह्यूं मा

यीं ह्यूं की ही पाड़ करदु जग्वाळ सालभर

ह्यूं पड़दु तब बचौंदु पाड़ पाणी अपड़ा कंठ मा

तबी त बगदी जांदीन बारामासी गंगा जमुना

ह्यूं मा डुबिक ही त जागदिन लाल सेब की कुंगळी कल्ली

डाळी - बुटळी, पौन- पंछी

गाड-गदनी अर डांडी - कांठी

मनौंदिन भगवती

पूजदिन द्यौ-द्येबता

कि झम्म पड्‌ ह्यूं अर पाड़ की उमर बढ़ जाऊ!

हिन्दी अनुवाद

जब बर्फ गिरती है तो चोटियां गाती हैं जागर

आधी रात को जब दुनिया गहरी नींद में सपनों में डूबी रहती है

तब हिमालय करता है स्नान झक्क सफेद बर्फ में

इस बर्फ की ही करता है प्रतीक्षा पहाड़ साल भर

जब बर्फ गिरती है तो बचाता है पहाड़ अपने कंठ में पानी

तभी तो बहती जाती हैं बारामासी गंगा-यमुना

बर्फ में डूब कर ही तो जागती हैं लाल सेब की कोमल कोंपलें

पेड़-पौधे, हवा-पंछी

गाड-गदेरे, पहाड़-चोटियां

सब भगवती का ध्यान करती हैं

पूजती हैं देवी-देवता

कि ख़ूब बर्फ गिरे और पहाड़ की आयु बढ़ जाए।

वींकी खुद

हैर्याळी जम जांदी पाड़ै नस्युंम

जब वा छूंदी अपणी हाथ्युंन

कोंपळी सी फुटदिन ठंगरी डाळ्यु फर

जब वा हैंसदी मुलमुल कैरिकी

जब भट्यौंदी डांड्यु धार फर वा

तब पड़दी छपछपी पाड़ै जिकुड़ीमा

उतौळु ह्वै जांदु गौं गुठ्यार वींकी अन्वार देखणौ

अणमणी ह्वै जांदीन डांडी-कांठी

जब नी सुणेंदु वींकु खिखताट

अर जब वा हिटदी अपड़ी गुंदक्याळी खुट्युंन

तब सरमै जांदीन

नाजै बाल, गुणत्याळी ह्वै जंदिन
डोखरी-पुंगड़ी

अर जब वा नी दिखेंदी न भिंडी दिनुं तलक

बौग मार देंदिन पौन-पंछी

धारा-मंगरा बगणु छोड़ देंदान

तब ऋतु बौड़नु भूल जांदीन

तब खौळ्युं रै जांदु रे पाड़!

हिन्दी अनुवाद

पहाड़ की नसों में हरियाली जम जाती है

जब वो अपने हाथों से छू लेती है पहाड़

कोंपल सी फूटती है सूख चुके पेड़ों पर

जब वो धीमे-धीमे मुस्कुराती है

जब वो पहाड़ी धार पर मिलती है

तो पहाड़ के हृदय को सुकून मिलता है

पूरा गाँव और आँगन उसकी झलक देखने के लिए
उतावला हो जाता है

अनमनी हो जाती हैं पहाड़ की धवल चोटियां और
हरी-भरी वादियाँ

जब उसकी खिलखिलाहट सुनाई नहीं देती
और जब वो अपने सुकोमल गुदगुदे पैरों से चलती है
तो अनाज की बालियां शर्मा जाती हैं
गुणवंती हो जाते हैं खेत और क्यारियाँ
और जब वो बहुत दिनों तक दिखाई नहीं देती न
तो मौन धारण कर लेते हैं हवा-पक्षी
पानी की धाराएँ और स्रोत प्रवाह छोड़ देते हैं
ऋतुएँ लौटना भूल जाती हैं

और पहाड़ बौखलाया हुआ रह जाता है।

त्वैकुथैं ल्युंलू जलम

त्वैकुथैं ल्यूंलु जलम ये पाड़म हर बार दगड़्या
तू बणिक ऐल्यु क्वी छव्वोया का भेस
त किनारों फर रौलु हरीं घास बणिक दगड़्या
तू बणल्यु जो देबदारौ घणु बण
त लगुली बणिक त्वैसी भेंट्यौलु दगड़्या
तू बणिक ऐल्यु ज्यू क्वे खुदेड़ घीत
त मैं तेरी भौंण बणुलु दगड़्या
तू बणल्यु बाळाकु लोरी
त मैं वींकी दुधबोली बण जौलु दगड़्या
धै ल्हगैकी बथौंदु त्वैथैं
मैं त्वैकुथैं ल्यूंलु जलम ये पाड़म हर बार दगड़्या

हिन्दी अनुवाद

तेरे लिए ही जन्म लूंगी हर बार इस पहाड़ पर साथी
अगर तू किसी पानी के स्रोत के उद्गम में आएगा

तो मैं उसके किनारे उगी नर्म घास के रूप में रहूँगी
अगर तू देवदार के घने वन के रूप में जन्मेगा
तो मैं तुझसे किसी लता की तरह लिपट कर मिलूँगी साथी
अगर तू किसी मार्मिक लोकगीत की तरह रहेगा
तो मैं उस गीत की धुन बन जाऊँगी साथी
अगर तू किसी बालक के लिए लोरी का रूप धारण करेगा

तो मैं उसकी दूधबोली(माँ-भाषा) बन जाऊँगी साथी
आवाज़ लगाकर, पुकारकर बताती हूँ तुझे
मैं तेरे लिए लूंगी हर बार जन्म इस पहाड़ पर साथी।

सूंण मेरी सरम्याळी मायादार

त्वै देखिक मेरी जिकुड़ीम
फुटदिन कतगा ही छवोय्या
पराण फूलदेई मनौण्या ह्वै जांदु लठ्याळी
पट्ट ब्वोटिक तेरी खुद की अंग्वाळ
मैं पौंछि जांदु अपणा पाड़्युंम
पईंया की झक्क झुकीं डाळ्यु फर
खिल्यां फुलुन लगाई छुंई मैंमा
तेरा औंण से हैंसणु छ पईंया
ह्यूंवळी कांठ्यु कु रंग जनु तेरु गात लठ्याळी
अर तेरी गल्वड़्युंम खिल्युं हो जनु बुरांस
तेरु हिटणु यनु छ जनु कि
छळछळांदु गंगाजी कु पाणी
तेरी हंसी सूंणीक ही त खिलदी फ्योंली...,
बौड़दु चैत, फुटदन कुटमुणा
डाळ्युं फर.....
तेरी युं सुरम्याळी आँख्युं की सौं छन
बुरु न मानी
सुआपंखी स्वीणुंम अळझ्युं मेरु हिया
युं आँख्युं की मायादार छुंयुंम बिसरीगी सुध अपणी!

हिन्दी अनुवाद

सुन ओ मेरी शर्मिली प्रेमिका
तुझे देख कर मेरे हृदय में
न जाने कितने ही मीठे पानी की धाराएँ फूट पड़ती हैं
मेरा मन फूलदेई मनाने का होने लगता है

तेरी स्मृति का आलिंगन करते ही
मैं अपने पहाड़ में पहुँच जाता हूँ
पईंया के फूलों से लकदक झुकी डाल ने
मुझे बताया है कि

तेरे आने से ही खिलखिला रहे हैं पईंया के फूल

बर्फ से सफेद हुईं चोटियों के रंग जैसा तेरा बदन

और तेरे कपोलों पर जैसे बुरांश खिला हो

तेरा चलना ऐसा है

जैसे गंगाजी की छलछलाती धारा हो

तेरी हंसी सुनकर ही तो खिलती है फ्योंली

लौटता है चैत महीना, सूख चुकी डालियों
पर कोंपल फूटती हैं

तेरी इन सुरमेदार आँखों की सौगंध खाकर कहता
हूँ

बुरा न मान लेना

सुन्दर प्रेमिल सपनों में डूबा मेरा मन

तेरी इन आँखों की प्रेमिल बातों में अपनी सुधबुध
खो चुका
है।

तेरी हैंसी सूंणीक

दगड़्या तेरी हैंसी सूंणीक ही त

सुबेर हूंदी पाड़ूम

चट्ट ल्हगदु घाम हिंवाळी कांठ्युंम

तेरी हैंसी की अंग्वाळ बोटीक....

दगड़्या तेरी हैंसी सुणेंदी जब दूर धारूम

तब चखुला गीत लांदन

घेंन्दुड़ी बौड़दिन सूना पड़यां चौकूंम...

तेरी हैंसी सूंणीक

फुटदन छवय्या पाड़ूम, भेंटेंदु चैत,

बेटी_ब्वारी मेसौंदिन मैत की
खुद

सार्युंम झक्क झुकदिन

साठी की बाल.....

तेरी कांसाकी थाळी जनी

खंणखंणादी हैंसी सूंणीक ही त

बीठूं फर दाथुड़ी छंणछंणांदी

चौक नाचदु तेरी हैंसी सूंणी

लांदु थड़्या अर चौंफला....

रुमुक प्वड़्दी ही हूंदी

तेरी हैंसी से रस्वाड़ीम रस्यांण

अर जब रातिमा तू

सुनिंद स्वीणुंम रैंदी न भग्यानी

तब जोन टक्क लगैकि

हेरदु तेरी तिबारी ओजाक...

मेरी दगड़्या.....

तू हैंसणी रायी सदानी

पाड़ की जिकुड़ी धकध्यांदी राली रे!

हिन्दी अनुवाद

मेरी प्रिय साथी तेरी हंसी सुनके ही तो

पहाड़ों पर सुबह होती है

तेरी हंसी को गले लगाकर ही

धूप लगती है बर्फ से उजली चोटियों पर

मेरी साथी जब तेरी हंसी सुनाई देती है दूर पहाड़ी धार पर

तब ही तो पंछी गीत गाते हैं

गौरैया लौट आती है सूने हो चुके आँगन में

तेरी हंसी सुनकर ही

मीठे पानी के स्रोत फूट पड़ते हैं पहाड़ों पर, चैत का महीना लौट मिलता है

बहू-बेटियां मायके की याद करती हैं

खेतों में लकदक धान की बालियां झुक जाती हैं

कांसी की थाल जैसी

खनकदार हंसी सुनकर ही तो

पहाड़ी खेतों की मेढ़ों पर दरांती से बंधे घुंघरू छनछनाते
हैं

आँगन तेरी हंसी सुनकर नृत्यरत् हो जाता है

और आँगन नाचता है थड़्या और चौंफुला (लोकनृत्य)

शाम होती है तो

तेरी हंसी सुनकर ही रसोई में रौनक हो जाती है

और रात को जब तू

गहरी नींद में सुन्दर सपनों में डूबी रहती है न भाग्यवान

तब चाँद टकटकी लगाकर तेरी छत से

तुझे ही देखता रहता है

मेरी प्रिय साथी

तू हंसती रहना हमेशा

पहाड़ का हृदय धड़कता रहेगा।

****

(कविताओं का हिन्दी अनुवाद स्वयं कवि द्वारा किया गया है।)

उँन कलम त नि देखी

मोहित नेगी 'मुंतजिर' की कविताएं

वोड्डु

वोड्डु जमीन मां पढ़न

सि पैली

पड़दू दिलूँ मां

अर वै हि वोडो छाप पड़दू

जमीन पर

अर जब ज़मीन अर दिल

द्वी जगा पड़ी जांदु वोड्डु

तब वै ते हटोण व्हे जांद

मुश्किल

तब वोड्डु हट नि सकदु

बस सरकाये सकदु

अर सरकौण पर व्हनदीन

राड़

हिन्दी अनुवाद

सरहद का पत्थर

ज़मीन पर स्थापित होने से पहले

स्थापित होता है दिलों में

और बाद में पड़ती है उस की ही छाप

ज़मीन पर भी

और जब ज़मीन और दिल

दोनों जगह स्थापित हो जाताहै सरहद का पत्थर

तो उसे हटाना हो जाता है

मुश्किल

तब वो पत्थर हटाया नहीं जा सकता

वो बस खिसकाया जा सकता है

और खिसकाने पर

होती हैं लड़ाइयाँ

बिसौंण*

बिसौंण होंदिन उँ ते

जु ल्ये तै औन भारा घासा ..लाखड़ा

जु ल्ये तै औन कूड़े पठाल....बाँसा

जु ल्ये तै औन मंडवार्त का बाद साटि का कट्टा

लौंणा बाद ग्यूं ,जौ का भारा

जु अपणी पीठि मां

उठोन्दन सैरी पिर्थवि कु भार

उँका भार उठौणा ते होंदिन

बिसौंण

हिन्दी अनुवाद

बिसौंण

बिसौंण होती है उनके लिए

जो ले के आयें बोझ घास के, लकडी के

जो ले के आएं मकान की छत के लिए

स्लेटी पत्थर... बल्लियाँ

जो ले के आएं मंडाई के बाद

धान के कट्टे

कटाई के बाद गेहूँ और जौ के बोझ

जो अपनी पीठ में

उठाते हैं

सारी पृथ्वी का भार

उनके लिए होती हैं

बिसौंण

(*बिसौंण- पहाड़ी रास्तों पर बनाया गया वह स्थान जहाँ पर बोझे को कुछ समय के लिए रखकर आराम किया जाता है।)

कुलैं

नेता कुलैं छन

उ जब बढदिन त अपणी जमीन भूल जांदन

हेरदिन बस सर्ग

उँ ते जमीन पर ल्योणों बस एकी

बाटू च

कि चढ़ी ते काटी द्यो

उँ का टुख

अर गेंडी द्यो सब फांगा

ताकि उँका भ्वां भि

फल फूली सकून कि डाला

हिन्दी अनुवाद

चीड़

नेता चीड़ हैं

जो जब बढ़ते हैं

तो भूल जाते हैं

अपनी ज़मीन

देखते हैं बस आकाश

उनको ज़मीन पर लाने का

है बस एक ही रास्ता

कि कोई चढ़ कर

काट दे उनके शिखर

और हटा दे उनकी सारी

टहनियाँ

ताकि उनके नीचे भी

फल फूल सकें

कोई वृक्ष।

बिकासो घट

बिकासो घट

रिंगोंदीन नेता अर

ऑफ़िसूं मां थरप्यां अधिकारी

अर कभी कभी त

यु रिंगे देंदिन

बिकासो घट

बिना पाणिन

जब रिंगदु बिकासो घट

त वै सि अलावा नि सुणेदी

और क्वेगी आवाज़

यु घट रिंगदु त बीजां च

पर पीसदु कुछ नी।

हिन्दी अनुवाद

विकास का घराट

विकास का घराट

घुमाते हैं नेता

और ऑफिसों में

बैठे अधिकारी

और कभी कभी तो

वे घुमा देते हैं इसे

बिना पानी के

जब घूमता है

विकास का घराट

तो उसके सिवा नहीं सुनाई देती

कोई और आवाज़

ये घराट घूमता तो बहुत है

मग़र पीसता

कुछ भी नहीं

दाथड़ा

उँन कलम त नि देखी

पर उँन दाथड़ा देखिन
जैन काटिन उँन
अपणा दुख
पहाड़ो दुख
अपणी गरीबी
अपणु बिजोग

जब लुकारा छोरुं
टांकीन कांधि मां
बस्ता
तब उन सारिन
घासा भारा
मौला कंडा

जब लुकारा छोरा
रैन बैठ्यां
स्कूलों मां ,क्लासूं मां
उ रेन तब बिसौंणयूं मां ,
पल्योंणयूं मां

जब लुकुन गीणीन
अपणा छोरुं का नम्बर
त उँका ब्वे बाबुन
गीणीन
ब्यखन दां घौर आयां
गोरुं
अर एक बी गोरुं कम होण

पर
खै उँन मार
इथगा मार
कि जथया नम्बर कम औंण
पर भि नी पड़दि
सेरी दुन्या ते बस्तूं
बोझ त दिख्ये

पर नि दिखे त
उँका भारुं बोझ
जॉन पकड़ी छे कलम

उ चलिगेंन जब
छोड़ी अपणी थात
त तब संभाली
उँन
जौं ते क़लम का बदला
मिली छा दाथड़ा
मैन करिन सेरी गणना
अर जाणी

कि कलम वालूँ योगदान
दाथड़ा वालूँ सि जादा
नि च।

हिन्दी अनुवाद

उन्होंने कलम तो नहीं देखीं
पर उन्होंने दराँतियां देखीं
जिससे काटे उन्होंने अपने दुख
पहाड़ों के दुख
अपनी गरीबी
अपना दुर्भाग्य
जब दूसरों के बच्चों ने
टांके कंधों पर स्कूल के बस्ते
तब उन्होंने ढोये
घास के बोझ
गोबर की टोकरियाँ
जब दुसरों के बच्चे रहे बैठे
स्कूलों में, अपनी क्लासों में

तब वे रहे बैठे बिसौंण में
और दराँतियां पैनी करने वाली
जगहों पर
जब दूसरों ने गिने अपने बच्चों के नम्बर
तब उनके माँ बाप ने गिने
शाम को चर के घर आये हुए जानवर
और एक भी जानवर कम होने पर
पड़ी उन्हें इतनी मार
कि जितनी नम्बर कम आने पर भी

न पड़ती हो।

सारी दुनिया को दिखा
बस्तों का भार
पर उनके बोझों का नहीं कर सका
कोई आकलन
जिन्होंने पकड़ी थीं कलमें
वे चले गए जब
छोड़ कर गए अपनी भूमि
तो तब सम्भाला उन्होंने

जिन्हें क़लम के बदले
मिली थीं दराँतियां
मैंने की सभी गणनाएँ
और जाना
कि कलम वालों का योगदान
नहीं है दराँती वालों से अधिक

***

(कविताओं का हिन्दी अनुवाद स्वयं कवि द्वारा किया गया है।)

राजेश जोशी, महेश पुनेठा और प्रदीप सैनी की कविताओं का कुमाउनी अनुवाद

अनुवाद - हर्ष काफर

गुरूत्वाकर्षण

न्यूटन जेब में रख लो अपना गुरूत्वाकर्षण का
नियम
धरती का गुरूत्वाकर्षण ख़त्म हो रहा है ।

अब तो इस गोल-मटोल और ढलुआ पृथ्वी पर
किसी एक जगह पाँव टिका कर खड़े रहना भी
मुमकिन नहीं
फिसल रही है हर चीज़ अपनी जगह से
कौन कहाँ तक फिसल कर जाएगा,
किस रसातल तक जाएगी यह फिसलन
कोई नहीं कह सकता
हमारे समय का एक ही सच है
कि हर चीज़ फिसल रही है अपनी जगह से ।

पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण ख़त्म हो रहा है ।

फिजिक्स की पोथियो !
न्यूटन के सिद्धान्त वाले सबक की ज़रूरत नहीं बची

पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण ख़त्म हो रहा है ।

कभी भी फिसल जाती है राष्ट्राध्यक्ष की जबान
कब किसकी जबान फिसल जाएगी कोई नहीं
जानता
श्लोक को धकियाकर गिरा देती है फिसलकर आती
गालियाँ
गड्डमड्ड हो गए है सारे शब्द
वाक्य से फिसलकर बाहर गिर रहे हैं उनके अर्थ
ऐसी कुछ भाषा बची है हमारे पास
जिसमें कोई किसी की बात नहीं समझ पाता
संवाद सारे ख़त्म हो चुके है, स्वगत कर रहा है
नाटक का हर पात्र ।

आँखों से फिसल कर गिर चुके हैं सारे स्वप्न ।

करोड़ों वर्ष पहले ब्रह्माण्ड में घूमती हज़ारों चट्टानों
को
अपने गुरूत्वाकर्षण से समेट कर
धरती ने बनाया था जो चाँद
अपनी जगह से फिसल कर
किसी कारपोरेट के बड़े से जूते में दुबक कर बैठा है
बिल्ली के बच्चे की तरह ।

फिसलन ही फिसलन है पूरे गोलार्ध पर
और पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण ख़त्म हो गया है !

ओ नींद
मुझे इस भयावह स्वप्न-सत्य से बाहर आने का
रास्ता दे

कुमाउनी अनुवाद

हगोय यार न्यूटन पल-धर-क आपु गुरुत्वाकर्षण
नियम

धरती-क गुरतावकर्षण धीरे-धीरे ख़त्म हूणो रे

हर तरफ़ चिफ़्वपट्ट हगो यार

अब य गोल-मटोल दूनी में, खुट धरणी आसर नी रे
गोय

हर चीज़ दन-कीणे

को काँ जाले रड़ल के खबर नेह

माँ क़सम ! कोई के नी कै-सकन

कै पत्त, पाताल जाले छू, य चिफ़्वपन

और हमर बखत-क यई सत्य छू रे

कि हर चीज़ रड़ने आपु जागथें बटी

धरती-क गुरुत्वाकर्षण ख़त्म हूणो रे न्यूटन

कैक जबान कब फिसल जो के पत्त नेहत

क्वींड़, सौव-कठोव

याँ जाले मनसुप ले चिफ़्वणि

मतलब ! मतलबै-की रगे य दुनी

और उ मतलब ले चिफ़्वपट्ट हेगीं रे

हम्पा अब मतलबैकी भाषा बचगे

य धरतील आपु गुरुत्वाकर्षणल बड़ाई भोय
जसी इजल सैती पाई भाई नांन तीन
य चाँद ले दुबक बे
बैठ गो लालानु-क ज्वात भीतेर
बिराऊ पोथिल वाई
पल-धर कौ आपु गुरूत्वाकर्षण-क नियम
धरती गुरुत्वाकर्षण ख़त्म हूणो रे न्यूटन
ओ नीन ! आ
अब तुई मुकु य स्वैण बे भैर निकलण बाट दिखा..

पंचेश्वर

पहली बार नहीं दिखाए जा रहे हैं ये सपने
वे सपनों के सौदागर हैं
जब–जब पड़ी उन्हें जमीन की जरूरत
वे सपनों के पैकेज लेकर आ गये
तुम घर के बदले घर मांगोगे
वे हाँ कहेंगे
तुम खेत के बदले खेत मांगोगे
वे हाँ कहेंगे

तुम जंगल के बदले जंगल मांगोगे
वे हाँ कहेंगे
यहाँ तक की तुम नदी के बदले नदी
तब भी वे हाँ कहेंगे
तुमसे केवल एन ओ सी में
दस्तखत मांगेंगे
जिन्होंने जीवनभर लूटना-चूसना जाना
वे देश के लिए तुम्हें
तुम्हारे कर्त्तव्यों के बारे में बताएँगे
ध्यान रखना
यही सपने दिखाए थे उन्होंने
भाखड़ा में
रिहन्द में
टिहरी में
नर्मदा में
अब तुम्हारे पास आये हैं

रेडीमेड हैं इनके सपनों के पैकेज
एक-एक कर निकाल धर देंगे
तुम्हारे सामने

जैसे कोई कपड़े का व्यापारी थान के थान
चौंधियां जाती हैं जिन्हें देख आँखें
वे सपनों के सौदागर हैं
उन्हें खूब आता है उलझाने का हुनर
पूछ लेना
जान लेना
ख़ोज लेना
क्या हुआ उनके सपनों का
जिन्हें तुमसे पहले दिखाए गये थे सपने
जो आज भी दर-दर भटक रहे हैं
अपने सपनों की लाश लिए.

कुमाउनी अनुवाद

पैल बार ज के दिखाई जानी य स्वैण
उ स्वैणु गलदार छिन
जब-जब पड़ी उनुकू ज़मीन जरवत
उ स्वैणु पैकिज लि भे अ ग्याय
तुम घरक ब्दाव में घर मांगला
उ होई के द्याल

तुम गाड़-भीड़ा ब्दाव में गाड़-भिड़ मांगला
उ होई के द्याल
तुम धुरक ब्दाव में धुर मांगला
उ होई के द्याल
याँ जाले कि तुम गाड़ बदाव में गाड़ मांगला
उ तब ले होई के द्याल
तुम्हू केवल NOC मि दस्तख़त मांगाल
जनूल जीवन भर लूट-खसोट करी
उ देश ख़ातिर
तुमुकुँ कर्तव्य पाठ पड़ाल
ध्यान धरिया हाँ
यई स्वैण दिखाई उनुल
भाखड़ा में
रिहाँद में

टिहरी में

नर्मदा में

पे अब तुमर मुख थे उड़ई

रेडीमेट छिन उनार स्वैणु पैकेज

एक-एक करभे धर द्याल तुमार मुख थें

जसी कपड़ व्यापारी खोल द्यू

थानक थान

तुमार आँख़् फ़ाटिया रे जाल

उनकूँ भलीभा उ सौद-पत्त

उ भलीभा जाड़नी बतयूण-बातयूण

सोच लिया

पूछ लिया

जरा खोज खबर कर लिया

के हो उनार स्वेणुक

जनुकू तुमे हबे पैली दिखाई स्वैण

जो आज ले दर-दर भटकड़ीय

आपू स्वैणु डानि लि भे

स्थानीयता

आसान है करना प्रधानमंत्री की आलोचना
मुख्यमंत्री की करना उससे थोड़ा मुश्किल
विधायक की आलोचना में ख़तरा ज़रूर है
लेकिन ग्राम प्रधान के मामले में तो पिटाई होना
तय है।

अमेज़न के वर्षा वनों की चिंता करना कूल है
हिमालय के ग्लेशियरों पर बहस खड़ी करना
थोड़ा मेहनत का काम
बड़े पावर प्लांट का विरोध करना
एक्टिविज्म तो है जिसमें पैसे भी बन सकते हैं
लेकिन पास की नदी से रेत-बजरी भरते हुए
ट्रैक्टर की शिकायत जानलेवा है।

स्थानीयता के सारे संघर्ष ख़तरनाक हैं
भले ही वे कविता में हों या जीवन में।

कुमाउनी अनुवाद

भौत आसान छू प्रधानमंत्री कु न धरण

मुख्यमंत्री कु जरा मुश्किल

विधायक कु गाई दिण में खत्र तो छू

मगर ग्राम प्रधानक मामूल में

चूटान तय छू

भैर देशाक जंगलू चिंता करण होशियारी छू

हिमालय बर्बादी पे बहस थाड़ करण जरा मुश्किल

ठुल् पॉवर प्लांटक विरोध करण नान बात नी भय

मगर उमें डबल ले बड़ सकनी

आस-पासाक गाड़-गध्यारा बटी बजरी निकालते

टैक्टर-ट्रॉली शिकायत करण में जान ले जै सकें

लोकल-मुद्द हमेशा जानलेवा हुनी दोस्त

अब उ चाहे कविता में हो, या फिर आम जीवन में।

***

मथुरादत्त मठपाल की कविताओं का हिंदी अनुवाद

अनुवाद - कृष्ण चन्द्र मिश्रा

आङ् आङ् चिचैल है गो !

आङ्-आङ् चिचैल है गो !

हिकौ-हिकौ कुकैल है गो ।

मुखां-मुखां म्वडैन फोकी गे ।

पौन-पाणी सैद विखेल है गो ।।

मनखियं' पिरैन मनखी कैं लागणे ।

अपणे खून में तितेन लागणे ॥

को थोल सुबास धरी रंगे-

हर हंसि में यां खौंसेन लागणे ॥

बुकै खानेर अपणै छैल है गो ।

आड़्-आड़् चिचैल है गो ॥

कां लुकीणी आज फूलौं' बास ?

कां हराणी आज पौने' सांस ?

जुन्यालि को कुण गुमची, भलस्यो,

गगास धरी रै किलै टटास ??
धरती' पटाड्ण कदू' तेल है गो !
आड़्-आड़् चिचैल है गो ॥
रामनामी- दुप्वट मैल है गो ।
फकीरी- च्वाल कैल है गो ।
मन्दिर-मस्जिद - गुरुद्वारां में डोईन-
भगवान रंढकौर लं चनैल है गो ।
स्वरगौ' ग्वैर बज्युण कनैल है गो
आड़्o- आड़्o चिचैल है गो
को भगीरथ गंग बट्यैंला ?
को दधीचि हाड़ चड्यँला ?
मनख्यो' सितौं' सुलाड० लगुनेर-
हणुमन्तों कैं को जनमैंला ?
बखत पट्ट बांजऽ - बैल है गो ।
आड़्o-आड़्० चिचैल है गो ॥
आड़्o-आड़्० चिचैल है गो ।
हिको-हिको कुकैल है गो ।
मुखां-मुखां म्वडेन फोकी गे ।
पौन-पाणी सैद बिखेल है गो ॥

हिन्दी भावानुवाद

हर शरीर खुजलीदार हो चुका है
हर एक कलेजे में जलन फैल चुकी है
हर चेहरे पर मृत्यु कालिमा
फैल गयी है
पवन-पानी सब जहरीला हो चुका है।
आदमी आदमी की आंखों में चुभ रहा है
अपने ही खून में कड़वापन लग रहा है
किस मुंह में आज अच्छी वाणी बची रह गई-
हर हँसी में यहाँ जली मिर्च की
गंध आने लगी है।
अपनी ही परछाई भी
काटने/खाने को आ रही है,
हर शरीर खुजलीदार हो चुका है।
कहाँ छुपी आज फूलों की खुशबू ....?
कहाँ खो गयी
आज पवन से प्राणवायु ....?
चांदनी किस कोने छुप गयी, भले मानुषो!

गगास क्यों रह गयी
निराश/प्यासी..........................?

धरती का आंगन कितना तप गया है

हर शरीर खुजलीदार हो चुका है।

रामनामी दुपट्टा मैला हो चुका है

फकीरी का चोला काला हो चुका है

मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे में भटकने वाला

भगवान अभागा भी धुंधला हो चुका है।

स्वर्ग का रास्ता भी बंजर हो चुका है

हर शरीर खुजलीदार हो चुका है

कौन सा भागीरथ गंगा को रास्ता दिखाएगें
.........?

कौन दधीचि अपनी हड्डियाँ को
चढ़ाएंगे................?

खोयी मानवता की सीता का पता लगाने-

कौन हनुमंतों को जन्म देगा................?

वक्त बन्ध्या हो चुका है

हर शरीर खुजलीदार हो चुका है

हर शरीर खुजलीदार हो चुका है

हर एक कलेजे में जलन फैल चुकी है

हर चेहरे पर मृत्यु कालिमा

फैल गयी है

हवा - पानी ही शायद जहरीला हो चुका है॥

जभत जांलै

जभत जांलै-

तुमरि चुल्याण पाकी

चुव - सिसुणो'साग

पात-पतेलों में धरि-धरि

बाखइ भरी'

कुड़ि-कुड़ियों तक जाने रुंछी ।

जभत जांलैं-

हमर पटाङण में भरी

एक चिलम तमकौ' धूं

दस-जोड़ी नाखा' सोरों' बाटऽ

उरातार-

भ्यार छुटण देखींछी।

और जमत जांलै-

उनरि डौंकोई छां

(पन्त-गौं बटि गैर-गौं तक नी लै पुजौ)

बलघर-पलघर

देई-बांटी-खाई जैंछी।

और-

माल-भराण- डानि-डोलि कैं

अपणि कानी दीणा लिजि

मैं-लै, मैं-लै हुंछी ।

और-

भात-बरयतों में

क्वे खगी दा'क

या क्वे डोई का'क

उनरि ठाड़ि धोति पैरि

और हात मजि तस्याल लिबेर

उण देखीण जालै

जात - बिरादरी

दाव-भात में

हातै नि डौबी दीछी।

और-

रान-रनकुलियां हौव-तांङौ

उनार पेट-मुया'क-

हौवा' हथिन थामण जालै

गौक सौर ज्यु-ज्याड़ ज्यु या दयोर

चलै दींछी।

और-

निरपंखि - निरबसि

क्वे पदुलि काखी'

छौं-छड़णा' लिजी

द्वी-चार ख्वर

मुनियण हुं

औप्पै अघी जांछी।

और-

आणा-कांथों पारि मेथी

सतके गौ'क हयूना' रात

एक्कै आग' कि-एक्कै चाख' कि निमैलि में,

होइ-दिवाइयों पारि मेड़ी
अरग गौं'क ख्यलकार दिन
एक्कै खोइ'कि-एक्कै पटाढण' कि धेलि में,
थुपुड़ी ऊंछी।

ओर-
ओर-
थोलों' हंसि'र-
अंखां' आंसि में,
गोरू' गुथाण'र-
मुदौ तिथाण' में,
तौली' भात'र-
द्याप्तां' जांत में
व्वड़-स्यून-
घटी नि रुंछी।
और
जभत जालैं-
रात हुणि-
अगासै' गुरमाइ दिखैं
गौँ' बुडि आमs
गौं भरि कैं
लोक-छीद बतुनै रुछी, कि-
'चाओ धैं म्यर गेल-पोथिलो,
यो सात बैंणियां' ल

एक तीला' बीं
बानि खा, बल।'
तभत जांलैं-
म्यर पहाड़-
पहाड़ हैबेर लै
सकर गरु छी
दादी॥

हिन्दी अनुवाद

जब तलक
तुम्हारे चूल्हे में पका हुआ
साधारण सा भोजन भी
पत्तों-दोनों में रख-रखकर

मुहल्ले भर के घर-घरों तक जाता रहता था
जब तलक
हमारे आंगन में
भरी एक चिलम तंबाकू का धुआं
दस जोड़ी नासिका छिद्रों से
लगातार बाहर छुटता दिखता था

जब तलक उनकी
कठौती की छांछ
पन्त गांव से लेकर गैर गांव तक(बहुत लोगों तक) नहीं भी पहुंचे
पास-पड़ोस के घरों में दी बांटी खाई जाती थी
और
कड़ियों- बल्लियों, अर्थी- डोली को
अपना कंधा देने के लिए
'मैं भी' 'मैं भी' होती थी
और
भात बरातों में किसी अदने बिरादर के
खड़ी धोती(लंगोट) पहनकर

हाथ में तसला लेकर आने तक
जात बिरादरी
दाल भात को
हाथ नहीं लगाती थी
और
किसी गर्भवती असहाय विधवा के
गर्भस्थ शिशु के
हल का हत्था थामने लायक ।होने तलक

गांव के ससुर जेठ जी या देवर उसके खेतों में हल लगा देते थे
और
असहाय(साधनहीन) निरवंशी किसी महिला की
मृत्यु के बाद
छूत (अशौच) छुड़ाने के लिए
दो चार लोग अपना सर
मुंडवाने को
अनायास आगे आ जाते थे
और

पहेलियों कथाओं पर उलझी सारे गांव की जाड़ों
की रातें
एक ही आग
एक ही बैठक की मन्द तपन में
होली दिवाली पर लिपटे
सारे गांव की खुशी के दिन
एक ही खोली
एक ही आंगन की देहरी में
जमा हो जाते थे
होठों की हंसी आंखों के आंसुओं में

गाय के गोठ
मुर्दों के श्मसान घाट में
पतीली के भात
देव यात्रियों के समूह में
विभाजन चिन्ह और रेखाएं नहीं थी
और
जब तलक आकाश में सप्त ऋषि को दिखाकर
गांव की बुढ्ढी अम्मा
गांव भर
लीक-सीध बताती रहती थी
देखो तो मेरे बच्चों
इन सात बहिनों ने
एक तिल का दान भी बांट कर खाया था
सुनते हैं
तब तलक्
मेरा पहाड़
पहाड़ से भी
अधिक भारी था
भाई।

बस, चारै ढुङ ।

चार ढुङ ठड्यै द्याला-
दयाप्तां' थान बणि जानी ।
चार दुङ रड़यै द्याला-
पिरेतों' समसाण बणि जानी ।
दयाप्त, घत्याई-
योई मन में मनखी-

इनसान के, भगवान बणि जानी ।
योई तन में मनखी-
हैवान संतान बणि जानी ॥
हैबान-संतान
भूत- मसाण बणि जानी ।
बाट, घत्याई-
भ्यो- पखाण बणि जानी ।
मन, बज्याई-
घाट- तिथाण बणि जानी ।
तन, बुस्याई-
कनां' दिसाण बणि जानी ।
चार ढुङ ठड्यै द्याला-

याप्तां' थान बणि जानी ।
चार ढुङ रड् ये द्याला--
पिरेतों' समसाण बणि जानी ।
तब, जिन्दगी' बांसल के बणाला-
कि, मोहनें' मोहनि मुरुलि ?
कि राधिका' रङिलि पिचकारि ?
कि, गोप्यण्यों चुपिलि मथाणि ?
कि, गोपालों' पहरु जांठि ?
योई बांस आपस में घुसी-
अपणां' आग बणि जान
योई बांस बालड़ि ऐ गे
बज्युणी -बूस्युणी भाग बणि जानी
चार ढुङ ठड्यै द्याला-
व्याप्ता' थान बणि जानी।
चार ढुङ रड़यै दयाला-
पिरेतों समसाण बणि जानी ॥
बस, चार ढुंग

हिन्दी अनुवाद

चार पत्थर खड़े कर दोगे
देवताओं के थान बन जाएंगे
चार पत्थर गिरा दोगे
प्रेतों के शमशान बन जाएंगे
इसी मन में मानव
इंसान क्या भगवान बन जाते हैं

इसी तन में मानव

हैवान-शैतान बन जाते हैं

पुकारे हुए देवता भूत-मसान बन जाते हैं

घटाए हुए रास्ते पर्वत-चट्टान बन जाते हैं

बंजर मन घाट- शमशान बन जाते हैं

निर्जीव तन

कांटों के समान बन जाते हैं

तब जिंदगी के बांस से क्या बनाओगे

मोहन की बांसुरी

या

राधिका की रंगीली पिचकारी गोपियों की चुपड़ी मथानी

या

गोपालों की लाठी

आग फूकने वाली फूंकनी भी इसी की

और दुनिया फूंकने वाली अर्थी भी इसी की

यही बांस आपस में रगड़कर

अपनों के लिए आग बन जाते हैं

यही बांस बाल आने पर

बंजर निर्जीव करने वाले भाग बन जाते हैं

चार पत्थर खड़े कर दोगे

देवताओं की थान बन जाते हैं

चार पत्थर गिरा दोगे

प्रेतों के शमशान बन जाते हैं

सिर्फ चार पत्थर..........

बिकास है रौ !

हरि गौ-गाडौं' भलस्यो-

भल बिकास है रौ ।

पाणि, सभापति ज्यु के मुख देखिणौ-

गौं तौ टटास ले रौ ॥

सबु पैली यां एक इसकूल खुलौ ।

मैंल स्वचौ-

सैद, म्यर गोठी कैं ले अब ज्ञान मिलौ ।

पर, एक दिन दुलपीदा'ल बता-

यो इसकूला' मास्टरों'

छन्चर हाफ रौं,
(इतवारै' छुट्टी भइ)
सौमार साफ रौं ।
और, धरमानन्द हेड-संबु कैंतो
हफ्त में द्वी-एक दिन
और लै माफ रौं ॥
सुणण में ऐ रौ-
यो साल हमर जिला'
सर्वोत्तम अनुशासन' पुरस्कार
हमरै इसकूलक' पास ऐरौ ॥
हमरि गौं-गाड़ौ.............
जो छियो सभापति ज्यु'क-
पुराणs गौसाव,
बी में आज-भोव

खुलि रौ असपताव ।
महाराज,
सरकारि असपताव-
न डाक्टरों' कंकाब ।
न कम्पोटरों' जंजाव ।
च-घड़ि, नरराम वार्ड-बौयै
उघाड़ि द्यू- द्वार-स्वाव ।
को दिन रत्तै-
के दिन ब्याव ||
अब चौं-
ख्वर में पड़ी हो झमरताव,
या पेट में उलटी हो नाव,
या दगड़े चली हों दस्त-उखाव,
या लिजाणियै ऐ जौ काव,
नररामा' हातों´ल-
चार सुकिलि गोइयों' ऐ जां ढाव ॥
अनोपान छोटू जमदार बतं द्यु -
'महाराज, दबा गरम च्या के संग खाव॥'
झुपुलि काखि

कुरुलि दिदि थे कुणंछी, बल-
'नरराम और छोटव'ल जै
डांढरी भल भ्यास पेरौ ।'

हमरि गौ-गाड़ों.....

पै बणि हमर गौं तक सड़क ।

मोटर पुजण हैबेर पैलियै

गौं में पुजि गे भड़क |

पिं भै गय बाउ बुड़

हड़क - हड़क ।

हम द्वि नि-पिणियां ल

एक फ्यर विरोध लै करौ-

तब-

चार पिणियाँल छोड़ि नड़क ।

आठ पिणियां´ल छोड़ि कड़क ।

और, बांकि पिणीं बौंल खुरसि

दगड़े ठाड़ है गय-चड़क-चड़क ।

हम द्वीनों कैं कान-

खटखटाई गय-खड़क - खड़क ।

हमुल माफि मांगि

कौय-

है रौ यप्तो, हम द्वीनों कैंल

कसूर खास है रौ ॥

हमरि गौं-गाडौ.........'

और, महाराज अब -

छै म्हैण पैली हमर गौं में

बिजुलि -पाणि ले ऐ गई-

दगड़े - एक बट्टे ।

बिजुलि वाबोंल-

लकड़ा' पोल ठड़यै रखीं ।

पाणि वावों´ल

लुआ' नल खड्ये राखीं ।

बरसों कलबिस्टै जं जागर लगे

यो द्वी द्यप्त-

गौं-गाड़ में गड़ै राखीं ।।

और, यों द्वीयं व्याप्त-

अमुसि-दुमासै गौं में खुट-धरनी,

कभतं रामदत्त'क

और कभतै भास्कर क

पंचाङ चै बेर जासऽ औतरनी ॥

पाणी' नल कै दिन अदरात कैं चलौं,

जभत सब भितेर दिसाण में हड़ी हुनी ।

बिजुली बल्ब कै दिन धोपरि कैं जलों,

जभत सब भ्यार काम में खडी रुनी ।

सिरफ, बिजुलि-पाणी' बिल-

हर म्हैण हमर चाख'म खेड़ी रुनी ||

मैंल ग्राम-पंचैत में प्रस्ताव धरौ-

"बिजली' होल्डरों पारि-

पाणी' टोंटि कसबै दियो ।

और, पाणी' नलाँ पारि

बिजुली बल्ब लगवे दियो !

किलें कि तस करण'ल लें

जनता जनार्दन' सेवा में

फरक के खास नि पड़ौ ।

और, है सकुं कि तस करणै'ल

द्वीयै डिपार्टमेण्टों कि साख बड़ौ ।।"

बेली डुङरी पंच बतुणौ छी, बल-

म्यर वालऽ प्रस्ताव, पास हैरौ ॥

हमरि गौं-गाड़ौ'.........

हिन्दी अनुवाद

हमारे गांव इलाके का भले मनुषो

अच्छा विकास हो रखा है

पानी सभापति जी के चेहरे पर ही दिख रहा है

सारा गांव तो प्यासा है

सबसे पहले यहां एक स्कूल खुला मैंने सोचा

शायद मेरे छोरे को भी अब ज्ञान मिलेगा

पर एक दिन दिलीपदा ने बताया इस स्कूल के मास्टरों का

शनिवार हाफ(आधा) रहता है (रविवार की छुट्टी हुई)

सोमवार साफ रहता है

और

धर्मानन्द हेड साहब को तो

हफ्ते में दो एक दिन

और भी माफ रहता है।।

सुनने में आ रखा है

इस साल

हमारे जिले का सर्वोत्तम अनुशासन का पुरस्कार

हमारे स्कूल के पास

आ रखा है

हमारे ग्रामीण क्षेत्र का अच्छा विकास हो रखा है

....

जो थी सभापति जी का

पुराना गौशाला

उसमें आजकल खुल रखा है महाराज सरकारी अस्पताल

ना डॉक्टर का कंकाल

न कम्पोटरों का जंजाल

चार घड़ी नरराम वार्ड बॉय

खोल देता है दरवाजे कभी सुबह

कभी शाम

अब चाहे

सर में हो रहा हो भयंकर दर्द

या पेट में उल्टी हो रखी हो नाल या साथ ही चल रहे हो उल्टी और दस्त या

ले जाने के लिए आ चुका हो काल

नरराम के हाथों से

चार सफेद गोलियों का आ जाता है काल

छोटू जमादार बता देता है महाराज दवा को गर्म चाय के साथ खाना

झुपुलि चाची कुरुली दीदी से कह रही थी

नरनाम और छोटू ने जो

डॉक्टरी का अच्छा अभ्यास पा रखा है

हमारे गांव गधेरे का अच्छा विकास हो रखा है......

फिर बनी हमारे गांव तलक् सड़क

मोटर पहुंचने से पहले

गांव में पहुंच गई भड़क

पीने लग गए बच्चे-बूढ़े हड़क-हड़क ।

हम दो नहीं पीने वालों ने

एक बार विरोध भी किया

तब

चार पीने वालों ने छोड़ी नड़क

आठ पीने वालों ने छोड़ी कड़क

और बाकी पीने वाले बाहें ऊपर करके

खड़े हो गए चडक -चडक

हम दोनों के कान

खटखटाए गए खड़क खड़क

हमने माफी मांगकर कहा

हो रखा है देवताओं हम दोनों से

कोई कुसूर खास हो रखा है

हमारे गांव गधेरे का अच्छा विकास हो रखा है.......

और महाराज अब

छ: महीने पहले हमारे गांव में

बिजली पानी भी आ गए

साथ ही एक ही रास्ते

बिजली वालों ने

लकड़ी के पोल खड़े कर रखे हैं

पानी वालों ने

लोहे के नल खड़े कर रखे हैं ।

बरसों कालविष्ट जैसी जागर लगाकर

ये दोनों देवता

गांव क्षेत्र में गाढ़ रखे हैं

और

यह दोनों देवता

अमावस्या और प्रतिपदा के दिन गांव में पैर रखते हैं

कभी रामदत्त कभी भास्कर का

पंचांग को देखकर उतरते हैं

पानी के नल किसी दिन आधी रात में चलता हैं

जब सब भीतर बिस्तर में सोए होते हैं

बिजली के बल्ब किसी दिन दोपहर में जलता हैं

जब सब काम में बाहर खड़े होते हैं

सिर्फ बिजली पानी के बिल

हर महीने हमारे बैठक में पड़े रहते हैं

मैंने ग्राम पंचायत में प्रस्ताव रखा बिजली के होल्डरों पर

पानी की टोटी कसवा दो

और पानी की नलों पर बिजली के बल्ब लगा दो

क्योंकि ऐसा करने से

जनता जनार्दन की सेवा में कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा

और हो सकता है कि ऐसा करने से

दोनों विभागों की साख बड़े

कल डूंगरी पंच बता रहा था

सुनने में आया है कि मेरा वाला प्रस्ताव पास हो रखा है

हमारे ग्रामीण क्षेत्र का अच्छा विकास हो रखा है।

बौयाणि गध्यर य

सोरि-सोरि ल्यत -कादौ, कोरि-कोरि व्वड़ भिड़,
टोड़ि - टोड़ि नाज - पात, बौयाणि गध्यर य ।
उखाइ बै खुम - खुन, निखाइ बै इन - स्युन,
बुकाइ बै डइ - ढुङ, बौयाणि गध्यर य ।
होइ जाँछौ अतर य, 'मनखा' छ खतर य,
छतर बतर लगाँ, बौयाणि गध्यर य ।
खाड़ जसि खनि- खनि, धाड़ जसि मारि - मारि,
मे कुड़ी का काख बगूँ, बौयाणि गध्यर य ।।१।।
सारै साल सितिया रौं, लधरिया - हड़िया रौं
क्वे चौमास चितै जाँछौ, बौयाणि गध्यर य ।
पसरि पसरि बेर, लदगुया लगै बेर
यां बै- वाँ बै, बटी उंछौ, बौयाणि गध्यर य ।
चुपड़ल कदू मेटी, रौलि अ छिरौलि भेटी,
बार ठौरों पाणि 'मन्खा', बौयाणि गध्यर य ।
बमकनै सारि सारि, धमकनै हाङ - गाड़,
भमकनै अई जाँछौ, बौयणि गध्यर य ।। २ ।।

अबटाँ अबटाँ जाँछौ, निडर अढिटाँ जाँछौ,
फाव जसि मारनै कि, उछाव जसि मारनै,
ट्यड़ाँ जाँछौ, सिदाँ जाँछौ, बौयाणि गध्यर य ।
धुरकनै बाट लागौ, बौयाणि गध्यर य ।
धुधाट - फुफाट करी, सुसाट - गुगाट करी,
कानों कणि कल्यै खाँछौ, बौयाणि गध्यर य ।
'मन्खा' जसै ट्यड़ छ य, निखद - किकड़ छ य
फिरौट र घ्यर - फ्यर, बौयाणि गध्यर य ।।३।।
अल्बलुवा भौत छ य, बल्बलुवा भौत छ य,
खल्बलुवा भौत भागी, बौयाणि गध्यर य ।
डनकाई सनकाई,उचकाई मतकाई
खचोरी - खिर्दोयी जस, बौयाणि गध्यर य ।

इतरुवा छितरुवा 'मनखा' य अफरुवा,

अतरुवा बणि जाँछौ, बौयाणि गध्यर य ।

उण जाँछौ - कुण जाँछौ, जानै - जानै मुण जाँछौ,

उना - उना - उन्ना जाँछौ, बौयाणि गध्यर य ।।४।।

झाइनल झाड़नै ज, जिबड़ल चाटनै ज,

लसपट करि लिजाँ, बौयाणि गध्यर य ।

म्वय जस घोसि लिजाँ, खउ जस लिपि लिजाँ,

सिङाड़ ज पोछि लिजाँ, बौयाणि गध्यर य ।

मारखुलि बल्द जस, खादकुलि कुकुर ज,

ऐलाग जैलाग करूँ, बौयाणि गध्यर य ।

सिपुड़ि ज लागी नाग, अदघैल बणी बाग,

तड़बड़ - तड़फड़, बौयाणि गध्यर य ।।५।।

छोलिया ज नाचि - नाचि, धौंस्याल जा खेलि - खेलि,

भेटनै ज धेलि - धेलि, बौयाणि गध्यर य ।

लफाउनै जाव जसो, लगुनै फट्याव जसो,

मछई तिताव जसो, बौयाणि गध्यर य ।

आँतरीनै - घरीनै ज, आल-चाल दिखुनै ज,

जाँत जसि बाट लागीं, बौयाणि गध्यर य ।

कानों कें कल्ताइ यूंछौ, खोरि कें झन्ताइ युंछौ,

नाड़ि कें सुन्ताइ युंछौ, बौयाणि गध्यर य ।। ६ ।।

लैटू जस डौरी बेर, लैरू जस फौरी बेर,

च घड़िक खेल दिखाँ, बौयाणि गध्यर य ।

बाखई अ खोई गजै, चुहोई अ होई मचै,

च घड़ी में थमी जाँछौं, बौयाणि गध्यर य ।

गौं - गाड़ के हलकाई, कोठि- हिय चलकाई

च घड़ी में घरी जाँछौं, बौयाणि गध्यर य ।

ढण्ड र पखण्ड करी, नटार-नखर करी,

रहप में अमै जाँछौ, बौयाणि गध्यर य ।।७।।

हिन्दी अनुवाद

कई और गाद को साफ कर करके

खेतों की सीमाओं को काट काटकर

अनाज पात को तोड़ तोड़कर

खूंटों - ठूंठों को उखड़ता

कोर कोनों (खेतों की सीमाओं) को उधेड़ता
कंकण पत्थरों को चबाकर
यह बावला गधेरा
ना तैरने योग्य
मनुष्य के लिए खतरा है यह
तोड़ फोड़ में लगा
यह बावला गधेरा।
खड्ड जैसा खोद-खोद कर
झपट्टा सा मार कर
मेरे घर के पास बहता
यह बावला गधेरा ।।१।।

सारे साल सोया , लेटा
गिरे तने सा पड़ा
किसी बरसात में जग जाता
यह यह बावला गधेरा
लेट-लेट कर, पेट के बल रेंगता
यहां-वहां से लौट आता है, यह बावला गधेरा।
छिछले गड्ढों,लघु नालों से भेंट करता
बारह स्रोतों का पानी
मनुष्यों यह बावला गधेरा
स्यारियों में उछल उछलकर
खेतों घाटियों में धमकता
छलछलाता हुआ आ जाता है
यह बावला गधेरा ।
बे रास्ते जाता है रास्ते जाता है
निडर ढीढ होकर जाता है
टेढ़े -सीधे जाता है
यह बावला गधेरा
कभी कूद मारता कभी उछाल मारता
धरती को कंपाते बेतहाशा दौड़ता

यह बावला गधेरा।
गर्जन तर्जन करता
कलकल ध्वनि करता
कानों को कोर खाता
यह बावला गधेरा
मनुष्य जैसा टेढ़ा

निकृष्ट सठियाया हुआ है
फिरकी सा घेरे फेरे लेता यह बावला गधेरा ।।३।।
बहुत हड़बड़ाहट करता है
बहुत धमा चौकड़ी करता है
बहुत शोर करता है
यह बावला गधेरा
उचकाया भड़काया हुआ
छेड़ा हुआ झिझोड़ा हुआ
यह बावला गधेरा
इतराहट छितराहट दिखाने वाला
अपने मन की करने वाला
न तैरने जा सकने योग्य हो जाता है
यह बावला गधेरा

ओने कोने जाता है जाते जाते हुए नीचे जाता है
नीचे नीचे नीचे जाता है यह बावला गधेरा ।।४।।
झाड़ू से झाड़ता सा
जीभ से चाटता सा
सफाचट कर ले जाता
यह बावला गधेरा,
पाटा जैसा लगा ले जाता
खलिहान सा लीपता है
नाक जैसी पोछ ले जाता है
यह बावला गधेरा,
मरखने बैल सा
कटखने कुत्ते सा
डराता मुंह मारता है
यह बावला गधेरा,
लाल चींटी के डंक सा
नाग के दंश सा
घायल बाघ सा दहाड़ता
तड़फड़ता फड़फड़ाता
यह बावला गधेरा ।।५।।

छोलिया सा नाच नाचकर
चपलता से खेलता
देहरी-देहरी को भेंटता
यह बाबला गधेरा

जाल सा फेंकता

जाल सा लगाता

उतापी मछुवे सा

यह बावला गधेरा

बढ़ता घटता रुकता चालें(खेल)दिखाता

देव यात्रियों सा राह चलता

यह बाबला गधेरा

कानों को फोड़ खाता

सर को कपाल को झनझनाता नाड़ियों को सुनन करता

यह बावला गधेरा ।।६।।

छोटी बछिया सी

कुलाचें उछल कूद कर के

गांव मोहल्लों को गुंजाता

हां हूं करता

जरा देर में थम जाता

यह बावला गधेरा

गांव इलाके में घूम के

दिल-दिमाग को हिला

जरा देर में शांत हो जाता

यह बावला गधेरा

विद्रोह और छलावा करता नौटंकी नखरे करता

रहप में विलीन हो जाता

यह बावला गधेरा।।७।।

***

भूपेन्द्र बिष्ट की कविताओं का कुमाउनी अनुवाद

अनुवाद - ललित मोहन

प्रेम का लिखा जाना सबसे कठिन

हर आदमी के भीतर एक उपन्यास होता है

जिसे लिखते हैं दूसरे लोग और इतने बेहतर तरीके से

कि जिनके भीतर की कहानी है यह

वह भी मुग्ध हो जाते हैं उसे पढ़ने पर

जो पढ़ नहीं सकता

उसे बता दो कि यह किताब तुम्हारे बारे में है

तो वह भी उसका आवरण देख

एकबारगी होता है मुदित

उल्लसित भी सचमुच

अचानक पूछता है कि मेरा नाम क्या लिखा है इसमें

और क्या क्या दर्ज है मेरे बाबत यहां

उसे बताया जाता है इस क़िताब में सब है भईया

वह जो छिपाते हो आप अपनी मेहरारू से

वह भी जो आप खुद से भी नहीं कहते

पर जान जाता है उसे हर जना

वह उदास हो जाता है

कहता है बाबू जी कुछ अच्छा लिखे होते बढ़ियां सा

मसलन, सन भिगोए थे जो तीन रात पहले पोखर में

सही वक्त पर निकाले गए पानी से

या दादा अब भी खुद उठ बैठ लेते हैं और कमली

फिर से हंसने लगी डेढ़ साल बाद

किताब की चर्चा होती है अदबी दियारे में

साथ में इस गरीब की उदासी और उन पढ़े-लिखों की खुशी

लिखने वाले के लिए एक दूसरे ही मायने में

बोधगम्य होती जाती है

लेखक शुक्र मनाता है भगवान का

अच्छा है जस का तस लिखा नहीं जा सकता

किसी का प्रेम

बस वही उसे निभाता है हर हाल

और छिपाता भी है बड़ी सफाई से

जो करता है प्रेम।

कुमाउनी अनुवाद

हरेक आदिमँक भीतेर एक उपन्यास हुँ

जैकें लेखनी दुसर लोग

और एतु बड़िया भाँतिल

कि जैक भीतेरेकि कहाणि ह्वीं यौ

उलै मुग्ध है जाँ

उकै पढ़ि बेर

जो पढ़ि नि सकन

उकें बतै दि जाय कि यौ किताब

तुमार बार में छ

तो उलै उ किताबौक रूप देखि बेर

एकबारकी है जाँ खुशि

हर्ष में भरि जाँ सच्ची

अचानक पुछँ म्यौर नाम क्ये लेखि रौ यमैं

और क्ये क्ये दर्ज करि थौ म्यौर बार में याँ

उकें बतै दि जाँ कि य किताबम सब छ भय्या

उ जो छिपुँ छा तुम अपणि सैणि(पत्नी) हुँ

उलै जो तुम अपुहुँ लै नि कना (कहना)

पर जाणि जाँ उकै हरेक जन

उ उदास है जाँ

कुँछ बाबूजील थ्वाड़ भौल लेखि हुँछि, बढ़िया सि

मान ल्यौ, साण(जंगली घास) भीजै थौ छि जो तीन रात पैलि खाव में

सही टैम पर निकालिगो पाँणिम बै

या बुब(दादा) आइ लै खुद उठि बैठि लिनि

और

कमली फिर हँसण लैग्ये डेढ़ साल बाद

किताबेकि चर्चा ह्वीं अदबी दियारे में

साथै हि यौ गरीबेकि उदासी और उँ पढ़ी लेखी लोगुँकि खुशी

लेखण वलां लीजि एक दूसर अर्थ मैंजी

सहज है जीं

लेखक एहसान मनुँ भगवानौंक

ठिक छ, जस क तौस लेखि नि जै सकिन

कैकै प्रेम

बस उइ उकै निभूँ हर साल

और छिपुँ लै

भौत बारिक ढंगल

जो करुँ प्रेम ।

मां का नाम

बचपन में छिपा दी गई

उसकी तख्ती और दवात

और इस तरह दूर रक्खा गया

उसे वर्णमाला सीखने से

बाद में लकड़ी और घास के बड़े बड़े गट्ठर

रख दिए गए सिर पर

ताकि स्वप्न-वय की कोई उमंग उठ न सके

यह मां थी मेरी

पहले पैरा वाली बात बताई थी

उसने मुझे एक बार बातों बातों में

दूसरे पैरा वाली बात
मैंने ख़ुद महसूस की

उसके चले जाने के बाद

मैं जीवन भर उसका नाम न जान सका

एक दिन पिता के सरकारी दस्तावेजों में

"विशना" नाम दिखा मुझे

संशय है अब भी

कि वह मां के नाम वाला 'स'

तालव्य ही ठीक था

या कि होना चाहिए था मूर्धन्य वहां।

कुमाउनी अनुवाद

नन् छिना में हि लुकै दी गेइ

ऊकि तख्ती और दवात

और यस भाँती अलग रखि गोइ

उकैं वर्णमाल् सीखण बटी

बादम्

लकाड़ और घाक ठुल ठुल गढ़ौव

धर दी गोइ उक ख्वर में

ताकि सपनैकि कोइ उम्मीदै न उठ सकै

यौ छि मेरि इज

पैल पैरा वालि बात बताइ छि

ऊल मैकैं

एक दिन बातुँ बातुँ में

दुसौर पैरा वालि बात

मैल खुद महसूस करि

उक दुँणि बै जाण् बाद

मैं उमर भरि ऊक नाम नि जाणि सकि

एक दिन बाबूक सरकारि कागजों में

विशना नाम देखी मैकैं

शक छ आइ लै

कि इजाक नाम वाल स

तालव्य ही छ या कि हुण चैं दंत्य

या फिर कहिं यौस त नि

कि उ हुनौल वाँ मूर्धन्य ।

एलबम

पहाड़ पर आते हैं

बाहर के लोग गर्मियों में

उनके बच्चे घोड़ा करते हैं किराये का

और चल पड़ते हैं जंगली पगडंडियों पर

पहाड़ पर इन दिनों कुछ रेस्त्रां खुलते हैं

जहां उनकी लड़कियां आइसक्रीम खाती हैं

पहाड़ के पेड़

बाहर के लोगों के लिए

ठंडी हवा करते हैं

नीला आकाश यहां का खूबसूरती के लिए

जाने कहां से एकाध बादल भी ले आता है सफेद

बाहर के लोग

लौटते हैं जब मैदानों की तरफ़

सारा सैर-सपाटा बंद होता है उनके कैमरों में

इसके बाद पहाड़

पहाड़ के लोगों के लिए बड़ा सख़्त हो जाता है

बारिश कराता है अथाह

रास्ते बंद हो जाते हैं यहां-वहां जाने के

सर्दी कराता है इतनी

कि लकड़ियां बीनना तक मुश्किल

पर इसका कोई दस्तावेज़ नहीं होता

पहाड़ के लोगों के पास

बाहर के लोगों को दिखाने के लिये

जैसी उनके पास एक एलबम होती है

सबको दिखाने के लिये।

कुमाउनी अनुवाद

पहाड़ों में उनी

भ्याराक् लोग गरमी में

उनार नान्

घ्वाड़ करनी किराय में

और चल पड़नी जंगलाक बाटुँ में

पहाड़ों में यौ दिनों कुछ होटल खुलनी

जाँ उनार चेली आइसक्रीम खनी

पहाड़ुँक पेड़/ भ्याराक् लोगों लीजी

ठंडी हाव करनी

निल आकाश याँकि खूबसूरति लीजी

जाण काँ बै एकाद बादल लै लियूँ/ सुकिल(सफेद)

भ्याराक् लोग/ लौटनि जब मैदानूँ ओर

सारै सैर-सपाट् कैद है जाँ उनार कैमरूँ में

ए बाद पहाड़

पहाड़ाक् लोगुँक लीजी बड़ सक्त है जाँ

बारिश कर दीं अथाह

बाट् बंद है जानी याँ- वाँ जणाक्

जााड़ कर दीं एतुक/ कि लकाड़ बीनण लै मुश्किल

पर यैक कोइ दस्तावेज नी हुन

पहाड़ाक् लोगुँक पास

भ्याराक् लोगुँकै देखुणा लीजी

जस उनार पास एक एलबम ह्वीं

सबुँकैं देखुणा लीजी ।

पत्थर की दहाड़

एक दिन ऐसा होगा/ अब

कि मनुष्य चीखना-चिल्लाना छोड़ देगा

तब्दील हो जायेगा

एकदम खामोश और ठोस पत्थर में

जम जाएगा नदी के बीचों बीच वह

धारा को दो भागों में बांटेगा फिर

छोटी मछलियां छिपा करेंगी उसकी जड़ में

बड़ी मछलियों से टकरायेगा वह

पानी के साथ बहकर आने वाली

घास और पत्तियां

पत्थर के साथ लगकर

झाग बनायेंगी कुछ देर

तब आगे बढ़ेंगी

दिन में यूं लगेगा पत्थर

जैसे कोई अपना बदन छुपाता हो वहां

कोई अपना सर उठाता हो जैसे

रात को यूं लगेगा पत्थर

एक दिन नदी भी सूख जाएगी

वह पत्थर दहाड़ेगा उस दिन

और उसकी दहाड़ सुनेंगे

धूप में फैले/ आसपास के दूसरे पत्थर

कुमाउनी अनुवाद

एक दिन यौस आल

अब

कि मन्खि चीखण-चिल्लाण छोड़ द्यौल्

बदल जौल्

एकदम खामोश और सख्त ढुङ में

जम जौल् गध्याराक् बीचों बीच उ

धार कैं द्वी भागों में बाँटौल फिर

नान माँछ छिप रौल ऊक जड़ में

ठुल माँछाँहु टकराल उ

पाणी दगड़ बग बेर ऊणि वाल

घा और पात

ढुङक् दगड़ि लग बेर

गाज(झाग) बनाल थ्वाड़ देर

तब अघिल हुँ जाल्

दिनम यौस लागौल ढुङ

जस कोइ अपण बदन लुकुँ वाँ

कोइ अपण ख्वर उठूँ जस

रात कैं यौस लागौल ढुङ

एक दिन गद्यौर् लै सुख जौल

उ ढुङ दहाड़ौल उ दिन

ऊकि दहाड़ सुणाल्

घाम में फैली

अगल-बगलाक् दुसार् ढुङ ।

***

भैंस का कट्या – विद्यासागर नौटियाल

अनुवाद – हिमांशु विश्वकर्मा

पौ फूटिन लागि रै छि। लम्बी-काली रातक आन्यर गर्भ भटि एक हसीन-स्वाणी रात ब्यागे छि। सुरजाक घावाड् काल है पछिल छोड़ भैर अपुण पूरी रफ़्तार में दौड़ान लागि रिछि। घड़ी-घड़ी रंग बदलनी वाल आगासाक, एक कून में अचानक लाल सुरजाक बढ़िया, चकमक किरण, ओंस में नै भैर, अंगडाई लिनलागरीई धरती तरफ झाँकन भैगे। घराक छाज में बैठीभैर अपुण हुक्का गुडगुडूण में मस्त हौंस्यारू है तलि पटांगण भटि, अपुण स्याणी कि धात सुणाई दे – भैंस ब्यागी हो। माट-ढुंगनले बणी उ कच्च मकान में गोठ सब्बन है तल्ली छि और मलि क कम्मरनक इस्तमाल लोगों अपुण रहण-सहण करनदे करनि भ्या। गढ़वालाक किसान पैल्ली भटि अपुण रिवाज ले इस्सी के रौण आई रयान। एक्को घर में अलग-अलग हिस्सन में कति आदिम रौणान, कति उनार गोरु-भैंस । यस रहण-सहण वेलि कुदरती इनर पूर्र जीवन एक-दुहारा करीब लाड़ ले हुनि भ्यो। अपुण स्याणी धात कि आवाज कानन में पड़ण सैआत हौंस्यारू क मन ख़ुशी ले गद्गदी ग्यो। चिलम एक तर्फ राक्खी भें फट्ट थड़ी ग्यो और खुशिक यस मौक में अन्कस्सो झ करन-करनें खुटकड़ी भें तलि कै ग्यो।

भैंस है थोड़ दूर उईक समणी लै थड़ी रई उईकि स्याणी है, धेकाई द्यो कि हौंस्यारू गोठाक द्वार ला थढ़ी भें उईलि भैंसेहै लाड करनौ। यस अनोख, मयाल भैंस ले जुआब में 'भ्आं-भ्आं' आवाज़ करि।

आठ सालक गबलू एलतक बिस्तर में पड़ी छि। उईकि निन खुलि त गिछि, तब ले पड़ी रिछी। उठन सैआत उहै गोरु दे दिनी भ्या। जैहै उ चारुणदे ले जानि भ्यो। कधली गोरु है दिनमें ब्यॉंल भें जबत, उईकि ईज- बाज्यू उहै और काम दी दिनी भ्या। जैह्के कै डोमहै बुला ल्यून, पण्डिज्यू घर जैअ भैर पूर्णमासी दिनक पत्तो लागून। केका घर वालनाक पैछ करि पिस्यु वापस पुज्यून या कैक पड़ोस वालनाक भंड-कुंड लौटा ल्यून। गबलू है पत्तो भ्यो उठन सैआत उहै रात तकक काम में व्यस्त रूण पढोल, तभै आरामलि देर लगा भें उठनी भ्यो।

ईजाकि धात उईकि कानन में लै पड़ी। भैंसक बाछ ह्यूनी वाल छ, गबलू हमेशा बाज्यू धें पूछनी भ्यो – कब तलक होल येक बाछ? जवाब में हौंस्यारू बतौनी भ्यो- है जाल च्याला, तभै तू लेह देखि लिया। है ही ज्याल च्याला! कदुक मैंणों भटि बाप और च्याल इंतज़ार में छि और आजक दिन भैंसेहै बाछ ह्वेगी।

बिस्तर में भै उठभैर गबलू नंगण है भ्यार कै दौड़ी। कपाड़ पह्नली मेरा च्याला! मतारि कि आवाज सुडैई दे - ठंड लागि जाल।

गबलू दौड़िभेर एक कुरत कानि मै राखि और गोठाक द्वार ला आ भैर थड़ी ग्यो।

हौंस्यारू भतर जान्भैग्यो। गबलू लैह उईक पछिल-पछिल ग्यो - जाग च्याला जाग ! भैंस मारल हा ऐल! बाज्यूलै खुशिल उछलि भैर कौ। हौंस्यारू अन्यार गोठक भतर पूज्अ। एक तरफ गोरु बाधि छि, दुसार तरफ भैंस. जाभैर उईलि भैंसहै म्ह्स्यार।

द्वार लै थड़ी रई हौंस्यारू स्याणील पुछि – कि भ्यो?

हौंस्यारू ले निराश ह्वेभेर गोठ भतर भटि जवाब दे- 'काट्ट'।

-"तला थोरेटू ही ह्वेई"(छि, काट्ट ह्वेगी) - हौंस्यारू कि स्याणीले अफ़सोस जता भैर कौ।

भैंस क काट्ट को जन्म इन किसानन भल ना लागुन। एक तो व बेकार हूँ और फिर उहै बचून ले कठिन। पुराण जमानाक लोग कुछि - भैंस क काट्ट कुनि भ्यो – "कित खौं घटकै, कित मरौं पटकैं।" (गढ़वाली कहावत) या तै जी भैरभे दूध पियूल या तुरंत मरी ज्यूल। हुनि ले इस्सो भ्यो भैसक बाछि (थोरि) जदुक दूध पीनी भ्ये, उविक दुगुण भैंस क काट्ट (थोर) पी जनि भ्यो। और सच में कम दूध

दिला जबत उ हगिले मरि जां। और लोग उहै बचौण ले नि चानी भ्या। अपुन पालि नना नन्तिनिन को जवाण हुनसैआत काटन् ध्यकन चां? लगभग सब्बे भैंस क काट्ट जैहै गढ़वाली भाषा मै ‘बेल्ला’ कुनि भ्या, ठुल हुनसैआत देवी-देव्ताना थान में बलि दी भैर मार दिनी भ्या. देव्ताना कि पुज हुनि भ्ये और इनरिकी हत्या। हौंस्यारू निराश मनले भ्यार कै आ। तभै गबलू बहुत ख़ुशी हैबेर कौ- “आहा! भुला ह्वैगे” (आहा! नान भै ह्वेगी)। - आहा भुला ह्वैगे. निराश, रिसाई हौंस्यारू है गबलू कि तुतलि अवाजकि माया लै घेरि ले। उईलि उईक ख्वार में हाथ राखि भेर कौ – हाँ च्याला, तेरो नान भुली (भै) हैरि।

गबलू हौंस्यारू क इकलौत च्यल छि। आठ बरस पैली गबलू भ्यो। तब भटि उईक द्वी संतान आजि भ्यान- एक च्योलो, एक च्यलि। द्वीन में भें क्वे ले नि बच सकीं। च्येला है भौत ज़र आई छि, च्यलि क पेट-पीड़ हुई छि। ननु-नान च्यल गबलू हमेशा कैधें भुला या भुली कुनधें तड़पिनी भ्यो। उ सोचनी भ्यो भैंसक बाछ होल जबत उहै ‘भुला’ कौल, बाछी होलि जबत उधें ‘भुली’ कौल। गबलू एक बार फिर खुशी है गीछि और जोरेले चिल्लान भैर - आहा भै है ग्यो. आहा भै है ग्यो। उधलि उईलि बाज्यूधें पूछो - यीक नाम कि राखि-राखो, बाज्यू?

के ना चेला - हौंस्यारू ले निराश है भैर कौ पैली साल गबलू क जो भै मर रिछि, उईक नाम ‘गज्जू’ छि. गबलू ले सोचि - ‘उ म्यर नान भै छि। उईक नाम ‘गज्जू’ छि, यौ लै म्यरो नान भै छु। ये नाम लै ‘गज्जू’ राखि दिनों।

- बाज्यू, उईल कौ।

- होई च्यला !

- येक नाम ‘गज्जू’ राखि द्यो नैं !

हौंस्यारू कें अपुण नान गज्जू कि याद आग्ये। उकें ज़र आई रछि। भौतै तेज ज़र। साल भर हेग्यो उकें मरि।

- राखि द्यो ना बाज्यू ! गबलू ले आजि कौ।

- कैह ले च्यला, गज्जू ही कैह ले, गज्जू तो कॉंप ग्यो कम्बकत! यो कैह भैर हौंस्यारू छाज मै जन भैग्यो।

गबलू गोठाक द्वार लै है थड़ी रिछी। भ्यारै भटि उ एक हाथ अघिल के बड़ै भैर अरामलि भतर कै कुन- कुनै ग्यो – आ, आ, भुला गज्जू आ, आ गज्जू आ ! उधलि उईकि ईजाले आभैर भैंस है हाथ लगुन शुरू करौ। उईक बाज्यू भैंसहै म्स्यारन् लाग ग्यो। गबलू भैंसक डरिले द्वार लैया थाड़ हैभैर भैंस क बाछ है लाड करन लाग रौ छि। तभै हौंस्यारू ले गोरु कें खोल भै भ्यार भज्या। गोरु है लेजा भैर गबलू रोजकि भांति बाअण नैह ग्यो। उ दिन मै खान-खानेकि

आ, पजै आजि बाअण है नैग्यो। फिर ब्याल के गबलू घर आ ग्यो। गोरु है बाँधी भैर छाज मै बैठी ही रिछी कि ईजाल वहै धाल लगै – गबलू यौं औधै मी भैंसहै हाथ लगुन्यु तू यौ बाछ है थामलै। फट्ट गबलू गोठाक तरफ दौड़ी, जा भैर बाछाक द्वौंल थामी भैर उईलि गज्जू है भैंसक थोण लैभैर अलग करौ। ईजालि हाथ लागुण शुरू करौ। जधलि ईजालि हाथ लागून शुरू करौ तभै गज्जू है फिर भैसक थोंण चुस्नक मौक मिली।

तब गबलू जै भैर चुल पण बैठ ग्यो। खान खै भैर गबलू लाफलि ग्यो। और दिनों कि भैं वहै एकदम नीन नि ऐअ। उ सोचन लागि राछि कि उहै 'भै' हैरिछी। एक द्वि बार उईलि पड़न-पड़नै सोची कि गज्जू है च्या ल्यु। पर रात मै भूतक डरिल अन्यार मै उ यकलै न जै सकी।

ईजाल धात लगा - गबलू सुसु करि लै, नति रात में बिस्तर मै मुतलै। चल भ्यार औ। गबलू है मौक मिली ग्यो, दौड़ भैर भ्यार आ। ईजा दगड़ी पटांगण मै उतरी। सुसु करि भे उ गोठा तरफ गज्जू है चान जन भै ग्यो। पर द्वार ढ़की छि। बागक डरील द्वार आघिल बंद करि दिनी भ्या, नति बाघ रात मै कभै लै आभेर गोर- बाछन लै अटैक करि दिनी भ्यो। दौड़ी-दौड़ी ईजा ले उईक हाथ पकड़ी लै। हिट च्याला पड़न दें हिट, यौं-वौं कऔं जनहै तू! - ईजा ले लाडल कौ।

- ईजा जरा गज्जू है च्या लीणु, गबलू ले जवाब दे।

- नै च्याला भोल धै चान, एल उ पड़ी री होलू।

ईजाल गबलू है कुख्याली मै उठे भेर वहै लाड करी। गबलू ईजाक कुख्यालुण में चिपकी ग्यो। ईजाक़ गालोन लै हाथ डाली भेर उईलि कौ - ईजा भोल रात्ते जभ तू भैंस है हाथ लगाली तभै गज्जू है मि थामूल।

- त्वी पकड़िये म्यर च्यला। ईजा क प्यार उमड़ी आ।

गबलू फिर पड़ी ग्यो फिर उईक ईज-बाब लै पड़ी ग्या। लम्फू मै बुझूल ईजा कैबेर उईलि उठी भैर लम्फू मै फूंक मारी और आपुण जाग में जैबेर लफाली ग्यो।

- उहै आज नींन नि उनछी। गबलू ईजा ले हौंस्यारू है कौ।

- आज त उ भैंसक बाछक बार में ही सोचन लाग री। हौंस्यारू लै जवाब दे।

गबलू शरमाई ग्यो। उईलि आँख बंद करि भैर आपुण ईज-बाबू को देखुण चा कि उ पड़ी ग्यो, उस अन्यार में उई आँख खुलि छि या बंद उईक ईज-बाज्यू नि देखि सकछि।

गबलू गज्जू बारी में सोचन लागी रछि। तभै हौलि आवाज मै उईकि ईजा ले कौ – गबलू? गबलू गज्जू का सोच में ही छि। ईजाक आवाज क उत्तर दींन वहै बेकार लागो। यौ सोचकर कि उईक बाज्यू फिर वहै यौ न कैह दे कि उ गज्जू का बारे में सोच नौ। थ्वाड़ देर तक क्वे आवाज नि आय। गबलू मस्त है भैर आरामल सोचन में छि। भ्यार भै उनी वाली तेज पहाड़ी हाऊ द्वारक छेदन बाट बिलकी भै 'सी, सी, ई....स्यूंऊ' उहै सुणै दिनछी। अचानक उहै लागो कि उईकि ईज काँपन रै।

थ्वाड़ देर बाद गबलू क ईज-बाज्यू बल्कौंन मै लागि ग्या। ईजा ले कौ - यौ काट्ट है छा:

पीलै दयूल, बेकार कि करनछ इहै पालि भैर।

गबलू ले यौ बात सूण नैछि। बज्यूल कौ - अरे रहूण दिनु, आफी-अफ़ी मरि जाल। गज्जू है बचै भै राखन गबलू क ईज-बाबूक सामणी लै एक समस्सा छि। अभागी गज्जू नर जातिक छि जहै मारनेकि कोशिश, यअदै करन लागी रछि कि उ झीक्क दूध पियौल, हौंस्यारू और उईकि स्याणी आपुन हिसाब क बराबर घ्यू-दूध नि बणै सकाल।

ईजा ले फिर कौ – पत् नै हो, मरलो या नि मरल; पर जब तक जिन्द रौल तब तक सब दूध पी जाल।

- अरे ठुल हूँन दे, फिर कुछ डबलन में उठै ल्यूंन।

- हाय, हाय, वाँ बेचला यअहै ? मार नधैं ? हे राम ! यअहै निक त अल्ले मार द्यो। कि फैद आपुण हाथ- खुटि लै पालि-पोसी भैर मार नधैं दी द्यो ?

- ठीक ठाक डबल ल्ये त मिलाल।

- नि चाई तस डबल, जो आपुण हाथ-खुटि लै पालि बाछक् मौत कि गलेदारिक हो। और फिर दूध जै बचल जबत, उत्कक घ्यू लै बिक जाल।

गबलू क ईज-बाज्यू द्वी-दी गज्जू है मारण चाँछि। उईकि ईज गज्जू है अल्ले मारि भैर मुक्त हुन चाँछि और बाज्यू गज्जू है ठुल हुण सैआत दुहरा हाथ मर न है दी दिन चाँछि। दया तो द्वि नैका भीतर छि। ईज आपुण पालि बाछकि हत्या नि देख सक्छी और उईक बाज्यू आपुण बाछहै आपुण हाथल नि मार सकछि।

गबलू ई बात सुणी भैर सह नि सकि। उ इस्स माहौल में पलि छि। भले ही उ एल नान छि, पर उहै समाजक सब रीति रिवाजक बार मै पत्त चल नछी। उईलि आपुण आँखनैले भैंसक बाछ नैकि मौत देखि राखि छि और जवाण भैंस नैकि हत्या देखि राखि छि। उ समझ गैछि कि उईक ईज-बाज्यूनक बिच बतको उईक भैय्या गज्जू बारी में हुने छि।

- ईजा, गज्जू है ना मारि हाँ ! गबलू रुण भैग्यो।

- अरे तू पड़े नै एलन तक ? उईक बज्यू ले सवाल करि।

- कतुक बेवकूफ छ तू, तब भटी चुप चाप पड़ी रौ, इतुक नान छू फिर ले एब देख धै येक। ईजा ले शरमिलि आवाज मै आपुण बैग है कौ – कस कलजुग लागि रौ, देखु तौ तभ भटी कस चुप-चाप छि एलन तक।

गबलूक समज्झ में न आय कि उईक कि एब छी।

- पड़ ज अब ! उईक बाज्यू ले डाठी भैर कौ।

एक दिन जब ईज भैंसहै हाथ लगून दें आ और गबलू ले गज्जू है खोलौ, तो उ उईक थौण लै न लागि। गबलू ले उहै पकड़ भै कौ- आ भुला। आ ! दूध पी ले। पर गज्जू ले थोण भटी मुख हटे दे।

गबलू चिल्लोन भैग्यो – ईजा, त्वेल इहै मार नधैं छा: पिला है। ना च्याला, मि क्या धैं पिलून तहै छा: ? मि तहै मारण ज कि चाँ। नि मारून च्याला तहै।

गबलू ले सोची कि उ दिन वालि बात बतै द्यु, जब ईज उईक बाज्यू हैं छा: पिलौनी वालि बात कर नैछि। पर पत्त न क्यादें उ झैंपी ग्यो और कैह नि सकी। ईजा ले क्या धैं कैह होल – कस एबी छ यौ ? ईजाक आवाज मै अन्कस्सै बदलि क्या धैं आई हौल?

ईजैहै लै क्याप्प जस है ग्यो। गज्जू कि तबियत लै ख़राब है गिछि। गबलू लै गज्जूक कन्यून लै अंगाल हाली भैर रोंण भैग्यो। ईजैहै लै फिकर हैगे कि यौ तो आज दूधै न पिन्यौ। ईजा ले हौंस्यारू है धात लगै – काँ छिया, याँ आओ धै फटाफट!

हौंस्यारू ले आ भैर पुछौ – कि भ्यो ?

- पत्त ने कि भ्यो। बेल्ली तक तो दूध पिन रिछि।

- दूध देहै, कैहै आज ?

- गैणी मुई लै गैछि आज, उईकि नजर लागीं ह्वेलि।

येत् मुसीबत छ. दूध दिन त पाप छ। आपुण आप गोर-भैस पालि न सकन दुहरनक ग्वर-भैंसन लै टोना टोटका करनन। यस काम करि भैर अब अपुण धिनालि चटकारने ह्वेलि। हरामी सालि! येत मुश्किल छू यो गौ मै। भगवान यस दुष्टन मारन ले नै। व्हैं भल पुर्र गौ उजड़ जान जबत निक्कौ हून।

थोड़ा जागी भैर ईजा ले फिर कौ – पण्डित ज्यू पास जै भैर मंत्र लगै आओ।

एक रूपै खल्दियुं लै राखि भैर हौंस्यारू पण्डितक पास ग्यो। पण्डितल कुछ मुख-मुखै बड़-बड़ करि। जो हौंस्यारू क समझ में न आई। नहै उईलि इतुक ठुल जीवन मै आजतलक समझनाकि कोशिश करि। फिर घर आए भैर उईकि स्याणी ले गज्जू है भैंसक थोंण लै लगुनकि कतु प्रयास करौ। गज्जू ले पेंल्ली कि भैंति दूध नै पी। ईजा ले रीषलै कौ – भौत भयंकर नजर लगै राखि रांड ले। पण्डित ज्यू मंत्र लै हमर भैंस लै काम न करन्या। उ रात भैंसल दूध नदे.

गज्जूल गोरु दूध ले नै पी। बिन के खाय-पिए रो भैर पड़ी ग्यो। दुहार दिन गज्जूल दूध पिन शुरू कर दे। तब जैभेर हौंस्यारू और उईक स्याणिक जान मै जान ऐ। गब्लू लै ख़ुश है ग्यो। गज्जू है उ आपुण भाई समझनि भ्यो। उई सुख में सुखी और दुःख में दुखी लै हुनी भ्यो। द्वीनक रिश्त भौतै मजबूत छी।

एक्क भैंसक दूध पी भैर, द्वि या द्वि ठुल हूणै छि। द्वी या द्वी नानतिनै छि, गबलू आपुण जातिक पोथ छि और गज्जू आपुण जातिक पौथ।

इसिकै द्वी साल है ग्या। गज्जुल दूध पिन छोड़ हैछि। गज्जू अब जवान है गिछि। गबलू आपण बचपन में छि आजि लै। फिर ले द्वि न मै भौत प्यार छि। गज्जू आपुण लाड़ चुप रै भैर करछी ओर गबलू 'भुला' कैह भैर। द्वी साल तक लगातार दगाड़ रै भैर इनेरी मित्रता पुराणी और मजबूत ह्वेगे। उदिन जब धोपरी में गबलू खान-खानधै घर आ, तो घर में द्वी मेहमाण दिखाइ द्यान। उ द्विय हौंस्यारू है गज्जूक बार मै के बात कारनाछी। द्विनेली लाल टोपी पैरी राखिछी। गज्जू बारि मै बात हुनै करकै गबलू लै उनार बीच बैठ ग्यो। पुलिस वालनेली कौ – अरे तू देदी। डबल त्वै टिहरी पुजन सैआत पूज्याई जाल। महाराज त्वेधकी भौत खुश ह्वाल। म्यार महराजौ तुमि छिया। उ जाल जबत यो खान-पिण छौड़ दय्ल। उईलि गबलू तरफ इशार करि भै कौ।

पुलिस वालाले फिर कौ – तो महाराज हैं बोल दिनू कि तू 'बेल्ला' (भैंस का कट्या) दिन दे मना कर नहै?

मालिक यस क्याधैं करनाहा?

तो मिकि करू भई, यूतो दरबारक हुकुम छ।

हौंस्यारूल फिर पुछौ – तो कतुक डबल मिलाल सरकार ?

पुलिस वालनेलि आपस में आख लड़ाई। दुबले, पतल बदनक पुलिस वालेल, जैक भूर आँख छि, उईलि कौ – हां अब मोलतोल रैग्यो। मि कौ – हमि यहै लै जणू और कीमत दरबार है तय करल। महाराज जै खुश है जाल जबत तो क्या चीजक कमी छ? यसी कीमत मिलेलि कि तू ज़िन्दगी भर याद राखले। राजा लोगोनेकी बाते अलग हूँ।

हां, महराज।

दुहार पुलिस वालेल जैक मुख मौट छि और नाक तिक्खी न है बेर पिचकी रछि, उईलि आपुण बात राखि – तो हिटनु आब उहै लै लहै जनू।

गबलूल सवाल करि – बाज्यू का जनाहा, गज्जू है लै जनाहा कति?

हौंस्यारूल एक दीठ पछींल कै हालि। तभै पुलिस वालाले कौ – हिट भई।

गबलू दौड़ा-दौडी रुण-रूण अपनि मतारी पास ग्यो। हौंस्यारूल गज्जू है खोली दे।

पटांगण में पूजी भैर उईलि गज्जू पेट मस्यरौ। गज्जू ठुल है गिछि गबलू धैं । अब गबलू क हाथ उईक पीठ तक न पूजन। फिर लै गबलूले गज्जूक कनि तरुफ़ हाथ बढ़ा। गज्जूल आपुण कनि झुकै दये। गबलूल उईकि कानि मस्यारी। इह तुहै मार न दै लैजनान भुला ! यस कै भैर गबलू अलान भै ग्यो। पुलिस वाललै उदास है ग्या। एकल कौ – अरे नै, हमि तै यहै पालनैधै लैजानिया।

नै, तुमि झूठी बोल्नाहा।

सच्ची कुनिया।

थ्वाडी देर तलक वीक मन में आश जागी जबत उईल ख़ुशी हैबेर पुछौ – सच्ची ?

होई, सच्ची हमि यहै पालनैधै लैजानिया।

तो कब तक वापस ल्याला बाज्यू, इहै ? च्यालाले बड विश्वासले आपुण बाज्यू धैं सवाल करौ।

हौंस्यारू चुप रौ, गबलूले गज्जू है भेंट-घाट करि भैर विदा कर दे। ब्याल के गौंक लौडोनले गबलू है बता कि टिहरी शहर में दशैरा छ। महाराज ले वें आल। देवीक मंदिरक सामनी लै पुराण दरबार में गज्जुकी बलि दी जालि। अब गज्जू लौट भैर नि आ।

ब्याल कै घर आ भैर होस्यारू ले आपुण स्याणी है बता कि गज्जूकी कीमत सिर्फ तिस्से रूपै दे।

इहै ज्याद तो घ्यूक मिल जान, स्याणील कौ – अगर उ बखतै मार दिना। सोचो धैं।

अब गलती ह्वेगे। कि करि सकी अब? हौंस्यारू ले निराश है भैर जवाब दे।

उ रात गबलू सोचनै में रौ – ‘अब गज्जू है स्यूंण होंन्यौ होल। के देव्ता स्यूंण में उहै बताल कि भोल्खिंन उ मारि जाल’। गौक लौडनैले लै इसौ बता राखि छि। मंदिर में उईकि पुज होलि, फिर खिचड़ीक थाली उईक सामणी लै राखि जालि। जेस्सी के उ वहै खानदें मुण्डी तल्कें करलो, महाराज सैप अपुण तलवारले उईकि कैनि में हाडाल। फिर अपुण-अपुण औदा हिसाबले सब लोग अपुण-अपुण तलवार चलाल और इहकै गज्जू मारि जाल।

यो सुणी भैर गबलू स्यारी ग्यो – वी कैनि, जहै उ अंगाल हाल्छी, वि गज्जू जो उईक नान भाई छि! उरात घर मै कैले खाण न बनाइ।

पड़न है पैलि गबलू ले कै हि दे – ईजा, उ रात तू उहै छा; पिला भैर मारनेकि बात करनछी, त्वेली मार केनै ईजा? म्यार च्याला, त्वेमे जानवरों दै भौत दया छ। यौ कै भैर उईकि मातारि खुद ले अलन

भैगे। आपुण भतर लुकी दया क बारि में वहै पत्त न चल सकी।

गबलू क समझ में न आई कि गज्जू जानवर है छि या उईक नान भै।

****

मूल कहानी : भैंस का कट्या- विद्यासागर नौटियाल

ब्राह्मणी – शंभु राणा

अनुवाद – हिमांशु विश्वकर्मा

दुपहरीमै हाड़ गलूनी वालि घाम में उ हिटनमै छि। पाणी तीसलै गालण सुख गिछि। पसीणलै उ पुररी नै गिछि। पसीण पोछान-पोछान उईक धोतिक पाल लै भलिकै भिज गिछि। हिटनैकि चाल शरब्बीनैकि जैसि है गिछि। एक कदमलै टीपण पहाड़ छि, आंगैकि ताक़त जाणि कैले चुसि है...!

उ एक यजमान यां बरियाताक शकुनआंखर गानैदें गई छि और अब लड़ी-झगड़ी वापस उनै छि। रात्ते-रात्ते यजमानै दगाड़ झगड़ है गिछि। उईक कुनैछि कि डबलनाक दगाड़ एक ध्वेति लै दियो। एक्को त च्योल छ व्यिक, द्वि-चारजै कि छन। एक ध्वेतित् मेरि लै हुन्येभे। पर यजमनले न मानि। तभै यहैंलै रीस आ ग्ये। जदुक भेंट राखिछ उहै वें ख़िदबैर, दमकिनैं बाट लागि ग्ये।

दमकिबैर वां भटी आएत गिछि पर अब पछत लै पडनैछी। गौ आजिलै छै-सात किलोमीटर हैं कम नि छि। और भुखलै हाल-बेहाल हुन भैगिछि। रात्ते यजमानाक यां एक गिलास चहा खाई छि बस। अब उहै उबड़ खडंच बाटूँणी हिटन-हिटन द्वि-तीन घंट है

गिछि। भुखलै, घामलै और पाणी तीसलै मरनैकि जैसि हालत है गिछि। उहै अपुण आपलै रीस उन भ्येगे। उ सोचन लागि कि 'मि बेकार मै रीसाबैर आ ग्युं'। अपुण यजमान छि, कधली अघिल-पछिल और लैल्युछू। आज बरयात भ्ये., भ्वोल्धैं नामकरण ह्वल। य क्वे आखरी मौकजै कि छि। बामण कब नै चाईंन.....केका मरन मै, ज्वीण मै, हर बखत। क्याऽऽऽऽ...यार। मि लै खाली एक ध्वेतिक् चक्कर मै मरयू। जतुक दी राखि छि उलै ग्यो। यजमान छुटी, उ अलग और के पटी नै उईकी परेशानी अलग।

उ जैहकै-तैहकै हिटनमै छि। चाल अब बिना भींग चाईयां हुनै छि। कधली खुट यां, कधली खुट वाँ ठोकर खानमै छि। मुख बिनलै आसपास क्वे शेल वाल रुखलै नि ध्यकिनैछी। जैक शेल मै बसिबैर मणि दमै भरीन। थोडा उकालूंलै उ घुणन मै हाथ टेकी-टेकि उकलन लागी रिछी। उ बार-बार सोच पडनैछि कि अब तो मि समणीक सालूक शेल वाल जंगल मै पूजी ग्युं। उ बण आजिलै एक किलोमीटर हैं कम निछि। वाँ पूजिबैर लैफाली बैर दम भारिनैकी सोचलै उहै आगिल कै बडनैकी हिम्मत उनैछि, नतिएलनतक उ कधलि फरकि जनि। शेलाण त एक किलोमीटरमै ध्यकिनलागि-गछि पर पाणी? ... उ त घर गौं पूजहैं पैनी मिलन मुश्किल छि। उ बाटूंनैला द्वि गौ तो पड़छि पर वाँक पाणी बामणी कैहैहै पीछि.. हरिजनौक गौ छन ! छि.....!

उठन-पड़न आँखर उ उकाल चड़ी ग्ये, जांबै बण शुरू और उकाल खत्म छि। आगिलकैक बाट हिटन मै अब क्वे उकाल नहाति, पुररे उलारै-उलार छ। सालूक रुखनैकी शेल बामणीलै पड़न भैग्ये। शेललै पूजन सैअत जस्सीक् भिंग बैठ्नैकी बटी रिछी उधली उहै वें तलिकै भटि कै मनखनैकी बोलनैकी आवाज सुणाई दे। दीठ हाली जबत उईल ध्यक कि उत्तीलै तलिमै एक मौ बैठ बैर खान खनानमैंछी। घरवाली और उईकी आदमीक दिगाड़, उनर चार-पाँच सालक च्येलि अचारक लै आलूक परौठ खानैछी।

यो ध्येकिबैर बामणी खापुनलै पत्तो नै काँ भटि पाणि आ। बड़ी मुश्किललै उईली अपुण खापक पाणी रोकि और पुछि- "तमार पास पाणी छ पिनै दें?"

"होई-होई छनैह!" आदमिले हाथक परौठ आपुनी घरवालिहै थमैबैर, एक अन्कस्से पाणिक टोंटी वाल डाब और एक गिलास बामणीक समडीलै राखि दे। एक, द्वि, तीन ....पुररा पाँच गिलास पाणी उ पी ग्ये।

"कल्यो लै खाओ दीदी!" घरवालिल कौ।

"हाँ-हाँ महाराज खाओईऽऽ," आदमिले कौ और परौठनले भरीं डाब, अचारैकि शीशी बामणी तर्फ आगिलकै कर दे। बामणिलै झट्ट द्वि परौठ उठान और उयिमै आचार राखिबैर खान भ्येगे। यो उईक ज्योंनछना पैलीबार छिकि उयिलि कै बिन पछ्याणाक

आदमिनीक हाथक अन्न-जल ग्रहण करि। नति जब तलक उहै कैका सात पुश्तन् तककि जानकारी न हुनि, तब तक कैक मजाल भ्येकि, उ कै मनखान दगाड़ भलिकै बात-बातको कर दे। खान-पीण त भौत्ते दुरैकी बात भ्ये। योत पापी पेटकि भूखैकि वैली हुई करिश्मा छि, कि बामणिलै बिन के जाण-पछ्याणाक, काँक आदिमिनिक हाथक अन्न-जल खा हालि। पेटूनलै भुखलै अन्याड़है अलावा के दुहरी और चीज छैनै, फिर काँभटि उँछि इतुक लम्बी पूछताछिक तागत? ना क्वे धरम, ना क्वे जात- भुखैले उईक भतर बसी बामणहै मार हालि, जो इस टैअपाक पूछ जात-पात, धरम-काज, खान-पिनीक पचड़न मै रूछी और दुःख पानी भ्यो। देखन-देखनें बामणिलै परौठनाक पूर्रो डाब चट करदे। अब जाबैर उईकी प्राण थमी ग्या।

"काँक भिया तुमि लोग? को गौ तरफ जनहा?" बामणिलै पुछि।

"हामि दिल्लीभै उ निया अपुण गौ। वाँ भोत्ते गरमी हैरे अछ्यालन। तभै सोचि छुट्टी लिबैर थ्वाड दिन गौ तर्फ आऽ जनु। फिर नानतिन लैह हुनि वाल छ। यो काम अपुण घरैमे ठिकले हुनि भ्यो। दूर-परदेश मै खर्चे-खर्च..." "दीदी मैण त पुर है ग्यान.... बेल्लि भै कधली-कधलि पीढ़ लागिग्ये जसलै हुनौ। अल्ले थ्वाड देर पैंल्लि... अ ओ..ऊईज्या.."...घरवालिहै अचानक पिढ लागिग्ये और बामणी चाई-चाई रैगे। उहै विश्वासै नि भ्यो कि पीढ लागी ग्ये ह्वेलि।

घरवालाक लै हिय घबरै ग्यो। तब उ घरवालिक ख्वर कुखियालिमै राखि बैर मस्यारन लाग्यो। विकी च्येली लै अलन जौ भैग्ये।

घरवालाले बामणी तर्फ अन्कस्सी नजर हाली। 'अब? अब कि होल महाराज? य संकटक घड़ी मै तुमि हाथ लगाओ धैं,' उ यस कुन चानैछि। फिर बोलि पड़ी, "महाराज अब कि होल? गौ लै आजि डेढ़-द्वि किलोमीटर छ। यो बेचारी यो हाल मै हिटलै नि सगलि।

घाम लैह इदुग लागि रौ.... अब जी लैह होल इत्ती हुन छ। तमरो साथ छ आब।" घरवालले हाथ होड़ी हालि।

बामणिलै उ घरवालिक खुट सरऽकै बैर भलिकै सजलै राखन और घरवालाहै समझा कि "फिकर जन करो सबब ठाक कै ह्वल।" घरवालि पूर्र जोरलगाबैर अपुण पिढ़-चडकहै थामनमै छि।

'तुमार गौ कवाल छ?" बामणिलै पुछि।

"महाराज! रतखान क छन।" थ्वाड दूरलै बसि-बसि सिगरेट पीन-पीनै एक आदिमिले कौ।

“रतखान!” बामणिलै जणी भूत देखिहै उस्सिकै अज्गी ग्ये।

“हाँ महाराज! मेरु बाज्यू नौ केशव राम भ्यो ...." उईली कदुक बात बतै, लेकिन बामणिहै काँ भै सुणाई दिन लागी भ्यो। उईक बरमांडा भीतर शांख-घंटी झा बाजन लागिग्या। उहै लागनैछी कि क्वे उईक ख्वार मै घूण बरसोंनौ। उईक भतर भटि क्वे फटी बॉस झ चिल्लान मै छि, “त्वेल एक अछूत हाथक खान खै है। पाणी पी है। तू बामण छियी। कर हालि जनमभरक धरम- करमक चौपट।” अब खान-पिन मिलना बाद फिर जागी ग्यो उईक भतारक बामण। बामणी भतरै-भतर मन मै सोचन भैग्ये, अब कि होल? .... मिले अब जाड़ि है यो कु गौक छन. ...? केशव ल्वारक च्योल, पर यी एलनतक न जड़नकि मि को छियुं? को गौक छियुं? को जातिक छियुं...? मि कैहैक जै हाथ लगुँ यो नानतिनहै जन्मोंन मै? छि! छि! मनखनन पत्तो चलल जबत..अछूत..बामण....हाय! बात फ़ैल जालि। आदिमीलै कि कौल?...सासु? उ त देहली मै खुटलै नि राखन देलि। पूर्र मौक खान-पिनि बंद है जाल। पूर्र मौ पाणी तीसले मरि जाल। लेकिन खान त मिल इनोर खैहै? आँगाक भतर बसि बामणलै एक हल निकालि., “भाज यां भटे, इहें पैंल्ली कि इलोगन त्यार बारिमै पत्तो चलो। फिर काँ भै बात सिल्कलि!

बामणिलै घरवाली मुखक तर्फ चा। उईकी पिढ़ लगातार बुढ़नमें छि। तभै उईली कसबैर बामणिक हाथ थामी राख्छी। जड़ी उहै डर लागि रिछी कि बामणि भाजित नि जालि। उहै पीड़ान देखबैर बामणी एक बार सब भूल ग्ये। उईक बामणपन गायब जस हैग्यो। लेकिन उधली उ फिर बामण है ग्ये। भतराक बामण आजि जागि ग्यो। अपुण जुबानमै चिकनी-चुपड़ी मिठाई जस घोलि बैर उईक कौ- “थ्वाडा हाथ छाड़ो धैं, मिहै पिसाब लागि रै। उधली पाणी भौत पी हैछि नै तभै,” आदमिक घरवालिहैं हाथ छूडैबैर बामणी तलिकै झाड़क पछिलतरफ दस-बीस कदम बैठी-बैठ नैह ग्ये। उईली पलटी बैर चा जबत क्वे नि द्य्खीनिछी, न मलि भै ना तली भै। उनार बीच में लम्ब और झिक्के झाड़ छि, आगिलक बाटलै झाड़लै ढकी रैछी। बामणी एक बारआजि पछिलकै चा। ठिक्क चाना बाद बामनी भतर बसि बामणले जोरले धात ल्गौ, “भाऽऽज!” उछलिबैर गुरकी नै ज्यू, यो डरले बामणिलै अपुनी ध्वेतिपहै घुणऽन तक टिपँ और डरिबैर घोड़कि जस भाजि ग्ये।

******

मूल कहानी ब्राह्मणी - शंभु राणा

जांठि को घुङुर

दिवा भट्ट

जांठि को घुङुर,

कै थें कूनूं दुखि-सुखि, को दिलो हुंङुर।

(लाठी का घुंघरु (बजता है)

मैं किससे कहूं अपने सुख-दु:ख, कौन देगा हुंङुर)।

यह कुमाउनी लोकगीत न्योली का एक त्रिपदीय दोहा है। हिंदी दोहे की भांति कुमाउनी के लोक छंद दोहे; जिसे जोड़ या कभी न्योली भी कहा जाता है; के भी चार चरण होते हैं, किंतु इसके दो भेद हैं; तृपदीय और चतुष्पदीय। उपर्युक्त तृपदीय दोहे की प्रथम पंक्ति में एक चरण है तथा दूसरी में दो।

हुंङुर अर्थात् किसी की बात ध्यान से सुनते हुए हूंऽ-हूंऽ या हँ-ऽ हँ ऽ कहते हुए उसे अपनी सहानुभूतिपूर्ण उपस्थिति की प्रतीति कराना। यह भरोसा दिलाना कि मेरे कान खुले हैं तुम्हारी बात सुनने के लिए। कान ही नहीं; मेरी संपूर्ण चेतना सजग और उत्सुक है तुम्हारी बात सुनने-समझने के लिए। कहने वाले को सुनने वाले कान चाहिए। मात्र शब्दों और ध्वनियों को ग्रहण करने वाले कान नहीं; बल्कि शब्दों की ध्वनियों के भीतर की गहराई से तरंगाइत होने वाली संवेदनाओं को समझने वाले ऐसे कान; जिनके साथ चित्त भी सम्मिलित है। हुंङुर का अर्थ केवल स्वीकृति सूचक 'हां' नहीं है। यह ऊंचे स्वर में बोले जाने वाला 'हां- हां' भी नहीं है। यह मंद्र सप्तक सुरों की भांति छाती के भीतर से धीरे-धीरे ऊपर को उठने वाली एक धीमी- सी गूंज है; जो कहती है! 'हां- हां, कहो, मैं सुन रहा हूं या सुन रही हूं। तुम्हारे सुख-दुख, संघर्षों-उपलब्धियों और विशिष्ट अनुभवों में मैं तुम्हारे साथ हूं।'

वक्ता को श्रोता की आवश्यकता होती है, लिखने वाले को पाठक की और दृश्य कला को दर्शक की। अभिव्यक्ति की सार्थकता इसी में है कि वह अन्य तक पहुंचे तथा अन्य द्वारा समझी जाए। यही सार्थक संप्रेषण है। केवल कह देने मात्र से संप्रेषण पूरा नहीं हो जाता। तीर अगर धनुष से निकला है तो उसको लक्ष्य तक पहुंचना ही चाहिए, अन्यथा उसका चलना व्यर्थ है। शब्द, चित्र, मूर्ति, नृत्य या अभिनय इत्यादि दृश्य अथवा श्रव्य किसी भी माध्यम से की जाने वाली अभिव्यक्ति का उद्देश्य यही है कि वह सामनेवाले के हृदय तक पहुंचे। इसी तथ्य को परिभाषित और व्याख्यायित करने के लिए प्राचीन काल से अब तक अनेक मत, अनेक सिद्धांत और अनेक शास्त्रीय ग्रंथ प्रकट हो चुके हैं; फिर भी लोक के अनाम निरक्षर

व्यक्तियों द्वारा की गई इस सरल-सीधी अभिव्यक्ति का चमत्कार देखिए कि डेढ़ पंक्ति के इस दोहे में अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण का गहन अर्थ सहज ही उद्घाटित हो गया है।

मनुष्य जब से भाषा में अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति करने लगा तभी से उसे किसी सुनने वाले की प्रतीक्षा रही है। केवल अपने सुख -दु:ख व्यक्त करने के लिए ही नहीं; अपना ज्ञान, मंतव्य और विचार दूसरों तक पहुंचाने के लिए भी किसी सुपात्र की आवश्यकता होती है। मनुष्य अपने आत्मीय के सम्मुख अपनी गलतियों और कमजोरियों का स्वीकार कर सही राय लेने के साथ - साथ अपने हृदय के भार को हल्का भी करता है। इसी प्रकार वह अपने आत्मीयों की गलतियों के लिए उन्हें रोकता - टोकता है और आवश्यक होने पर उचित राय भी देता है। कह सकते हैं कि मनुष्य को अपने सुख -दुख व्यक्त करने के लिए ही नहीं; उचित दिशा निर्देशों के लिए भी किसी अपने आत्मीय व्यक्ति की आवश्यकता होती है, लेकिन अगर कोई सुनना ही न चाहता हो तो?

श्री कृष्ण महाभारत का युद्ध रोकना चाहते थे, किंतु नहीं रोक पाये। उन्हें भी कहना पड़ा था; 'उर्ध्व बाहुर्वदाम्यहम् न कश्चित्श्रृणोति मे।' अर्थात् मैं बांहें उठा-उठाकर कह रहा हूं, लेकिन कोई मुझे नहीं सुनता। 'न कश्चित्श्रृणोति मे' की पीड़ा बड़ी गहरी होती है। 20वीं शताब्दी के विश्व युद्धों के समय जब शांति की बातें सुनने के लिए कोई तैयार नहीं था; तब अंतरराष्ट्रीय मानवतावाद में आस्था रखने वाले प्रसिद्ध लेखक हेमिंग्वे ने 'फोर हूम द बेल टोल्ड्स्' लिखा था। इस तरह के उद्गारों में यही पीड़ा मुखरित होती है कि कौन सुन रहा है हमें? किसके लिए कह रहे हैं हम?

केवल सुख- दु:ख के अनुभव ही नहीं; व्यक्ति किसी विचित्र, अटपटे और नये अनुभव को भी अकेले नहीं पचा पाता। उन्हें किसी अन्य को बताए बिना उसे चैन नहीं मिलता। 'राजा के सिर में सींग' नामक लोक कथा इसी अनुभव की ओर संकेत करती है।

एक राजा के नाई के बीमार हो जाने पर उसके स्थान पर उसका बेटा बब्बन राजा की हजामत बनाने जाता है। राजा की हजामत बनाते समय उसे पता चलता है कि राजा के सिर में सींग है। इस विचित्र बात को मन में छिपाकर रखना उसके लिए कठिन हो जाता है। किसी अन्य को बताने पर प्राण दंड का भय है और यह गुप्त रहस्य किसी को बताए बिना रह भी नहीं पाता। अंततः वह जंगल में जाकर एक पेड़ के सामने यह रहस्य उगल आता है। पेड़ को सुना कर वह खुद तो भार- मुक्त हो गया, लेकिन यह विचित्र बात पेड़ को भी भारी लगने लगी। उसने वह एक हिरण को बता दी। हिरण किसी अन्य को बताता,

उससे पहले एक शिकारी द्वारा उसका वध कर दिया गया। बाद में उसकी खाल से मृदंग बना। मृदंग जब राज दरबार में बजाया जाने लगा तो उसके ताल से जो ध्वनि गूंजी; वह थी; 'सींग- सींग, बब्बन- बब्बन। सींग- सींग, राजा के सिर पर सींग।'

यह लोक कथा बताती है कि विशिष्ट अनुभवों को अकेले अपने मन में रखना कितना कठिन है और उन्हें कह देने से किस तरह मुक्ति और प्रसन्नता का अनुभव होता है। साथ ही इससे यह भी पता चलता है कि सत्य कभी छिपता नहीं; कभी न कभी किसी न किसी रूप में प्रकट हो ही जाता है।

जिनके पास उनकी बातें सुनने वाला कोई नहीं होता अथवा कोई होते हुए भी अनसुना कर देता है; उनका कथन अधूरा ही नहीं रहता; वरन निरर्थक भी हो जाता है। कुमाउनी भाषा में इसके लिए भी एक कहावत है ; "अँ कूण बिगर काथ् अटकी रै।" अर्थात् 'हां' या 'हूं' के रूप में प्रत्युत्तर न मिलने के कारण कथा ही अधूरी रह गई है, अकथित रह गई है। किससे कहें? कौन सुनेगा? इस अपेक्षा और प्रतीक्षा पर हिंदी में भी सैकड़ों गीत-काव्य बने हैं:

"माई री! मैं का से कहूं पीर अपने जिया की।"

"किसको सुनाएं दास्तां, किसको दिखाएं दिल के दाग।"

"तुम जो न सुनते क्यों गाता मैं।"

"कौन आएगा यहां, किसकी राह देखें हम।"

"हाले दिल हमारा जाने न कोई "

"कोई हमदम न रहा, कोई सहारा न रहा।"

कवि नीरज भी कह गए हैं: "कौन खरीदेगा तेरे घायल आंसू दो-चार।"

प्रश्न यह है कि कोई अपने हृदय के भावों को क्यों दूसरों से कहना चाहता है? क्या इससे उसके दु:ख मिट जाते हैं? क्या इससे उसकी समस्याओं का निराकरण हो जाता है? क्या इससे उसका सुख बढ़ जाता है? घटनाएं तो अपने क्रम से घटती रहती हैं। समस्याएं अपनी जगह खड़ी रहती हैं। उन्हें बदला नहीं जा सकता। लेकिन उन्हें किसी अन्य के सम्मुख व्यक्त कर देने से प्रभावित व्यक्ति के मन- मस्तिष्क पर लदा हुआ दु:ख अथवा समस्या का भार हल्का हो जाता है। समस्याओं का निदान दिखाई देने लगता है, सहिष्णुता बढ़ने लगती है और अपने ही भीतर से एक ऊर्जा का संचार होता अनुभव होता है, जो भीषण कष्ट को भी सरल बना देता है। एक व्यक्ति की भावाभिव्यक्तियों को सुनकर दूसरा व्यक्ति उनसे मुक्ति का उपाय न भी बताएं; केवल 'हँ' –'हँ' करता हुआ उन्हें सुनता ही भी रहे; तो उतने से ही भी वक्ता का मनोबल बढ़ता है कि हम अकेले नहीं

हैं, निराधार नहीं हैं। कोई हमारे साथ है। यह भरोसा ही हृदय को भार मुक्त करता है और मस्तिष्क को कष्ट निवारण के उपाय सुझाने लगता है।

अपने सुखात्मक या दु:खात्मक अनुभवों को व्यक्त करना जीव मात्र का स्वभाव होता है, किंतु उनके माध्यम और प्रकार भिन्न-भिन्न होते हैं। मनुष्येतर प्राणी भी अपने प्रिय-अप्रिय भावों की अभिव्यक्ति किसी न किसी भंगिमा में करते ही हैं। मनुष्य को इन अभिव्यक्तियों के लिए किसी अन्य सहृदय की भी आवश्यकता होती है। खुशी में वह अकेले हंसे या दु:ख में अकेले रोए तो वह अटपटा असामान्य प्रतीत होगा। ऐसा करने वाला मनुष्य पागल कहलायेगा। किसी अन्य की उपस्थिति के बिना ऐसा एकालाप अभिव्यक्ति की सार्थकता का अनुभव नहीं होने देता।

अनुभव साझा करने से एक के मन का भार घट जाता है; तो दूसरे का भी ज्ञान बढ़ता है तथा जीवन को जीने और समझने की नई दृष्टि विकसित होती है। मनुष्य वह प्राणी है, जो दूसरों के अनुभवों से सीखता है। उनकी उपलब्धियों के साथ -साथ उनकी गलतियों से भी सीखता है। सुख- दु:ख, भय, क्रोध, आश्चर्य तथा घृणा इत्यादि विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति स्वाभाविक एवं आवश्यक है। कह देने से उनके विपरीत प्रभाव की सघनता कम हो जाती है और सकारात्मक अनुभव प्रसन्नता को बढ़ाते हैं। इसीलिए लोग मित्र बनाते हैं तथा सगे-संबंधियों से मिलजुल कर सुख-दुख बांटते हैं। दु:खी व्यक्ति को रोने के लिए किसी अपने के कंधे की आवश्यकता होती है, अर्थात् दु:ख की घड़ी में किसी आत्मीय व्यक्ति की निकटता और सहानुभूति औषधि की भांति मन के घावों को भर देती है।

एक पथिक के हाथ की लाठी उसकी सहयात्री होती है। चलते समय उसमें बंधे हुए घुंघरू भी बजने लगते हैं। लाठीधारी व्यक्ति घुंघरुओं की लय के साथ बिना रुके आगे बढ़ता रहता है। उसे अनुभव होता है कि वह अकेला नहीं चल रहा है। लाठी उसके साथ है, घुंघरू उसके साथ हैं। उस सांगीतिक गति के साथ चलते हुए थकान महसूस नहीं होती। चलना संगीतमय अर्थात् आनंदमय बन जाता है। इसी तरह घुंघरुओं की ध्वनियों को कोई सुन रहा है, उनसे आनंदित हो रहा है तो घुंघरुओं का आनंद भी बढ़ जाता है और वे भी अधिक सुमधुर ध्वनि में बजने लगते हैं। घुंघरू का इस तरह झंकृत होना भी हुङ्‌र लगाने के समान है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति के अनुभवजन्य संवेदनों को सुनने- समझने- सहलाने वाला दूसरा व्यक्ति भी उसे उद्वेलित हुए बिना धैर्य पूर्वक आगे बढ़ने की ऊर्जा प्रदान करता है। हृदय को सकारात्मक अथवा नकारात्मक किसी भी प्रकार से उद्वेलित करने वाले अनुभवों का सार्थक संप्रेषण

मनुष्य जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है; यह बात यहां प्रयत्न पूर्वक शास्त्रीय शब्द खोज कर नहीं कही गई है। यह तो लोक हृदय के अंत:स्थल से निकली हुई सहज अभिव्यक्ति है; जो अपनी सरलता, गहनता, मर्मस्पर्शिता और संप्रेषण की अद्भुत क्षमता की प्रतीति कराती हुई प्रेरित भी करती है कि किसी के मुख बनो तो किसी के श्रवण भी बनो। उन्हें हुंङुर दो। कहने और सुनने से हृदय का विरेचन होता है, प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं और अनुभवजन्य ज्ञान का प्रसारण जीवन यात्रा का पाथेय बन जाता है।

हमारे लोक साहित्य में चमत्कृत करने वाले ऐसे एक से बढ़कर एक हजारों मुहावरे- लोकोक्तियां और काव्य पंक्तियां विद्यमान हैं। उन्हें गहराई में जाकर समझेंगे तो लोक साहित्य में निहित कलात्मकता, ज्ञान संचयन तथा लोक भाषा की अद्भुत अभिव्यक्ति क्षमता का आनंद भी प्राप्त होगा ।

***

भाषा बुलाण-चुलाण में ऐ जाली त बचि रौलि

नवीन जोशी

अछ्यान मी कैं बड़ै सोच पड़ि रूनान। पैली ले कभतै सोचनै छ्युं कि हमरि बोलि क्यै नटी उंणै। हमि आपणि दुदबोलि कैं क्यै भुलण लागि रयां? पै, अछ्यान बांकि सोच पड़ि जानान।

बात यसि छ कि तीन-चार म्हैण बै मी 'अचल' पत्रिका अर वीक सम्पादक जीवन चंद्र जोशि ज्यू बार में एक किताब लेखण में लागि रयुं। वी है पैली बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' ज्यु, 'उत्तरायण' कार्यक्रम अर 'आँखर' संस्था बार में किताब तैयार करी। यो द्विय्यै जणीनलि आपण पुर जनम कुमाउंनी भाषाकि सेवा में लगै दे। आपण भाषाक विकास, वी में उत्तम साहित्य लेखण-छापण और वीक प्रचार-प्रसार करणै में इनर जनम पुरीणौं। पै, आखिर-आखिर में यों द्विय्यै जणी भौतै दुखी और निराश भ्यान। इनरि काथ देखि-सुणि बेर मन में कतुकै सवाल उपजनान।

आपणि बात कूण है पैली मुणी इनार बार में बतै दिण ठीक होल। जीवन चंद्र जोशि ज्युनलि 1938 में अल्माड़ बै कुमाउंनी भाषाकि पैल पत्रिका 'अचल'

शुरू करी अर द्वि साल जाणे चलै। 'अचल' मासिक पत्रिका छि। 1938 में देश गुलाम छि और साधन ले के नि छि। आपणि दुदबोलि में उरातार द्वि बरस जाणे हर म्हैण पत्रिका सम्पादित-प्रसारित करण कतु मुश्किल भौ हुन्यल, आज यो अंदाज़ लगूण सितिल नि हो। कुमाउंनी में लेखार ले तब नि भाय। कविता लेखणी कुछेक मैंस छि जरूर, मगर गद्य लेखणी क्वे नि भय। पढ़ी-लेखी-खांणी-पीणी पहाड़ि लोगबाग आपणि बोलि कैं छाड़ि बेर अंग्रेज बणण में लागि रूंनेर भाय। कुमाउंनी में बुलाण ले उं नक माननेर भाय। कतुकै लोगनलि 'अचल' पत्रिका कें मुखै नि लगाय। कैलै-कैलै त 'डू नॉट सेंड सच ट्रेश' (यस कच्यार झन भेजिया) लेखि बेर पत्रिका पन खेड़ि दे। फिरि ले जोशि ज्यु 'अचल' पत्रिका कैं मासिक रूप में निकावते ग्यान। दुसर विश्व युद्ध शुरू है ग्योछी, कागज-स्याइ, वगैरा भौत अकर है ग्याछी अर मिलण ले मुश्किल है गाय। तब फरवरी 1940 में आखिरी अंक निकाइ बेर उनन कैं पत्रिका बंद करण पड़ी। पछा ले उनार मन में 'अचल' कैं फिरि शुरू करणौक विचार छि। कैं बै क्वे मधत मांतर नि मिलि। बुड़्यांकाव जीवन चंद्र ज्यु बड़ि रीसलि कूंछि- "के करछा, हमि पहाड़िन में अपण्याटै न्हांति। आपण बोलि-भाष कैं हमि मुखै नि लगै दिना।"

बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' ज्यूलि करीबन 31 बरस जाणे आकाशवाणी लखनौ में 'उत्तरायण' कार्यक्रमा चलै बेर कुमाउंनी-गढ़वालि भाषाक लिखित साहित्य कैं भौतै भल मंच दे। उनूंलि घर-घर जै बेर आपण दुदबोलिक लेखार, गिदार, कवि, नाटककार, वगैरा तैयार करान। उनन कैं लेखण-पढ़ण-रेडियो में बुलाण सिखाय अर पहाड़ा कौतिकन में जै-जै बेर लोकसंगीत-गीत रिकॉर्ड करान। यो रिकॉर्ड 'उत्तरायण' में बजान अर शहरी गिदारन कैं ले उनरि धुन सिखाईं। घर-परिवारै फिकर छाड़ि बेर उं 'उत्तरायण' कैं संदर कार्यक्रम बणूण में लागि राय। यतुकै नै, उनूंलि पैली 'शिखर संगम' अर पछा 'आँखर' संस्था बणै बेर कुमाउंनी-गढ़वालि भाषा में नाटक खेलान। आपणि बोलिन में स्मारिका प्रकाशित करी। रिटायर हईं पछा 'आँखर' नामलि मासिक पत्रिका ले सम्पादित-प्रकाशित करी। उनार मन में ले जीवन चंद्र जोशि ज्युनै चारि आपण भाषाक लिजि भौतै पिरेम छि। तबै बीमारी अर डबल-टाक बिन ले उं 'आँखर' कैं द्वि-तीन साल चलै ल्हि ग्यान। 1993 बै शुरू 'आँखर' पत्रिका पैली मासिक, फिरि त्रैमासिक है बेर 1995 में मजबूरी में बंद करण पड़ी। उंनूलि ले योई दुख में प्राण छोड़ान कि हमि पहाड़िन कैं आपणि भाषा दगै के पिरेम न्हांति।

यस्सी काथ रामनगर वाव मथुरादत्त मठपाल ज्युनैकि ले छ, जनूलि सन 2000 बै 'दुदबोलि' नामलि पत्रिका शुरू करी। 'दुदबोलि' त्रैमासिक शुरू भ्ये, फिरि सालाना विशेषांक रूप में प्रकाशित हुंछी। उं

ले पत्रिकाक लिजि लेखार अर आर्थिक मधतै तैं मैंसन थैं निहरै करण में रान। कां-कां बै चीज-बस्त जोड़ान उनूंलि। बीमारी में ले लागियै रूनेर भाय। 'दुदबोलि-2022' त उनार मरीं पछा प्रकाशित भ्ये। जीवन चंद्र जोशि ज्यु, बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' ज्यु और मथुरादत्त मठपाल ज्युनलि आपणि भाषा लिजि जो संघर्ष करौ, वी कैं हम सबनलि जाणण-समझण चैं, वीकि फाम करण चैं। मगर कि करछा, इनार नौं ले आज कतु लोगबाग जाणनान?

अछ्यान अल्माड़ बै कुमाउंनी में 'पहरु' मासिक', काठगोदाम बै कुमाउंनी-गढ़वालि में 'कुमगढ़' द्विमासिक अर पिथौरगढ़ बै कुमाउंनी मासिक 'आदलि कुशलि' पत्रिका प्रकाशित हुण लागि रान। हाल-हालै में दिल्ली बै 'दुदबोलि' वार्षिक ले फिरि शुरू है रै। दस साल है ग्यान, पौड़ी बै 'धाद' नामलि गढ़वालि भाषाकि मासिक पत्रिका प्रकाशित हुणि लागै रै। जो लोग यो पत्रिकानक प्रकाशक-सम्पादक-व्यवस्थापक छन, उं हर बखत योई फिकर में रूनान कि कां बै भलि रचना मिललि, कां बै गाहक बणाल अर कां बै डबल-टाकै मधत मिललि। आज 1938 जास हालत न्हांतिन। 1980-90 में जास हाल छि, उस ले आब न्हांतिन। देश अर समाजलि भौत तरक्की करि हाली। हमार पहाड़ा मैंस ले कां बै कां पुजि ग्यान। राजनीति, सरकार, प्रशासन, उद्योग, विज्ञान, हरेक क्षेत्र में पहाड़ाक स्यैणि-मैंस ठुल-ठुल जागन में बैठी छन। उत्तराखण्ड अलग राज्य बणि ग्यो। जस ले छ, 'सरकारि विकास' वां ले खूब हुंण लागि रौ। बजटैकि के कमी न्हांति। पैं, हमरि भाषानकि हालत कसि छ? हमरि लोक भाषाकि पत्रिकानकि हालत कसि छ? पत्रिकानै बात छोड़ि दियो, हमि आपणि भाषा में कतु बुलानुं? अघिल जाण छाड़ि, हमरि भाषा नटी किलै ऊंणै?

देशक आजाद हुंण है पैली अर आजादी मिलीं पछा 1970-80'क दशक जाणे पहाड़ाक हाल भौत खराब छि। गरीबी यतु छि कि गौं-गौं बै, घर-घर बै एक-द्वि मैंस शहरन उज्याड़ जै बेर नौकरी करनेर भाय। उनार भेजीं मनीआडरलि पहाड़ में नानतिननक पेट पाईनेर भय। पै, पहाड़ा मैंसन कैं नौकरी कसि मिलनेर भ्ये? होटलन में जुठ भानकुन माजणी, सैपना घरन में नौकर-चाकर, दफ्तरन में चपरासि-खलासि अर भौतै भलि किस्मत भई त फौज में सिपै। योई पहाड़िनै पछ्याण भ्ये। 'ईमानदार-मेहनती नौकर' कईनेर भाय पहाड़ि मैंस। जो मुणी पढ़ि-लिखि गाय, सरकारि दफ्तरन में क्लर्क या वी है ठुल नौकरी में पुजि गाय, उं आफु कैं लाटसैप है कम समझनेर नि भाय। उनूंलि सिद्द अंग्रेजनै नकल करण भ्ये। मामूली नौकरी वाव आपण स्वार-बिरादरन कैं उं 'भुस पहाड़ि' कूनेर भाय। पहाड़ि बुलाण में शरम चितूनेर भाय। उननै तैं पहाड़ि भाषा पराइ बणि ग्ये। जो ले पहाड़ि मैंस तरक्की करते गाय, उ आपणि पहाड़ि पछ्याण, पहाड़ि

भाषा कैं छाड़ते गाय। कुमाउंनी हो या गढ़वालि, पहाड़ि भाषा 'भुस पहाड़िक' पछ्याण बणि ग्ये। 1938-40 में जब पढ़ी-लेखीं पहाड़िनलि 'अचल' पत्रिका कैं 'यस कच्यार झन भेजिया' कै बेर पन खेड़ देछि, त जीवन चंद्र जोशि ज्यूक कष्ट समझ में ऊंछ। 1980-90 में जिज्ञासु ज्यूक तकलीफ ले मुणी समझी जै सकीं, किलैकि तब जाणे ले पहाड़िनै 'भानमांजु' पछ्याण छनै छि।

पै, सन 2000 में मथुरादत्त मठपाल ज्यु कैं ले उसी तकलीफ क्यै भ्ये? उनरि 'दुदबोलि' कैं कतु मधत दे पहाड़िनलि? कतु गाहक बणी वीक? उं कतुकै बखत कूंछि, हिसाब लगै बेर बतूंछि कि 'दुदबोलि' तैं कतुक कर्ज़ गाड़ि हालौ कै। 'अचल' हो, 'आँखर' हो, या 'दुद्बोलि' हो या अछ्यान प्रकाशित हुणी पत्रिका हों, उनरि मधत करणी अर सहयोग दिणी लोगबाग ले छनै छन। कतुक मांतर? सौ-द्वि सौ या पांच-छै सौ या लगै लियो आज हजार-द्वि हजार लोग गाहक बणि ले गया त वील कि हुनेर भय? पत्रिका छापण, भेजण, कागज-स्याइ, तमाम दुसार खर्च कतुक हुनान? पत्रिकाक द्वि हाजर गाहक बणि गया त आज भौतै ठुलि बात मानी जानेर भ्ये मगर सोचो धैं, यो कसि शरमै बात छ? सबै पत्रिकान में अपील छपैं कि यो पत्रिका कैं तुमरि मधतै जरवत छ, गाहक बणो-बणाओ, चंद दियो कै। आज सन 2025 में यसि अपील करणै जरवत क्यै पणैं?

देश-विदेश में हो या पहाड़ में, आज आपणि पहाड़ि पछ्याण क्वे नि लुकून। सबै खुशि है बेर कूनान- 'हमि पहाड़ि छां, हमि उत्तराखण्डी छां।' आज पहाड़ि कूण में कै कैं शरम नि लागनि, गौरवै बात चिताईं। शहर-शहरन में पहाड़िनाक ठुल-ठुल संगठन छन, बाड़-बाड़ सांस्कृतिक-सामाजिक-राजनैतिक कार्यक्रम हुनान। बरेलि-लखनऊ बै दिल्ली-मुम्बई जाणे 'उतरैणी कौतिक' लागनी, फुलदेई त्यार ले करनान। पहाड़ हो या देस, सबै जाग खूब नाच-गीत, झ्वाड़-छपेलि हुनान। पहाड़ि कलाकार सुराव-कुर्त, घाघर-पिछौड़ पैरि बेर खूबै धिरकनान। आपणि बोलि मांतर क्वे नि बुलान। कुमाउंनी बुलाण में जिबड़ लटपटी जांछ। आपस में या आपण घर भितेर ले हिंदी फुकाल या अंग्रेजी। हमि तरक्की करनै गयां, हमरि भाषा पिछड़नी ग्ये। येक कि कारण हुन्याल?

मी आपणी बात बतूं। नानछना बाबू दगाड़ लखनौ ऐ ग्येछ्युं। यां बाबू थैं कुमाउंनी में बात करनेर भयुं। जब तक उं ज्यून रान, उनन थैं कभ्भै ले हिंदी में नि बुलायुं। बुलै नि सकंछ्युं। खाप बुजी जसि जांछि। पहाड़ में इज दगै ले तस्सै भय। इज-बाब, दीदि-बैणि दगै पहाड़ि में बात करनेर भयुं। मगर जब म्यर ब्या भ्यो, धुलैणि दगै और नानतिन हईं पछा उनन थैं हिंदी बुलानेर भयुं। उनार सामणि पहाड़ि बुलाईनैरै नि भ्ये। जिबड़ लटपटै जानेर भ्ये। जब जाणे इज ज्यून छि, उ आपण नातिन थैं ले पहाड़ि में बुलानेर

भ्ये। तबै म्यार नानतिन पहाड़ि असल कै समझनान, बुलाणै सार मांतर उनरि नि भ्ये। आब इज-बाब न्हांतिन त हमार घर में सब्बै हिंदी बुलानान। पहाड़ में जतु दगड़ी छन, गौं है भ्यार जाईं जतु स्वार-बिरादर छन, सबन दगै आब फोन में हिंदी में बात हुंछि। कै थैं पहाड़ि बुलै दियो त उ हिंदी में जवाब दिनान। त, हमार नानतिन पहाड़ि कसिक बुलाल? लखनौ में हमर ठुल परिवार छ। कतुकै स्वार-बिरादर छन। सबन दगै हिन्दी में बात हुंछि। पै कुमाउंनी भाषा कसिक बचलि कूंछा?

दुन्नी में कां-कां को-को भाषा बुलाण कम हुनै जाणान, को-को भाषा खत्र में पड़ि रै, यो बतूणी 'यूनेस्को' कि एक रिपोर्ट प्रकाशित भ्ये। यै में कुमाउंनी भाषा कै 'असुरक्षित श्रेणी' में धरि राखौ। मल्लब हमरि कुमाउंनी भाषा नटीणै, वीक बुलाण-चुलाण कम हुणौ, वीक बचण मुश्किल है ग्यो। जब मैंस बुलाण छाड़ि द्यला तो भाषा कसिक बचलि? पहाड़ा दूर-दराजा गौं पन ले पहाड़ि बुलाणी भौत कम लोग रै ग्यान। नानतिन त सबै हिंदी में बुलानान, सयाण स्यैणि-मैंस ले आपणि बोलि में कमै बुलानान।

पोरी बेर चौमास में मील पहाड़क एक गौंक वीडियो देखौ। शूंशाट-भूंभाट करनै मलि बै एक गाड़ दैत्य जसि ऊण लागी भ्ये, पूर मलि गाड़-भिड़न जाणे पुजी भ्ये। एक नान च्यल आपण इज कैं धत्यूणय- "ओ मम्मी ... मम्मी, देख तो बाहर को, नदी में कित्ता पानी आ रा रे!" भितेर बै वी इज कूणैछि- "तू उधर को मत जाना रे, इधर को ही रहना हां!" मी सोच में पड़ि गेछ्युं। गौं-गौ में नानतिन आब 'ओ इजा!' कै धात नि लगून, 'ओ मम्मी' कूनान। 'इज-बाब-बड़बाज्यू-आमा' कूण भुलि ग्यान नानतिन। जब पहाड़े में अर गौं पन ले आपणि बोलि-भाषा नि बचली त फिरि कां बचलि?

आज कुमाउंनी भाषा में खूब लेखार छन। कविता, काथ, व्यंग्य, नाटक, यात्रा-वृतांत, वगैरा-वगैरा, मल्लब हर विधा में खूब लेखीणौ, छापीणौ। जो पत्रिका प्रकाशिन हुणान, उनन तैं रचनानैकि के कमी न्हांति, स्तर जस ले हो। कुमाउंनी में खूबै किताब छापीणान। हिंदी में लेखणी पहाड़ि लेखार ले आब कुमाउंनी में लेखण भै ग्यान। जो भलि कै कुमाउंनी नि जाणन या बुलाण में अटकनान, उं ले हिंदी वाक्य विन्यास में छ-छु लगै बेर ले लेखणै रान। यो सब लेखार बुलानान मांतर हिंदी में। कुमाउंनी भाषा नटीणै, यो फिकर भौत छ। हर साल पहाड़ में एक-द्वि कुमाउंनी भाषा सम्मेलन हुनान। खूब लेखार ऊनान और भाषाकि फिकर में भाषण दिनान। कुमाउंनी कैं संविधानकि अठुं अनुसूची में शामिल करणै जोरदार मांग हुंछि। कुमाउंनीक मानकीकरण करणैकि ले खूबै बात हुंछि। गढ़वालि लेखारनलि

आपणि भाषाक मानकीकरण करि हालौ। कुमाउंनीक लेखारन कैं ले आब जल्दी करणैकि फिकर हुणै। भलि बात छ। मानकीकरण ले हुणै चैं। भाषाकि फिकर में सम्मेलन करण ले भलै भय। भाषा, व्याकरण, मानकीकरण, वगैरा पर बात-विचार हुणै चैं। अठुं अनुसूची में धरणै मांग ले हुणै चैं। ये मैं क्वे गलत नि भय।

सवाल यो छ कि यो सब करि बेर भाषा बचि जाली कि? अठुं अनुसूची में शामिल है बेर भाषा 'सुरक्षित' श्रेणी में ऐ जाली कि? हमन कैं भाषा कागज में बचूण छौ या बर्ताव में? कागज में या कॉपि-किताबन में भाषा तब बचलि जब उ हमार खाप बै भली कै छुटलि। लेखण में भाषा तब छाजलि जब मनखीना मुख बै फूल जै झड़लि। पै, हमरि भाषा हमार मुख बै झड़नी न्हांति।

एक्कै कुमाउंनी-गढ़वालि भाषा 'असुरक्षित' न्हांतिन। गौं-गिराम अर अंचलनैकि कतुकै भाषा खत्र में छन। मलि जो रिपोटौ जिकर करि राखौ, वी में हमार देशकि 170 भाषा संकट में बतै राखीं। दुन्नि में, हमार देशै में कतुकै भाषा विलुप्त है ग्यान अर कतुकै विलुप्त हुणी छन। भाषा हमार आचार-व्यवहार, ज्यून रूणौ ढंग, संस्कृति, कमाइ-धमाइ ढंग, जसि चीजन बै जन्मै अर विकसित हुंछि। जस-जस हमर जीवन-व्यवहार बदवते जांछ, हमरि भाषा ले बदई जांछि। हिंदी भाषा कैं देखि ल्हियो, दस-बीसै साल में उ कतु बदई ग्ये, किलैकि हमर जीवन-व्यवहार बदई ग्यो। हमर कल्यो, खाण-पिण, पैरण, ऊंण-जाण, घुमण, पढाइ-लिखाइ, हंसण-खेलण सब्बै बदई ग्यो। जसि विकास-नीति छ, वी में सारि दुन्नि एक जै हुणि लागि ग्ये। पैली स्कूल-कॉलेजै तैं हमार नानतिन अल्माड़-नैनताल, फिर इलाबाद-लखनौ-दिल्ली जाणे जांछि। आब यूरोप-अमरीका जाणे जाण लागि रान। पैली च्याल-च्येलिनौ ब्या आपण मित्राम, पहाड़ि घर-बार, गोत्र, वगैरा देखि बेर हुंछी। आज कुमाउंनी घरन में बंगालि, पंजाबि, मलयाली या विदेशी ब्वारि छन, जमाई छन। यै में के खराबी नि भ्ये। विकास अर प्रवास में यस हुनेरै भय। जब सब्बै चीज बदई ग्ये त भाषा कैं ले बदवणै भय। 'बहता नीर' तबै कईनेर भ्ये भाषा। पै, आपणि भाषा छोड़ि दिण विकास भयै कि? हमि नि बुलाला त हमार नाति-नातिणि पहाड़ि भाषा कसिक बुलाल?

हमार गौं खालि नि हुना, पढाइ-लिखाइ, नौकरी-चाकरी, कमाइ-धमाइ, खवाइ-पिवाइ, सब तिरब गौं पनै हुनौ त भाषा खत्र में नि पड़नि। गौं में क्वे भय नि, द्वि-र्वाट कमूणै तैं ले देश-विदेश जाण पड़नेर भय। खुट भ्यार गया त भाषालि बदवणै भय। जो भाषा में ज्यादा कमाइ होलि, वी बढ़लि। जै में कमाइ कम होलि, उ खत्र में पड़लि अर जै भाषा में बिल्कुलै कमाइ नि हो, उ 'असुरक्षित' है जालि, वीक बचण

मुश्किल है जाल। अंग्रेजी तबै घर-घर पुजि ग्ये। हिंदी बचि त रै मगर उ ले 'हिंग्लिश' है ग्ये। अंग्रेजी ताकतवर भाषा छ, वी में मस्त कमाइ है जैं। तबै सब अंग्रेजी सिखण में लागि रान। कुमाउंनी बुलै बेर के कमाइ हुनी त कुमाउंनी सिखन। यो बात दिल में चोट लगूणी छ, मगर सांचि छ।

पैं, कि करी जावो? आपणि भाषा कैं चुपचाप मरण दियो?

यो कसिक मंजूर है सकौं? ना-ना। आपणि भाषा कैं बचूणै तैं जि ले, जतु ले उपाय है सकनी, सबै करण चैंनी। भौत भलि बात छ, कएक बरसन बै कुमाउंनी भाषा कैं बचूणै फिकर है रै। आज हमरि भाषा में मस्त लेखार छन, जो खूब लेखणान। कमै सई, पाठक ले छनै छन। कुमाउंनी में ब्लॉग-व्लॉग, वेबसाइट, यूट्यूब चैनल ले छन। गिदारनैकि क्वे कमी न्हांति। मंच में ले छपेलि-झ्वाड़नै धूम मचि रै। नियमित पत्रिका प्रकाशित हुणान। किताब छापीणान। अल्माड़ बै कुमाउंनी साप्ताहिक 'कूर्मांचल अखबार' ले प्रकाशित हुणौ। उत्तराखण्ड सरकारलि प्राइमरी दर्जन में कुमाउंनी पाठ्यक्रम बणै राखौ कै सुणी। शोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्माड़ में बीए कक्षान में कुमाउंनी एक वैकल्पिक विषय छ बल। उत्तराखण्ड ओपेन विश्वविद्यालय में ले कुमाउंनी भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शुरू है ग्यो।

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान पहाड़ै भाषान में लेखी किताबन कैं मधत दिणौ, पुरस्कार ले दिणौ। कुमाउंनी पत्रिका और लेखार मिलि बेर साल में एक-द्वि कुमाउंनी भाषा सम्मेलन ले करणान जै में खास बातचीत यो हुंछि कि भाषाक मानकीकरण हुण चैं।

यो मांग ले करी जांछि कि कुमाउंनी कैं संविधानकि अठुं अनुसूची में शामिल करी जावो।

यो सब ठीक छ। हमि यो लेख में पैली लेखि ऐ रयां कि जब जाणे हमार जीवन व्यवहार में भाषा शामिल नि हो, जब जाणे गौं-गौं में भाषा नि बचलि, जब जाणे हमार नानतिन ले आपणि भाषा में नि बोलाल-लेखाल अर जब जाणे भाषा कैं विकास नीति में खास जाग नि मिलौ, तब जाणे भाषा बुलाणी कम होते जाल। कूण यो छ कि एक जन आंदोलन हुण चैं कि उत्तराखंडै विकास नीति यसि बणाई जावो कि गौंनक विकास हो, गौं-गौं में स्कूल-कॉलेज, अस्पताल, नान-नान रोजगार और दुसरि जरूरी सुविधा देई जावो। स्कूली पढ़ाइ-लिखाइ में ले आपणि भाषा शामिल हुण चैं। पै, हुण त उल्ट रौ। गौं उजड़ि ग्यान। गौं में मामूली इलाजै सुविधा ले न्हांति। खेति-पाति चौपट छ। मैंसन कैं पलायनै एक बाट देखीं। यो क्रम उलटण चैं। गौं विकसित हुण चैंनी। गौं बचला भाषा आफी बचि रौलि। गौं बचूणा मल्लब आम-बड़बाज्युना जमानक गौं नै, नई सुख-सुविधा

वाव गौं। गौंनक विकास हुण चैं मगर गौं बचण चैनान। जन आंदोलन यस हो कि सरकारै विकास नीति बदइ जौ। यो सितिल न्हांति। आज जो हाल छन, वी में त यै कैं अव्यावहारिक सुझाव कई जाल पर असम्भव न्हांति। हमि जो करि सकनू, उ यो कि आपस में बुलाण-चुलाण हर बखत आपणि बोलि में करूं। घर-परिवार में सब कुमाउंनी में बुलाला त नानतिन ले सिखाल-बुलाल। जो नानतिन नानछना बै कुमाउंनी सुणनी, जनार मै-बाब कुमाउंनी बुलानी, उं आपण बोलि कभै नि भुलन। एक उदाहरणै फाम उणै। 'अचल' सम्पादक जीवन चंद्र जोशि ज्युक, जनर जिकर पैली करि राखौ, जब ब्या भ्यो त उनरि घरवाइ लक्ष्मी ज्यू कैं पहाड़ि बुलाण नि ऊंछि। उनर परिवार भौत पैली बटी अनूपशहर (जिल्ल बुलन्दशहर) में बसि ग्योछि। जीवन चंद्र ज्यु बड़ै कुमाउंनी पिरेमी भाय। उनूंलि आपण घर में यो सख्त नियम बणै दे कि धुलैणि थैं क्वे ले हिंदी नि बुलावो, सब्बै कुमाउंनी में बात कराल। यसिकै लक्ष्मी ज्यु फटाफट कुमाउंनी सिख ग्याछि। उसै संयोग उनार च्याल गुरुप्रसाद ज्यूक ब्या में ले भ्यो। ब्वारि कैं ले कुमाउंनी बुलाण नि ऊंछि। घर में वी नियम फिर चलाई ग्यो अर ब्वारि ले भौत जल्दी कुमाउंनी सिखि ग्येछि। एक उदाहरण त अछ्यानकै छ। तीन-चार साल बै हेम पंत अर हिमांशु पाठक 'रिस्की' ल 'हमर पहाड़-हमरि पछ्याण' नामलि एक ऑनलाइन कार्यक्रम में कुमाउनी बातचीत शुरू करि राखी। यो कार्यक्रम में खास-खास पहाड़ि मैंसन थैं, ठुल-ठुल जाग पुजी लोगन थैं कुमाउंनी में बातचीत करी जांछि। कयेक लोग जो भलि कै कुमाउंनी नि बुलै सकन, उनूलि ले अटकि-अटकि बेर कुमाउंनी में बात करी। कयेक लोग तब बै कुमाउंनी बुलाणै कोशिश करण लागि रान। मल्लब यो कि अगर ठारि ल्हियो त पहाड़ि घरन में सयाण हो या नानतिन, क्वे ले कुमाउंनी बुलाण सिख सकनी। बस मन में ठारि ल्हिण चैं।

जो कुमाउंनी पत्र-पत्रिका प्रकाशित हुणान हमि सबन कैं उनर गाहक बणण चैं। सम्पादकन कैं ले पत्रिकाक स्तर भौत सुधारण चैं। यसि-यसि चीज प्रकाशित करण चैं कि वी कैं पढ़ण में मन लागौ, नई-नई जानकारी मिलौ, देश-दुनियाकि खबर-बात आपणि भाषा में मिलौ। लेखार और सम्पादकन कैं यो ध्यान दिण चैं कि कुमाउंनी में लेखणक मल्लब आड़ु-बेड़ु-घिङारु, घाघर-पिछौड़-आंङड़, इ्वाड़-छपेलि-न्योलि, दिगौ-दिगौ-पहाड़, भट-गहत-झंगोर, वगैरा-वगैराई नि हुन। कुमाउंनी में देश-दुनियाकि फसक-फराव क्यै नि है सकनि? जब जीवन चंद्र जोशि ज्यु 'अचल' पत्रिका में 'जापान अर विश्व युद्ध', 'नाग-किन्नर जाति', 'भारतीय चित्रपट', जास विषयन में लेख छापनेर भाय त हमि आज इसराइल-फलस्तीन लड़ै, भारत-पाकिस्तान झगड़, हिंदीक साहित्यिक चलन,

बुकर पुरस्कार, नोबेल साहित्य पुरस्कार, नई शिक्षा नीति, जास विषयन में लेख क्यै नि लेखि सकना, क्यै नि छापि सकना? यस करणैलि कुमाउंनी भाषाकि जाग फैललि, ठुलि होलि। नई-नई शब्द मिलाल। भाषा कैं नई थिकाव ले चैनरै भाय। वीक बदवण ले जरूरी भय। दुसरि जरूरी बात यो कि जो ले कुमाउंनी में लेखणान, उनन कैं कुमाउंनी में सोचि बेर लेखण चैं। यस देखण में बांकि ऊंछ कि लेखार हिंदी में सोचि बेर कुमाउंनी में लेखनान। तबै वाक्य विन्यास हिंदी में हुं और आखिर में ‘छ’, ‘छि’ लगै बेर कुमाउंनी बणै दिनान। यसिक भाषाकि मौलिकता, वीकि मिठास और शब्द-सामर्थ्य खतम है जैं। शेरदा ‘अनपढ़’ या गिर्दा या चारु चंद्र पाण्डे ज्यूकि लेखीं देखौ या तारा चंद्र त्रिपाठी, जगदीश जोशी, राजेंद्र बोरा (बाबा त्रिभुवन गिरि) वगैराक गद्य या काव्य देखौ। हौर ले भाल-भाल लेखणी छन, सबनाक नौं लिण यां जरूरी न्हांति। त, इनर लेखीं पढ़ि बेर हमि सिखि सकनूं।

भाषा जब हमार रोजाक व्यवहार में ऐ जालि, मल्लब बुलाण-चुलाण में ऐ जालि, काम-काज में ऐ जालि, लेखण-पढ़ण में ऐ जालि, नानतिना खाप बैठ जालि, त बचि रौलि। नन्तर ‘विकासै’ जसि बाढ़ ऐ रै, वी में लोकभाषाओंक बचण मुश्किलै छ। आज जो भाषा ‘असुरक्षित’ छन, उनर ‘विलुप्त’ हुण में के लाग लागैं कूंछा?

फसक

ज्ञान पंत

फसक .....

हमा्र पहाड़ में एक फसक भै और जो मस्तु फसक मारौं, उ फसकी भ्यो । उसी फसक मारण एक कला छ, आर्ट छ जो सबनां पास नि हुनि । फसक मारण ले सबना बसै बात नि भै । पुर गौं में तुम छियूल ल्ही बेरि ले चाला त बा्ड़ मुस्किलैलि द्वि-चार मिला्ल जनन " फसकी " खिताब मिली होल् .... किलैकि आपणि बात त सबै है करनीं और समझै ले दिनीं मगर फसकी खाल्लि बात नि करन, उ क्याप "बाइस्कोप" दिखूँछ । सिद बात 'क ले त्वरित नाट्य रुपान्तर करि बेरि यसिकै प्रस्तुत करौल कि सुणनेरन कैं लागौल जांणि यो घटना वी आंखनां सामुणि घटित हूँण लागि रै या उ मा्ल बजार 'क सिनेमा हाल में बैठि रौ । कभै - कभै बात - चीतन में फसकी रस, छंद, अलंकार, का्थ, क्वीड़, कंथ, रामायण, गीता, महाभारत, वेद, पुरांण, कुरान - सुरान, बाइबिल .... सब सन्दर्भ प्रयोग करि बेरि जागर जस लगै दिंछ और सुणनेरन लागौं कि उनैरि आपणनैकि फसक है रै कै । फसक कैं तुम निखालिस टैमपास ले नि कै सकनां । मैं त " टैक्स फ्री इंटरटेनमेंट " कूँछ जै मै अक्सर के न के सीख ले मिलैं ।

म्यार ताऊजी छी ! नाम बतै बेरि विवाद में केहिं पड़ूँ । तुम यतुकै समझ ल्हियौ कि उनैलि जिंदगी में जतु संघर्ष करौ, उतुकै तरक्की ले करी .... । उनैरि योयी खासियत छी कि जां ले बैठा्ल मिसिरी न्यौंत घुल - मिल जनेर भ्या । पहाड़ ग्या त ...... अरे काखी, तु आजि ज्यूनै छै ! मैलि सोची, मरि गेन्हेली कै ?

-- कब आछै मुस्वा, तेरि बलै ल्हियूँन पोथा - ते कभै अकल नि आ .... और कून - कूनै काखि अंङांव हालि ल्हीनेर भै ताऊजी कैं ! उं आंखीर जाणैं गौं में कैका भतेर ले जै बेरि चहा - पाँणि, खांण् - पिंण सब करि उनेर भ्या । जिन घरन में झगौड़ ले हयी भ्यो त ताऊजी वां जै बेरि सल्ला करै दिनेर भ्या ..... यां औ रे नबुवा ? कि बात भै रै, शाला ज्यादे दिमाग खराब हरौछै त बता ? लगूँ भेलन लै ला्त .... क्याच्च पाड़ि मुखै लै कै दिनेर भ्या। नब्बू खिसैन पड़ी त बला्ण ....ना दाज्यू के बात न्हां, गलत संगत में न्है ग्यो छियूँ, उनैलि पिवै दे, तबै काखि नाराज है पड़ी । मैलि ले के कै देन्होल् । आ बटी तस नि हौ .... बस फिर सब पैलियै की न्यांत है जनेर भै .... ।

यो ले उनैरी फसक छ ...... यार मुन्ना ए बखत म्यार मन आ कि हरिद्वार जाई जावौ। मैलि कै छैं के नि कै और सिद बस पकड़ि, बा्ट लागि गियूँ इज कूनीं रै ... ते अचानक कि है पड़ौ, आजि चारै दिन है रईं , घर ऐयी । उ पछिल पड़ि गे न जा, न जा कै मगर मूँ ले कां मानिनेर भयूँ । मैलि कै, इजा! साबुलि दिदी सा्स बेयी रड़ि पड़ी, खुट टुट रौ बल । भिनज्युनौ जबाब ऐ रौ कि हल्द्वाणि जां्ण छ ... वयीं जा्ण लागि रयूँ । फिर इजैलि ले के नि कौय और डबल ले दि द्या पैं ।

हरिद्वार पुजन - पुजनै रात है पड़ी कूँछा । आ्ब जां ले जावौ - होटल वा्ल कै दिनेर भ्या ... खाली नहीं है - सब फुल है । धरमशा्ल ले सब भरी भ्या कूंछा .... हुन - हुनै रात' क नौ बाजि ग्या । हरिद्वार ले के खास जि भै ... गंगा ज्यू वील वकत भै नन्तरि यहै भल त बाग्शेर छ हमा्र । आ्ब बड़ि मुस्किल है गे, मैलि ले आस नि छाड़ि पैं । ए जा्ग गयूँ, द्वार खटखटैयीं .... एक अदगयी रानौ भ्यार आ । वीलि मूँ नि पछयाणियूँ मगर मैलि अन्यार मैयी अंदाज लगा कि हो न हो यो मुया गुमनियौ च्योल हरीश छ ! एक यो बिचार ले आइ हाँ म्यार दिमाग में .....

--- हाँ दादा, जगह नहीं है ..... सब फुल ठैरा हरिद्वार, साला रात में कौन देगा जगह हो ! आप कहीं को और जाओ ...... । मैलि कौ, अरे तुम पहाड़ के हो ? हम भी वहीं के है, रात काटनी है .... बस

यतु कूँण छी, उ शा्ल फाटि पड़ौ । होय हो हम कुमाऊँ के हैं, बेरीनाग के .....

-- अरे तु शा्ल गुमनियौ च्योल हरीश भये के ? मैलि अंदाजन तुक्क मारौ और सोचौ अगर नि ले होलो त म्यार कि ल्ही जा्ल । कैं नि मिललो त स्टेशन पनै खिती रुँन .... । उ बलां्ण --- अरे गुरु ! कां बटी ऐ पुज्छा रात में हरिद्वार ? वील म्यार खुट पकड़ि द्या हो । झोल् टिप बेरि भतेर होटल में ल्हि गो, बैठा और कूँण लागौ ...

-- गुरु तुम भैठौ, चहा पियौ .... मैं के इंतजाम करुँ मनेजर छैं कै बेरि । ...

--- देख् , मैं मनेजर सनेजर कै नि जांणन्यूँ .... गौं में नि ऊँण दियूँ ते समझ ल्हियै ! मैलि यसी कै कौ त उ आजि बला्ण ...

-- अरे गुरु कसि बात करि दे, तुम चहा पियौ ...... और चाखै घड़ि में हरु ऐ पुज पैं । गुरु तुमन तकलीफ होलि, चौमंजिल में एक इमरजेंसी लिजी धरि राखौ, तुम वयीं हिटौ और मेरि झोल् झंटी ल्ही बेरि चौमंजिल पुजै देछ । ऐल अगर उ सरग ले पुजै दिनो त कतु भल हुँछीं ! मैं सोच पड़ि ग्या कि हरिद्वार वाकई में हरी को द्वार छ .....तब जांणै नै - ध्वे हरु र् 'वा्ट ल्ही बेरि ऐ गोछी ।

--- गुरु ! चोख् समझि बेरि खै ल्हिया हाँ , यां यसो भै ..... मौक मिलौ त मैं ले कां चुकनेर भयूँ । कै दे, यार मैं र् 'वा्ट खै ल्हियूँ, भ्यार भात न खान्यूँ । मनै - मन सोचौ कि यां पेटन उमांव ऊँण लागि रौ और यै शा्ल कैं चोखैकि है रै । ऐल सड़क में मेस्तर ले बणूँनो त अमृत समझौ .... फिर हरु त आपणै भै हो ! म्यार लिजी त भगवानै छी ।

खै, पी बेरि जब उ कंबल दिंण ही आ त मैलि पुछ ..... यार साँचि - साँचि बतैये, के हरिद्वार में सबा - सब होटल, धरमशा्ल यसी कै फुल रुनीं या तुम लोग मैंस देखि बेरि बात करछा ?

-- तमि गुरजी भया ! तमैलि पायि राख्छा , झुठ नि बलां .... यां जो ले बुड़ मैंस उनी.... सब मरणां लिजी ऊँनीं ! तीन दिन कौल और निकावण धो है जानीं । कयीं बीमार है ग्या त मुसीबत और मरि ग्या त फिर पुलिस वा्ल भौतै परेशान करनीं । दुन्नी भरी बयान - सयान और डबल खर्च अलग ..... यै वीलि गुरु ऐकोल् बुड़ कैं क्वे होटल या धरमशा्ल वा्ल ठौर नि दिन । सिद भजै दिनीं मगर बुड़, उ लै ऐकौलकट्टू बुड़ा लिजी त कुच हा्थ ल्हीनेर भ्या । भौत केस हुँनीं हो यां तास् ...... ।

और संयोगै कई जाओ कि साँचि में यो फसक सुणांयी बाद फिर ताऊजी मुस्किलल आठ म्हैंण ज्यूँन रयीं ! शैद उनन आभास है गोछी मगर मूँ लै पगालै

भयूँ । मैलि सोचि, ताऊजी खाल्ली फसक मारणयीं कै !

****

अपर -- लोअर

पैलीं पहाड़ जाण् आफत छी और जनन् मोटर लाग्छी, उनार् लिजी त नरक भै हो नरक मगर के करछा ! बाबूनैकि मजबूरी छी कि आम् पहाड़ मैयी रुनेर भै और बुड्याकावौ शरीर, जब - तब के न के लाग्यै रूँछीं ..... जब ले घर बटी जवाब आय् या चिट्ठी पुजी, हम लोग बोरा बिस्तर बादि बेरि घर हुँ लांगा बाट् .... हमन् जनरल बोगी में सामान सहित ठोसणैं जिम्मेदारी जगथयी प्रयाग दत्त भट ज्यूनैकि भै किलैकि अर्जेन्ट रिजर्वेशन कां मिलनेर भै .... प्रयाग 'दा द्वि घण्ट पैलीं जै बेरि जाग् घेरि ल्हीनेर भै। उ बाबूनांक् दफ्तर मैयी काम करछीं । ..लखनौ बटी नैनताल ऐक्सप्रेस में हल्द्वाणि और वी बाद फिर अघिल'कयात्रा।

घर जाँणै बात ले यां पन् खुशबू न्याँत फैल जनेर भै और वी बाद बिरादर लोगनां 'क पुन्तुरि (पार्सल) और सवाल - जवाब ले ! कै न बतावौ त मुसीबत और बतै बेरि ले आफत .... द्वि पैकेट रियूड़ि एक कपड़ा थैल में सिंणि बेरि नाम लेखि गे कि तल्ला गराऊँ के हरी किशन शास्त्री, कैले पौ भरि तमाखु कैं चार पन्नी और फिर थैल में लपेटि बेर लेख् कि सिमागाड़् के कुतना दाज्यू ... । कैले धोति भेजि त कैले कुर्त पैजाम् .... यासै पाँच - सातेक पुन्तुरि नौव छै, रामबाड़ि और बजेरि वाल्नाक् पैलिए तैयार है जांछी और ल्हि जांण् ले पंणछी। उन् दिनान पहाड़ जांण् में एक ठुल्लो सन्दूक, होल्डाल, एक - द्वि थैल मामूली बात भै .... योयी बात घर बै लखनौ ऊँण में ले हुँछी । क्लेशक्कायर गोबिन्दा इज भट, गौहत , भांग कुल मिलै बेरि चार किलो पुन्तुरि बँणै दिनेर भै। तारि दत्त ज्यू आठ दसेक चूका दांण् लूनेर भै ... च्याला तु ले खै ल्हिए और गोबिंद कैं भिजै दिए। चार्रै ओखण छन् केदारी - तु जग्गुवा ड्यार पुजै दिए .... के चार पिंगाव् ककाड़न् लि आल .... केदारी ऐल साल ककाड़् लागै न्हांतिन् । कयीं लागि ले त यो नौव छैं शेक्खू नि रुँण दिनेर भ्यो .... अधरात मैयी रानौ चोरि ल्हीनेर भ्यो - बाड़् मुश्किलैलि यो लुकै राखीं कि तु आलै त रेब्बू ले मिल् जाल् .... फिर कान् लै खूरु - खुर कौल " द्वि त्यार ले छन् हाँ । अरे के बात न होल्डाल में सिरान मुणिं धरि ल्हियै यार " .... बाबूनैलि कभै ना नि कौय् । हमैरि आम् सिरौव, मडुवौ पिस्यूँ , भांग्, भट, गौहत, मिसिर ..... मणीं - मणी सब बादि दिनेर भै .... । लखनौ ऐ बेरि इन पुन्तुरिन और सामान कैं बीरनगर, नजरबाग, सदर, नहर कालोनी, राजा बजार पुजुणैं ड्यूटि मेरि भै। द्वि एक बखत ककाड़ और नारिंग थेची ले ग्या लियूँण में मगर कभै कैले नक् नि मान्

.... अहा ! पुन्तुरिन् में कस् प्रेम हुन्यौल् ! तबै त कैं कै ले लूँण में या ल्हि जांण् में कभै क्वे परेशानी नि हुनेर भै ! बाद - बाद में त हमारै गौं लोग कूँण बैगेछी .... चचा, मूँ वाया बरेलि जूँन, आब् पत्त न कतु रुकण् पणौं ... । नब्बू कुनेर भै " जेड़्जा, हल्द्वाणिं में सिकेट्टी शाल् ऐ रौ बल् । वीलि ऐन बखत मीटिंग लगै दे .. आब् घर बटी खालि हाथ जून नन्तरि मैं केदार'का लिजी त्यार सिरौव जरुर लिझै दिन्यूँ ...." । दिगौ ! बखता दगाड़् कतु चीज बदयी जानीं जो जरुरी ले छ । अगर बदलाव नि होलौ त फिर तरक्की कसिक् होलि ? मैं विकास विरोधी न्हाँत्यूँ और नयी विचारनौ्क स्वागत करुँ मगर हमैरि प्रगति में मानवीय संवेदना और " पहाड़ " अचानक हरै पड़ौ .... योयी मैं गट् लागौ ! नान्तिनैलि स्थायी पत्त में मकान नं० और फ्लैट नं० कब लिखण् शुरु करि दे ... मैं पत्त नि लाग् हो .... आब् पुन्तुरि ले चिट्ठी की न्याँत हरै गियीं ! पार्सल आन लाईन में कोरियर उनेर भै मगर उ में " उ " बात त कभै नि ऐ सकनेर भै .... !

.... हल्द्वाणि जांणै त ठीक मगर अघिल 'कि यात्रा कि भै यातना समझौ ! पुराणिं बात है गे, उन दिनान् न त सड़क ठीक - ठाक छी और न ततु गाड़ि भ्या । टैक्सी ले भ्या मगर सबनैकि बसै बात ले नि भै कि टैक्सी में जावौ .... आम पहाड़ि त " के एम ओ " यानी कुमाऊँ मोटर्स ओनर्स यूनियन वाल्नैकि गाड़ि में जांछी । गाड़ि'क डिजाइन ने अजीब छी ... आम् कुनेर भै " केमो ढोट् " । भ्यार कै चावौ त लाग्छी जांणि अल्लै भ्याव छुटां ! यमै ले ड्राइवरै तरफ मूँख कर बेर बैठणीं पाँच सीट " अपर " कयी जांछी जो पैलियै भरि जांछी । वी बाद गाड़ी समानांतर द्वि लम्ब फट्याव् जास् सीट जमै आमुणिं-सामुणिं मूँख करि बेर लोग - बाग बैठछीं और बीच में सामान भरी रुनेर भै ..... " लोअर " सीट कयी जांछी। मिडिल सीट ले हुँछी या नि हुँछी ... मैं याद न्हाँ .... । उ में ले आदु सवारी लिजी सीट नि भै त नान्तिन कैका ले काखियूँन बैठ जनेर भ्या ... हम तीन भै - बैणीं और इज मिलै बेरी चारन् कैं बस लाग्छी ... इज त लाल कूँ बटी पहाड़ देखते वाक्क - वाक्क करनेर भै .... एक बाबू छी जनन् बस नि लाग्नेर भै। एक तरफ ड्राइवर सैपले गाड़ि स्टार्ट करी ..... भुर्र भुर्र ... हौंहौंऔंऔं ... इष्ट देवन् हाथ जोड़् , आपण कानन् द्विय्यै हाथ लगैयी और लाग् बाट् .... रिंङन् - रिंङनै ज्योली कोट, भवाली बाद गरम पाँणिं में गाड़ि " लंच " करनेर भै । वां पकौड़ि, रैत और पय्यो - भात .... जनन् मोटर नि लाग्छी, उ खूब पचकूनेर भ्या मगर ईजै लिजी राम भजो । एक घूट चहा जबरदस्ती पियो ले त अघिल जांण् है पैली पल्टी जनेर भै ... हम लोगन् बाबू के न के खवै दिनेर भ्या । इज कै त यो ले पत्त निहुनेर भै कि को कां बैठ रौ ... एक बाबुनां काखियून और द्वि लोग मिलेटरी वाल्ना दगाड़ बैठ रुछियां ... उन् दिनन् ले मिलेटरी

वाल्नौ भौत भरौस भ्यो । जो गाड़ि में द्वि - चार आर्मी वाल् भये त समझौ उनैरि यात्रा सपैड़ि गे ... गाड़ि खराब है जावौ, बाट् पन् के अवरोध आवौ या क्वे बीमार है जावौ ... सब आर्मी वाल् ठीक करि दिनेर भ्या । गाड़ि में बैठण बटी उतरण जाणौ ... सबनाक् मददगार भ्या .... हम नान्तिन् उनार् थिकावन् गंद करि दिनेर भयाँ मगर कभै कैले नक् नि मान् ... गरम पाँणि बाद अल्माड़ रूकनेर भै । वां लोग बाग बाल मिठ्ठै खरीदनेर भ्या। वी बाद रुकन - रुकनै गरुड़, कोशि होते गाड़ि ब्याव- ब्यावा टैम में बाग्शेर पुज्छी । सबनाक् बुर हाल है जनेर भ्या जाँणि गाड़ि में है नै, बोरिन् है भ्यार निकायि राखीं ... इज त एक घण्ट बाद होश मे उनेर भै । होटल में सामान धरि बेरि सब लोग नांण - ध्वैंण सरयू मैयी करनेर भ्या । हमन् ले एक रात बाग्शेर रुकण् पणछीं किलैकि दिन में द्वि बाजी बाद बेड़नाग - गंगोलिहाट उज्यांण गाड़ि नि जांछी । दुहार् रत्तै आठ बाजियै गाड़ि में हम बेड़नाग हूँ जांछ्या .... उन दिनान् बाग्शेर में खटमल भौतै लाग्नेर भ्या हो !

****

अपनों के बहाने ......

मुझे याद है भात खाने के टैम पर हम घर पहुँचे होंगे क्योंकि आमा तब सिंगल धोती में ही देहरी से बाहर आ गई थी। बेचारी का चोखा - पोखा सब धरा रह गया। अब ये खाना वह नहीं खा पायेगी और अपने लिए उसे चोखा यानी दूध में सने आटे की रोटियाँ या चार पूड़ी बनानी होंगी ..... कुछ ऐसा ही उसने चाची को भी बताया है .....। वहाँ के ब्राह्मण घरों में रसोई में जाते समय आचमन सा, ठिया से बाहर न बैठना, रिस्यार को न छूना, छू दिया तो छूँत हो जाना, हलवाहे को उसके लिए निर्धारित बर्तनों में ही देहरी पर भोजन देना, छू जाने पर पानीं छींटना और खेतों में हल न चलाना, ठाकुर, जिमदार, छोटी - बड़ी धोती, सम्बन्धों को लेकर अकड़ ...... आदि कुरीतियाँ मुझे पहले भी कभी ठीक नहीं लगीं थीं और आज तो सवाल ही नहीं उठता है । अजीब स्थितियाँ थीं कि हमारी जीवन यात्रा के सहयात्रियों से ही परहेज ...... इसका खामियाजा भी खूब भुगता है पहाड़ ने ! वर्तमान के हालात में इन सबके योगदान को नकारा नहीं जा सकता ...... खुशी है कि स्थितियाँ पहले से कहीं बेहतर हुई हैं और लोग भी समझ रहे हैं ।

नमस्कार के उत्तर में आस पड़ौस की जितनी भी मेरी आमाएं लगतीं थीं, सभी बाबू के गाल मलासते - मलासते आँसुओं से खुद को भरतीं रहीं । बोज्यू लोग दूर से ही पिताजी से कहतीं ...... भल आछा लला ! मुझे कोई हाथ लगाता तो मैं झिटक कर माँ के करीब चला जाता .... कि इनसे बदबू आ रही है। ऐसी ही अकल रही होगी उन दिनों ! पहली

बार मैं अपनों के बीच कुछ ऐसे ही पहुँचा था। माँ टोकती तो आमा और उसकी सहेलियाँ डाँट देती " .... के न कौ ब्वारी, नान्तिन भै, अकल जि छ ते कैं ! लखनौ में कां देखि भ्या तैलि, कि जाँणों त - शिबो ..... " मेरे मुँह चिढाने पर वे खुश होतीं और बची रये कहती। बाद में एक दो पड़ौसी आकर कहती .... " मेरे से बास नि आ री - देख तो पोथा ~ आआआआ~~ गोदी आ जा एक्की बार " ..... मैं कहता , ये पोथा - पोथा क्या होता है ..... तो वे कहतीं ..... यां ऐस्सा ही होत्ता है । तु पोथा हुआ हमारा । भलो भल पोथा .... और मैं माँ को देखते हुए खी - खी हँसता तो वे पूछतीं..... ब्वारी, भौ ठा्ठ करण लागि रौछै ? के बात नै ..... इस तरह मुझे तीन चार दिन लगे थे अपनों को जानने, पहचानने और समझने में भी ..... माँ के साथ तो छोटी - बड़ी और उसकी हमउम्र सभी गले लगकर बहुत देर तक देखतीं रहीं थी। उस समय मेरे लिए छोटी लड़कियों को भी धोती में देखना अजीब लगा कि ये मेरी दीदी, बुवा कैसे हो सकतीं हैं ! अपनी आधी से भी कम उम्र के बस 'का (बसन्त बल्लभ पंत) को जब बाबू ने नमस्कार कर मुझसे कहा ..... बड़बाज्यू के पैर छूकर प्रणाम करो तो ..... मैं उँगली दिखाकर हो - हो करते हुए आमा की गोद में दुबक गया .... अपनी आमा से मुझे कभी बास नहीं लगी । मैं उसके मुँह में उँगली डालकर टूटे दाँत गिना करता ...... ।

आस पड़ौस के बहुत से लोग और बच्चे - बच्चियाँ हमारे भीतर जाने से पहले ही चा्ख में बैठ गये थे । बगल से चाची सबके लिए पीतल के गिलासों में चाय बनाकर ले आयीं थी .... ब्या्ल (काँसे का कटोरा) में चाय डालकर फू - फू करते हुए आमा चाय पिलाने लगी तो मुझे " वाक्क " सा कुछ बाहर आने को हुआ ...... इतनी मीठी तीन तार वाली चासनी जैसी चाय पीने में और किसी को दिक्कत नहीं हुई । इसी बीच आमा ने फरमान सुनाया कि नान्तिनौ, आजि सामान नि ऐ रै । तुम ब्याव कै ऐया .... और के लूँ वाँ बटी बोकि बेर - केदारि रियूड़ि लै रौन्योहोल .... बड़े तो भेंट करके चले गए लेकिन बच्चों को लगभग खदेड़ना पड़ा था ..... पैरों तक मैक्सी नुमा झगुला पहनी गंग - लाटि को तो आमा गरियाते हुए देहरी पर ले गई ..... " ते लाटी पेटन कफ्फू बासि रौ । द्वार जा रवा्ट दमकै बेरि त्योर पेट नि भर त आ्ब कभै नि भर .... बे - कामैकि मर्रि रै ! खाँण'कि काव.... " जब कि दो रोटी के ऐवज में आमा के सभी कार्य वही करती थी .... कौन जाने आमा के लाड़ जताने का एक तरीका ऐसा भी होता हो ! हमारे घर तो नहीं लेकिन मैंने अपनी ही बखाई के दो घरों में गरीबी देखी ही नहीं, अनुभव भी की है...... ऐसा ही एक तिरलोकी पंत जी का

घर था । गंगा सहित उनके परिवार में चार लड़कियाँ और दो लड़के थे । गंगा उसी परिवार से थी। मुझसे छोटी, बहुत छोटी लेकिन रिस्ते में गंगा बुआ ..... बोलने में लड़बड़ाट करती थी तो छोटे - बड़े.सभी उसे " ओ, गंग ला्टि " कहते थे । घरवालों को उसकी तनिक भी चिन्ता न थी । माँ से उसकी दोस्ती इसलिए भी हो गई थी कि रात - बेरात साथ के लिए वह सदैव उपलब्ध रहती .... । शिबौ ! हमारी चौड़ी देहरी पर जाने कितनी रातें उसकी भोर के इंतजार में ही बीतीं होंगी ! माँ की पुरानी धोती को लपेटे वह सभी बहनों में सुन्दर दिखती थी । कुछ और जरुरी कपड़े भी माँ ने उको ही दिए थे ...... बाबू का नियम था कि लखनऊ से चलते समय बाँटने के लिए खूब सारे पुराने कपड़े लाते । केशर' दा का कोट के लिए जवाब आया था तो बाबू ने खादी भंडार से बंद गले का नयाँ कोट तब चौंतीस रुपये का छूट में लेकर रक्खा हुआ था कि होली में लेकर जायेंगे लेकिन हमें जल्दी जाना पड़ा । बाद में केशर 'दा जब अपनी बेटी से मिलने झाँसी गए तो लौटते समय एक दिन हमारे घर भी रहे थे। तब उन्होंने वही कोट पहना हुआ था .... उनकी आवाभगत बाबू ने ठीक वैसे ही की थी जैसे गुन्दी बड़बाज्यू या नौव छैं तर्दा ताऊजी की थी । हम सभी ने उन्हें सादर नमस्कार किया ओर माँ ने उनके हाथ से बर्तन छीन लिए थे ..... बात हुसैनगंज मोहल्ले की है । सायं नैनीताल एक्सप्रेस में बिठाने के लिए मैं भी गया था ..... उनके मिलेटरी वाले दामाद ने झाँसी से हल्द्वानी तक का पूरा टिकट बनवाया था लेकिन बाबू ने हिसाब से गाँव तक पूरा टिकट, रेवड़ी, गजक और पन्नी में लिपटी खुशबूदार तम्बाकू का एक बड़ा सा गोला भी दिया था ..... । दोपहर में हम अमीनाबाद घुमने गए और बाबू ने उनसे, अपने लिए कुछ खरीदने के लिए कहा तो सीधे - सीधे बोले ....." के ल्हीजाँ, मणी तमा्ख ल्हीजाँणैं सोचणोंछियूँ.... मिललै कती ? अन्नुवै इज कूँण लागि रैछी .... आ्ब जवैं दगा्ड़ कूँण में भल नि लाग कि..... तुम गुसैं राठ भया पणज्यू ...... " तो बाबू ने उनके मुँह पर हाथ रख दिया .... ना केशर 'दा तस नि कौओ ! उ सब बात आ्ब खतम है गियीं । को जमानै बात छन यो सब ..... आज छणकुलि झाँसी पुजि गे .... तुमैरि मेहनत और प्रेम भै हो यो सब । एक आद दिन रुँना त भूलभुलैय्या घुमी जा्न मगर तुम त ध्वा्ड़ में बैठी जे के आया .... पिताजी तब लगभग रुँवासे हो गए थे । फिर केशर 'दा कहते रहे थे कि फिर ऊँन - फिर ऊँन हो ! लेकिन वो " फिर " कभी नहीं आया । केशर ' दा जल्दी चले गए थे .... बाबू के विचारों में तब भी इतना विस्तार और समझ थी जब कि गाँव वाले सन 73 में भी मुझसे " छोड़् हा्ल .- छोड़् हा्ल." कहते रहे रहे थे ! उस साल मैने खूब " हौ

- हौ बल्दा " की और अधिया खेतों में अन् 'दा के साथ " मै " भी लगाई , खेत में खाना खाया था ….. अन' दा , केशर 'दा के एकमात्र बेटे थे जो स्कूल गए ही नहीं जब कि उनकी बेटी और मैं घुसी स्कूल में कक्षा चार में साथ पढ़े हैं ….. । पिता - पुत्र एक ही व्यक्ति को " दा " कहें…. ऐसा हमारे रुढ़िवादी समाज में ही देखने को मिलता है । …….. खैर, बात से बात निकलती ही जायेंगी लेकिन गंगा बुवा की बात है तो इधर - उधर लोगों के घरों में छोटे - मोटे काम धाम के ऐवज में उसे रुखा - सूखा तो जरुर मिलता लेकिन तृप्ति उसे माँ से ही होती जब वह आमा से बचाकर रोज दो चुपड़ी रोटी उसे जंगल जाते समय देती …. लाटी बुवा ऐसे ही बड़ी हुई हो रही थी । उसके सर धोने के लिए लिए माँ ने आधा लाईबब्वाय बासिंग के चौड़े पत्ते में लपेट कर " गो्ठ मुणि " लुका रक्खा था । नियम से साफ सफाई के कारण उसके जुँवे भी कम हो गए थे । यह बात गंगा की माँ कहती थी ….. ब्वारी त्योर भल हौ - त्यार वीलि गंग ढलूड़ि ले अच्छयान मणीं मैंसन जसि है रै ….. नन्तरि तैक ख्वारन है जुंग झरनेर भै । कै है रै सुबुत - कभै मैं ले चार ठुँग मारे त मार …… बाँकि अलीत कूँण में कै के नि जा्न । असल बात को जाँणौं….. " लखनऊ आने पर बहुत बाद में पता लगा गंगा बुवा मर गई है …… लोग तमाम तरीके की बातें बताते थे कि वह ठंड से मरी, कोई कहता कि उसने फाव हाली बल ! कुछ " गलत बात " भी कहते क्योंकि उसके बड़े होने तक समय भी " बड़ा बदल " गया था …… वैसे कहने में क्या जाता है, हमारे पड़ौस के लोग तो लाड़ी के लिए भी ऐसा ही कुछ कहते थे कि ट्रक ड्राइवरों से मांग कर " चहा - पाँणि " खाती है ….. जो भी हो बहरहाल, आमा के लिए तो नहीं कह सकता लेकिन घरवालों के लिए तो गंगा बुवा कभी का मर चुकी थी ! …… बातें और भी बहुत सारी हैं । कुछ बताने वाली तो कुछ सार्वजनिक न करने वाली भी हैं …… लेकिन इतना तय है अब आगे कुछ भी लिखने के लिए मुझे बहुत सोचना पड़ेगा …. ।

कमज़ोर पड़ती पहाड़ी लोकगीतों और बोलियों की थाती

योगेश ध्यानी

आदमी भले ही खाली हाथ हो उसकी भाषा हमेशा उसके साथ होती है। आज से कई साल पहले जब हमारे बड़े-बुजुर्ग, पिता या दादा पहाड़ छोड़कर समतल पर आये तो उनके साथ उनकी भाषा मजबूती से खड़ी थी। मैदान की गर्मियों में ये उनकी भाषा की छांव ही थी जहाँ वे सुकून महसूस करते थे। वे जब मैदान की भाषा सुनते होंगे तो उन्हें वह मैदानों की तरह ही सपाट लगा करती होगी। उन्हें भाषा में अपने पर्वत के शिखरों और जंगलों की हरियाली की कमी अखरती होगी। ऐसे में जब उन्हें कोई अपनी बोली बोलने वाला आदमी दिखता होगा तो निश्चित ही ये उनके लिए बेहद सुकून भरी बात होती होगी। क्योंकि दुख वैसे तो किसी भी भाषा में बयान किये जा सकते हैं किन्तु यदि दुख अपने पहाड़ों से बिछड़ने का हो तो उसकी सच्ची अभिव्यक्ति पहाड़ की भाषा में ही तो संभव होगी।

यूँ तो एक भाषा से दूसरी भाषा या बोली में अनुवाद बहुत आम बात है किन्तु हम ये जानते हैं कि इसमें मूल भाव का कुछ न कुछ ह्रास हो जाता है। और फिर बोलियाँ अपने साथ अपनी आंचलिकता को लाती हैं। इसके साथ-साथ उनमें अपना भूगोल भी होता है। जैसे गढ़वाली भाषा में एक शब्द-युग्म "ढीस" और "तीर" का है। पहाड़ों पर बने हुए रास्तों के एक तरफ पहाड़ और दूसरी तरफ खाई होती है। इनमें से पहाड़ की तरफ वाला हिस्सा "ढीस" और खाई की तरफ वाला "तीर" कहलाता है। अब क्योंकि ये ढीस और तीर पहाड़ी रास्तों पर ही संभव है इसलिये इनका कोई ठीक-ठीक शब्द हमें मैदान की हिन्दी में नहीं मिलता।

इसके अलावा किसी क्षेत्र की बोली में वहाँ के संदर्भ वहाँ का लोक और रहन-सहन सब अपना स्थान पाते हैं और बोली को अपना रंग भी देते हैं। जैसे पहाड़ों के जंगलों में बाघ पाये जाते हैं जो कभी-कभार रिहाइश की तरफ भी आ जाते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है बचपन में जब हम नाना-नानी के घर जाते थे तो रातों को बाहर निकलने की मनाही होती थी। इसके साथ ही गाय-बछड़ों को भी भीतर कर लिया जाता था। वहाँ ऐसे बहुत से किस्से प्रचलित थे कि रात को बाघ जंगल से बाहर निकल कर गांव की तरफ आता है। तो बाघ से पहाड़ के लोगों का सामना सदियों से होता आया है। इसीलिये बाघ का जिक्र हमें गढ़वाली भाषा के कई मुहावरों और लोकोक्तियों में मिलता है जैसे -

बुज्या कु बाघ

भावार्थ- भ्रम होने पर झाड़ी भी बाघ की तरह दिखती है।

किबुला कु नाग अर बिरला कु बाघ

भावार्थ- भारी भरम हो जाना।

इसके अलावा पहाड़ पर लगभग सभी घरों में (पहले तो यह बात शत प्रतिशत सत्य थी) गाय या भैंस होती हैं। ऐसा कृषि योग्य भूमि और पहाड़ों पर खेती में आने वाली मुश्किलों के कारण भी है कि पशुपालन पहाड़ों पर मुख्य व्यवसाय होता है। और वहाँ ये गाय या अन्य पशु पूजनीय होने के साथ-साथ लगभग परिवार के सदस्य की तरह ही प्रेम पाते हैं। यही वजह है कि वहाँ की बोलियों के मुहावरों में हम अक्सर उनकी मौजूदगी देखते हैं जैसे गढ़वाली बोली के ये मुहावरे-

अपणा गोरु का पैणा सींग भी भला लगदा

भावार्थ- अपनी वस्तु की ख़राब बात भी बुरी नहीं लगती है।

गाय न बाच्छी, नीने अच्छी

भावार्थ- किसी तरह की जिम्मेदारी न होने पर चैन की नींद आती है। पहाड़ से मैदान की तरफ आये लोगों ने अपने जीवन में अपनी बोली को बचाकर रखा और उन्हें अगली पीढ़ी को सौंपा भी लेकिन अगली या उसके आगे की पीढ़ियों की बोलियों में ये मुहावरे और लोकोक्तियां लुप्त होते गये। लगभग यही हश्र पहाड़ के लोकगीतों का भी हुआ। जैसे-जैसे वे पीढ़ियां कम होती गईं जिनके दैनिक जीवन का हिस्सा होते थे लोकगीत, वैसे-वैसे लोकगीतों की अनदेखी होती गई। लोकगीतों का प्रसार प्रमुखतः मौखिक माध्यम से ही होता आया है किंतु अब हम देखते हैं कि विवाह आदि के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों के लिए हमें किसी को बाहर से बुलाना पड़ता है।

पहाड़ी जीवन और लोगों का लोकगीतों से अभिन्न रिश्ता रहा है। यहाँ पर सिर्फ उत्सव या खुशी के ही नहीं बल्कि खुद (तीव्र याद) और पहाड़ की तमाम दिनचर्या से जुड़े गीतों का अंबार रहा है। इनमें भी चैती, झुमैलो, बसंती और खुदेड़ गीतों के अलावा दाम्पत्य के, चरवाहों के, प्रणय के, चिड़ियों के और रितुओं के लोकगीतों की समृद्ध परम्परा रही है। इनमें से शायद बहुत से लोकगीत अब जनमानस की चेतना में विस्मृत हो चुके हैं। लोकगीतों का ये हश्र सिर्फ मैदानी भागों में आ गए पहाड़ी लोगों के साथ-साथ ही हुआ हो ऐसा नहीं है। इन लोकगीतों को पहाड़ों पर भी वैसा आश्रय और मान-सम्मान नहीं मिल सका जिसके वे हक़दार थे। यहाँ पर उत्तराखंड के लोकगायकों को याद करना समीचीन होगा जिनके

प्रयासों से हमारी बोलियों के बहुत सारे लोकगीत आज भी बचे हुए हैं। और जिन्होंने उन्हें संगीतबद्ध करके इन बोलियों की मधुरता और पहाड़ी जीवन के सुख-दुख को सबके सामने लाने का कार्य किया। चंद्र सिंह राही, नरेंद्र सिंह नेगी, प्रीतम भरतवाण जैसे गायकों ने अपनी पीढ़ी को लोकगीतों से जोड़े रखा। नरेंद्र सिंह नेगी जी ने पुराने गीतों को सहेजने के साथ-साथ बहुत से नए गीतों की रचना की है। उनके ये गीत उसी लोकगीत की परंपरा से आते हैं, जिनमें पहाड़ के एक आम आदमी की पीड़ा तथा अन्य सहज भाव अपनी अभिव्यक्ति पाते हैं। इन गीतों के असर का किस्सा मुझे कुछ इस तरह याद आता है कि बचपन में हमारे घर में नरेन्द्र सिंह नेगी जी के गीतों के कैसेट रहते थे, जिन्हें हम टेपरिकार्डर पर अक्सर सुना करते थे।

एक दिन जब हमारे पड़ोस में रहने वाले एक भाईसाहब ने **"तेरी पीड़ा मा द्वी आंसू मेरा भी तौरी जाला"** गीत सुना तो, उन्होंने आकर पहले तो उसका अर्थ पूछा और फिर वो कैसेट हमसे मांगकर अपने पास रख लिया। उसके बाद तो वह गीत उन्हें लगभग याद ही हो गया था। यह उन शब्दों और संगीत और शायद गढ़वाली भाषा में अन्तर्निहित माधुर्य के कारण हुआ होगा। इन कैसेट्स को बड़े मन से सुना जाता था और इन गीतों को सुनते हुए हमने अक्सर मैदान में रह रहे पहाड़ से दूर हो चुके लोगों को सिसकते भी देखा है। हालांकि आज की तारीख में उत्तराखंडी गीतों की लोकप्रियता और भी बढ़ी है किंतु आज के गढ़वाली गीतों की भाषा से हमें ऐसे शब्द कम ही देखने को मिलते हैं जो पहाड़ों के अपने थे और पुराने गीतों में काफी इस्तेमाल होते थे जैसे घस्यारी (घास काटने वाली महिला), पन्देरा (पहाड़ों पर पानी का एकस्रोत), गाड(नदी), डाँडू(शिखर), चाखुड़ी(चिड़ियां),जुन्याली(चांदनी), झेंवरी(पायल), यखुली(अकेली), तिबारी (घर का एक भाग), कोदू (मंडुवा), ओबरा (भूतल का कमरा), कूल (छोटी नहर) आदि। इसका एक प्रमुख कारण पहाड़ों पर बदलती हुई जीवन शैली भी है। सड़कों और रेल के माध्यम से, बेहतर संचार व्यवस्थाओं के चलते पहाड़ अब बेहतर तरीके से मैदानी इलाकों से जुड़े हुए हैं। पहाड़ों से लगातार हो रहे पलायन के साथ-साथ भाषा से भी उसके अपने शब्द कम होते जा रहे हैं और हिन्दी या अंग्रेजों के सामान्य शब्दों से स्थानान्तरित हो रहे हैं।

इस सबके बीच युवाओं का एक वर्ग ऐसा भी दिखता है जो सोशल मीडिया के माध्यम से या फिर पहाड़ी लोगों के बीच जाकर हमारे लोकगीतों और संगीत को सहेजने का प्रयास कर रहा है। निश्चित ही उनका यह प्रयास सराहनीय है और आशा बंधाता है फिर भी लोकगीतों और लोकसाहित्य की विशाल विरासत

को ध्यान में रखते हुए हमें यह समझना होगा कि सिर्फ इतना भर काफी नहीं है। इसके साथ-साथ

सरकार की तरफ से भी लोक साहित्य, भाषा और संगीत को सहेजने के लिए ज़रूरी कदम उठाये जाने चाहिये।

***